अनुगूँज

यूको बैंक की हिंदी गृह पत्रिका

वर्ष- 10, अंक- 2 : अक्तूबर, 2019 - मार्च, 2020

यूको बैंक **UCO BANK**

(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

दिनांक 23 अक्तूबर, 2019 को होटल हिंदुस्तान इंटरनेशनल, कोलकाता में सम्पन्न नराकास (बैंक), कोलकाता की 68वीं छमाही समीक्षा बैठक में महामहिम श्री जगदीप धनखड़, राज्यपाल, पश्चिम बंगाल की गरिमामयी उपस्थिति रही ।

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे श्री एकनारायण अर्याल, महावाणिज्यदूत-नेपाल, कोलकाता को स्मृतिका प्रदान करते हुए बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी एवं नराकास (बैंक), कोलकाता के अध्यक्ष श्री अतुल कुमार गोयल ।

अनुगूँज

यूको बैंक की हिंदी गृह पत्रिका

वर्ष-10, अंक-2 अक्तूबर, 2019 – मार्च, 2020

एक टीम - एक स्वप्न सक्षम हैं हम- जीतेंगे हम

संरक्षक
अतुल कुमार गोयल
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

प्रेरणा
अजय व्यास
कार्यपालक निदेशक

दिग्दर्शन
नरेश कुमार
महाप्रबंधक – मासंप्र, कासेवि एवं राजभाषा

संपादक
अमलशेखर करणसेठ
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल
आलोक कुमार श्रीवास्तव
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
सत्येन्द्र कुमार शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
विशाल कुमार
प्रबंधक (राजभाषा)

इस अंक में दिए गए विचार लेखकों के हैं, संपादक मंडल तथा यूको बैंक के नहीं। इन विचारों से संपादक मंडल अथवा यूको बैंक की सहमति हो ही, यह आवश्यक नहीं है।

कुल पृष्ठ – 52 हिंदी पृष्ठ- 42 (80%), क्षेत्रीय भाषा-10 (20%)

अनुक्रम

विषय	पृष्ठ सं.
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ का संदेश	2
कार्यपालक निदेशक का संदेश	3
महाप्रबंधक - राजभाषा का संदेश	4
संपादकीय	5
कार्यपालक विमर्श	
2022 तक कृषकों की आय दोगुनी करना- बैंकों की भूमिका	6
उभरती ग्रामीण व्यवस्था एवं बैंकों का सहयोग	8
ग्रामीण व्यवस्था और बैंकों का सहयोग	10
ग्रामीण बैंकिंग में संभावनाएं	11
कविताई	
वो देशभक्त सच्चा होगा	12
कोरोना के योद्धा	12
असहाय बड़ा सहमा सहमा	13
लेख	
बैंकिंग इंडस्ट्री और वर्क फ्राम होम	14
डिजिटल बैंकिंग – एक परिदृश्य	15
अनुशासन एवं ईमानदारी	18
साइबर अपराध : रोकने के उपाय	20
विविध लेख	
विश्व पुस्तक दिवस - एक जानकारी	25
कंप्यूटर सुरक्षा दिवस – एक रिपोर्ट	27
क्या गंगा नदी कावेरी या गोदावरी की शत्रु है?	28
संस्मरण	
काले गुब्बारे	30
भाषा सौहार्द	
अन्य भाषा- असमिया	31
अन्य भाषा- गुजराती	33
अन्य भाषा- मलयालम	36
अन्य भाषा- ओड़िया	38
प्रेरक प्रसंग	
वास्तविक शिक्षा	39
अन्य भाषा - कविताई	
ओड़िया	40
विविध	
एक गाँव की कहानी	41
विविध गतिविधियां	
सतर्कता जागरूकता सप्ताह	43
संविधान दिवस का पालन	43
बैंक स्थापना दिवस समारोह	44
विश्व हिंदी दिवस का पालन	45
यूको बैंक जी डी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला	46
यूको मातृभाषा सम्मान	48
यूको राजभाषा सम्मान	49
लोकप्रिय हिंदी कार्यक्रम का प्रायोजन	50
भाषा - राजभाषा	
जनता की सेवा - जनता की भाषा में - इस बार ओड़िया	51
भोजनम्	
मलयाली व्यंजन – अवियल	52

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय यूकोजन,

हम एक और नए वित्तीय वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। वित्तीय वर्ष 2019-20 के दौरान प्रत्येक यूकोजन के उनके उल्लेखनीय प्रदर्शन के लिए मैं उनकी सराहना करता हूँ। मैं सभी यूकोजन के परिवार के सदस्यों का भी शुक्रगुजार हूं जिन्होंने इस मुश्किल घड़ी में उनका समर्थन दिया जिससे प्रोत्साहित होकर वे राष्ट्र के जरूरतमंद लोगों की तत्परता से सेवा कर सके।

कोरोनावायरस के प्रकोप के कारण पूरे विश्व के लिए वित्तीय वर्ष 2019-20 का अंत बहुत दुःखद रहा। ऐसा कोई वर्ग नहीं है जो इस महामारी से प्रभावित नहीं हुआ है। ऐसी संभावना है कि यह परिस्थिति आगे बहुत लंबे समय तक के लिए हो सकती है। इस कठिन समय में हमें सावधान रहते हुए खुद को एवं अपने परिवार को इस महामारी से बचाना है। मुझे विश्वास है कि प्रत्येक यूकोजन हर समय आवश्यक एहतियात बरत रहे हैं और मैं उन सबके अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

हर संकट काल में बैंकर्स ने एक योद्धा की भूमिका निभाई है। इस संकट काल में भी बैंकर्स आर्थिक प्रहरी के रूप में सर्वप्रथम पंक्ति में खड़े हैं। मुझे गर्व है कि कोविद-19 जैसी भयानक महामारी के समय में भी प्रत्येक यूकोजन सच्ची लगन से अपनी ड्यूटी करते हुए आमजन की सेवा कर रहे हैं। यातायात की समस्या के बावजूद अंचल कार्यालय तथा शाखाओं में पदस्थापित हमारे यूकोजन विभिन्न नई रणनीतियों के तहत अपने-अपने कार्यालय पहुँच कर जनता की सेवा में लगे हुए हैं।

कोविद-19 के कारण उत्पन्न वित्तीय समस्या से निपटने के लिए बैंक ने यूको कोविद-19 आपातकालीन क्रेडिट लाइन तथा लघु अवधि वाले मांग ऋण की शुरुआत की है। इसके अतिरिक्त बैंक ने 3 सरल ऋण योजनाओं यथा यूको सहयोग एसएचजी, यूको सहयोग फार्मर एवं यूको सहयोग पीएमजेडीवाई की भी शुरुआत की है।

जैसा कि आप सब जानते हैं कि प्रधान कार्यालय के निवेदन पर यूकोजन ने पीएम केयर्स फंड में रु. 7.00 करोड़ रुपये दान स्वरूप दिया है। इस संवेदनशील एवं नेक कार्य हेतु मैं सभी यूकोजन का धन्यवाद करता हूँ।

आइए, इस संकट की घड़ी में हम धैर्य का पालन करते हुए समझदारी के साथ कदम आगे बढ़ाते हुए खुद का, अपने प्रियजनों का एवं बैंक का भी ख्याल रखें जिससे देश का भला हो।

शुभकामनाओं सहित,

अ. कु. गोयल

(अतुल कुमार गोयल)
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय यूकोजन,

आप सभी को नए वित्तीय वर्ष की शुभकामनाएं। हालांकि, यह अत्यंत दुख की बात है कि यह वर्ष **कोरोनावायरस** से प्रभावित है तथापि हमें बिना निराश हुए अपनी पूरी क्षमताओं का प्रयोग करते हुए प्रगति पथ पर अग्रसर रहना है। बैंक की प्रगति में ही हम सब की उन्नति निर्भर है। इस कठिन समय में जहां एक ओर सम्पूर्ण विश्व इस महामारी का सामना कर रहा है वहीं दूसरी ओर कुछ ऐसे वर्ग हैं जो इस विकट परिस्थिति में भी जोखिम उठाते हुए अपने राष्ट्र को आवश्यक सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। आवश्यक क्षेत्र की सेवाओं में बैंक एक प्रमुख क्षेत्र है और मुझे गर्व है कि मैं एक **बैंकर** हूँ।

वर्तमान परिस्थिति में हमें नई आदतों के साथ जीने की आदत डालनी होगी जिसमें खुद के स्वास्थ्य का ध्यान, सहयोग एवं सामाजिक दूरी (दो गज की दूरी) का पालन अनिवार्य है। हमारे जीने का तरीका बदलेगा और इसी प्रकार हमारे व्यवसाय करने का तरीका भी बदलेगा। आने वाले समय में हम यह देखेंगे कि घर से कार्य, ई-बैठक और तकनीकी/डिजिटल माध्यम से प्रशिक्षण एक आम बात है।

मेरे प्रिय साथियो, हम सब बैंकर हैं। बैंकर एक शुद्ध व्यापारी होता है और एक व्यापारी का सर्वप्रथम एवं परम उद्देश्य लाभ कमाना होता है। व्यापारिक जीवन में कई उतार-चढ़ाव आते हैं, कभी परिस्थिति हमारे अनुकूल होती है तो कभी प्रतिकूल। एक कुशल व्यापारी की भांति हमें भी इस प्रतिकूल परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाना होगा और अपने व्यवसाय को पुनः अर्जित करना होगा।

आज जो ये वैश्विक महामारी का संकट हमारे सामने है, वह अत्यंत चुनौतीपूर्ण है। ऐसी विकट परिस्थिति में हम सब को माननीय प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए मंत्र को ध्यान में रखते हुए **संयम और संकल्प** के साथ कार्य करते हुए विजयपथ पर अग्रसर होना होगा।

शुभकामनाओं सहित ।

अजय व्यास

(अजय व्यास)
कार्यपालक निदेशक

महाप्रबंधक – राजभाषा का संदेश

प्रिय साथियो,

नए वित्तीय वर्ष की शुभकामनाएं। इस वित्तीय वर्ष की शुरुआत हमारे अपेक्षानुसार नहीं हुई है। कोरोना का यह संकट पूरे विश्व में छाया हुआ है। इस महामारी ने हमें दोहरी चोट पहुंचाई है। देश एवं देश की अर्थव्यवस्था दोनों के स्वास्थ्य पर इसका व्यापक असर पडा है। परंतु इससे हमें घबराने की आवश्यकता नहीं है। हम सब को संयम और समझदारी से इसका मुक़ाबला करना होगा। इस महामारी के कारण उत्पन्न संकट को ध्यान में रखते हुए बैंक ने स्टाफ कल्याण योजना के अंतर्गत कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाए।

अनुगूँज का यह नया अंक आपके हाथ में है। इसे आपके समक्ष प्रस्तुत करने में हमें हर्ष की अनुभूति हो रही है। इसके पिछले अंक में हमने कुछ नए स्तंभों की की शुरुआत की थी जैसे 'कार्यपालक विमर्श' – इस स्तम्भ के अंतर्गत 6 अंचलों के अंचल प्रबन्धक ने विभिन्न विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किए जिससे इस पत्रिका की शोभा बढ़ गई। इसके साथ ही हमने इसमें चार क्षेत्रीय भाषाओं को भी स्थान दिया है जो हमारे भाषाई सौहार्द को दर्शाता है। आशा है कि हमारी नई पहल से हिंदी के साथ-साथ अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को भी बल मिलेगा और हमारी पत्रिका की लोकप्रियता बढ़ेगी।

पिछले अंक की तरह इस अंक में भी हमने उक्त स्तंभों को जारी रखा है। इसके साथ ही अन्य स्थायी स्तंभों यथा हमारे स्टाफ सदस्यों द्वारा स्वरचित विविध प्रकार के लेख, कविता, कहानियों को भी पहले की तरह यथावत हमने इस अंक में शामिल किया है जो बेहद रोचक है।

इसके अतिरिक्त अपना प्रधान कार्यालय, नराकास (बैंक), कोलकाता का संयोजक भी है। पिछले वर्ष के दौरान समिति द्वारा किए गए अच्छे कार्यों का मूल्यांकन करते हुए भारत सरकार ने नराकास (बैंक), कोलकाता को क्षेत्रीय राजभाषा का प्रथम पुरस्कार प्रदान किया है। इससे हमारा उत्साहवर्धन हुआ है और हम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के लिए संकल्पित हैं।

हमें विश्वास है कि पिछले अंकों की तरह यह अंक भी आप सभी को बहुत पसंद आएगा। हम आपके एवं आपके परिवार की बेहतर स्वास्थ्य की कामना करते हैं।

शुभकामनाओं के साथ ।

नरेश कुमार

(नरेश कुमार)
महाप्रबंधक
मानव संसाधन प्रबंधन एवं राजभाषा

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

मुझे 'अनुगूँज' का नवीनतम अंक आप सब के समक्ष प्रस्तुत करने में प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से बैंकिंग क्षेत्र के महत्वपूर्ण एवं अद्यतन सूचनाओं को आप सभी तक पहुंचाना हमारा प्रयास रहा है। पिछले अंक की तरह इस अंक में भी 'कार्यपालक विमर्श', भाषा-राजभाषा, भाषा सौहार्द, जिज्ञासु मन के साथ-साथ अन्य नए रुचिकर विषयों एवं कोरोना पर विशेष सामग्री को सम्मिलित किया गया है, जिसे पढ़कर आप सभी अवश्य लाभान्वित होंगे।

हमारी गृह पत्रिका 'अनुगूँज' का उद्देश्य राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं को भी जोड़ना है जिससे हमारे स्टाफ सदस्यों में इसकी स्वीकृति बढ़े। हमारा प्रयास है कि इस पत्रिका के माध्यम से उन्हें हिंदी में कामकाज के साथ मौलिक हिंदी लेखन में प्रोत्साहन मिले। इसके अतिरिक्त हमारी पत्रिका में प्रकाशित लेख स्टाफ सदस्यों के बैंकिंग कामकाज से संबन्धित ज्ञानवर्धन में सहायक एवं लाभप्रद हों।

सभी पाठकों से आग्रह है कि हमारी पत्रिका में शामिल स्तंभों से संबन्धित आलेख भेजकर राजभाषा कार्यान्वयन में अपना योगदान दें। हम अपने प्रयास में कितना सफल रहे हैं इसका आकलन आप सभी पाठकगण की प्रतिक्रियाओं एवं सुझावों से हो सकता है। इसलिए आप सभी से अनुरोध है कि इस पत्रिका को और अधिक आकर्षक और ज्ञानवर्धक बनाए रखने के लिए हमें अपने बहुमूल्य सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं से अवश्य अवगत कराएं।

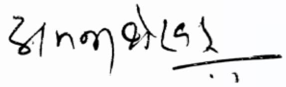

(अमलशेखर करणसेठ)

2022 तक कृषकों की आय दोगुनी करना – बैंकों की भूमिका

सत्यरंजन पंडा
उप महाप्रबंधक एवं
अंचल प्रमुख
रायपुर अंचल

भारत की आत्मा गांवों में बसती है। किसान भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं जीवन के आधार हैं। कृषि ग्रामीण भारतीयों की जीवन-पद्धति है। भारतीय अर्थव्यवस्था के तीन मुख्य आधार स्तंभ हैं- कृषि, सेवा और उद्योग। कृषि क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्र के रूप में भी जाना जाता है। वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र का 53%, औद्योगिक क्षेत्र का लगभग 30% एवं कृषि क्षेत्र का लगभग 17% योगदान है। पिछले कुछ दशकों के दौरान अर्थव्यवस्था के विकास में सेवा और उद्योग क्षेत्रों का योगदान तेजी से बढ़ा है, जबकि कृषि क्षेत्र के योगदान में गिरावट हुई है, तथापि भारत में आज भी कुल श्रम शक्ति का 53% भाग कृषि एवं संबद्ध गतिविधियों में संलग्न है। आजादी के बाद ग्रामीण एवं कृषि अर्थव्यवस्था में काफी विकास हुआ है। इस समय खाद्यान्नों के मामले में आत्मनिर्भरता है। आज भारत बहुत से कृषि उत्पादों में न केवल आत्मनिर्भर है, बल्कि उसका निर्यातक भी है। खाद्यान्नों के मामले में आत्मनिर्भरता का श्रेय यहाँ के किसानों को जाता है, किंतु अन्नदाता किसानों के जीवन पर ही संकट है। भारत में कृषि व्यवस्था के समक्ष कई चुनौतियां हैं।

कृषि अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने एवं किसानों के जीवन स्तर को सुधारने के लिए भारत सरकार ने 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने एवं 2024-25 तक भारत की अर्थव्यवस्था को 5 ट्रिलियन डॉलर करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है। 2015 को आधार वर्ष मानते हुए वास्तविक आधार पर वर्ष 2016-17 से वर्ष 2022-23 तक किसानों की आय को दोगुना करने का लक्ष्य यदि प्राप्त होता है तो यह अर्थव्यवस्था को 5 ट्रिलियन डॉलर करने में काफी सहायक होगा, किंतु कृषि विकास दर का पिछले वर्ष के 5.1% के मुकाबले 2-2.5% हो जाना किसानों की आय दोगुनी करने के संदर्भ में चिंता का विषय है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि 2022 तक कृषकों की आय दोगुनी करना एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य है और इसके लिए सरकार द्वारा बहु-आयामी रणनीति बनाकर इस पर कार्य किया जा रहा है। किसानों की आय को दोगुना करने के लिए बनाई गई समिति द्वारा तीन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया था– उत्पादकता लाभ, फसल की लागत में कमी और लाभकारी मूल्य। भारत सरकार ने वर्ष 2020-21 के बजट में कृषि क्षेत्र के विकास के लिए कई उपायों की घोषणा की है तथा कृषि, सिंचाई एवं संबद्ध गतिविधियों के लिए 1.60 लाख करोड़ रुपये का आवंटन किया है।

भारत में कृषि क्षेत्र से संबंधित चुनौतियों में अनेक प्रश्न समाहित हैं जैसे- किसानों का कर्ज के बोझ तले दबा रहना, किसानों की आय, फसल की कीमत व सरकार द्वारा निर्धारित मूल्य पर सार्वजनिक खरीद की व्यवस्था, फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य, भू-जोतों का आकार, कृषि की आधुनिक प्रणाली, भंडारण की व्यवस्था, सार्वजनिक वितरण व्यवस्था, मानसून आधारित अर्थव्यवस्था के लिए सिंचाई की व्यवस्था, उत्पादकता बढ़ाने के उपाय, कृषि पदार्थों के विपणन व आयात निर्यात की व्यवस्था, प्राकृतिक आपदाओं एवं अन्य प्रकार से होने वाली क्षतिपूर्ति के लिए देश में फसल बीमा की व्यवस्था आदि।

कृषि क्षेत्र की वर्तमान चुनौतियों पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि सरकार, कृषि विशेषज्ञ, किसान एवं बैंकिंग प्रणाली को समवेत रूप से प्रयास करने होंगे। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक इस प्रक्रिया के महत्वपूर्ण घटक हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने राष्ट्रीयकरण के बाद आरंभ से ही कृषि क्षेत्र को सशक्त करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बैंकों ने अपनी विभिन्न योजनाओं एवं विविध उपायों के माध्यम से इस क्षेत्र को मजबूती प्रदान की है। इस संदर्भ में बैंकों के योगदान को निम्नांकित उपायों द्वारा और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है :

कृषकों को बैंकिंग प्रणाली से जोड़ना : कृषकों की आय दोगुनी करने एवं कृषि व्यवस्था को सुदृढ़ करने में बैंकों की भूमिका तभी प्रभावी होगी, जब इसके लाभार्थी बैंकिंग प्रणाली से जुड़ेंगे। अभी भी किसानों का एक बड़ा भाग बैंकिंग प्रणाली से जुड़ा नहीं है, फलत: वे बैंकिंग की प्रारंभिक सुविधाओं से भी वंचित हैं। हालांकि प्रधानमंत्री जनधन योजना के माध्यम से बड़ी संख्या में किसानों को बैंकिंग से जोड़ा गया है। इस पर और भी त्वरित गति से कार्य करने की जरूरत है।

कृषि क्षेत्र में ऋण प्रवाह को द्रुत गति से बढ़ाना : राष्ट्रीयकरण के बाद से ही बैंक कृषि क्षेत्र में ऋण प्रवाह बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। कृषि क्षेत्र में ऋण प्रवाह बढ़ा है एवं कृषि क्षेत्र इससे लाभान्वित हुआ है। इस संदर्भ में कुछ बातों पर विशेष रुप से ध्यान दिया जाना अपेक्षित होगा –

1. लगभग 32% से अधिक किसान ऐसे हैं, जिनके पास अपनी कोई जमीन नहीं है, पर ये खेती करते हैं। इन किसानों को बैंकों द्वारा ऋण प्रदान करने की योजनाओं के कार्यान्वियन संबंधी कठिनाइयों को दूर कर तत्परतापूर्वक लागू करने की आवश्यकता है ताकि ऐसे भूमिहीन किसानों को बैंकिंग ऋण प्रणाली से जोड़ा जा सके।
2. किसानों को रियायती दरों पर ऋण प्रदान करने की सुविधा का विस्तार किया जाना चाहिए, विशेषत: समय पर किश्त की चुकौती करने के मामलों में। किसानों को ऋण राशि की चुकौती के लिए भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि अन्य किसानों को भी बैंकिंग ऋण सुविधा का लाभ प्राप्त हो सके।
3. ऋण प्रदान करने में बैंकों की नीति भी समावेशी होनी चाहिए। उल्लेखनीय है कि देश में 86.2% लघु एवं सीमांत किसान हैं, जिनके पास 47.3% ही फसली जमीन है। प्रतिभूति रहित कृषि ऋण की वर्तमान सीमा 1.60 लाख को भी बढ़ाने की जरूरत है।
4. कृषि ऋण प्रक्रिया की सरलता पर विशेष जोर दिए जाने की भी जरूरत है।

कृषि से संबद्ध अन्य क्षेत्रों का वित्तपोषण: कृषि क्षेत्र के सुद्दढ़ीकरण एवं किसानों की आय में वृद्धि के लिए वर्तमान **उत्पादन केंद्रित कृषि अर्थव्यवस्था** के स्थान पर **आय केंद्रित अर्थव्यवस्था** बनाने पर जोर देना होगा। इसके लिए बैंकों द्वारा कृषि से संबद्ध अन्य गतिविधियों, पशुपालन, मुर्गी पालन, मछली पालन, डेयरी विकास की योजनाओं, अन्न भंडारण, विपणन सुविधाओं, सिंचाई व्यवस्था आदि पर भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। इसके अलावा ग्रामीण सड़कों, ग्रामीण ऊर्जा, ग्रामीण विकास में निवेश भी महत्वपूर्ण घटक हैं। इन क्षेत्रों में ऋण प्रवाह को गति प्रदान कर बैंक कृषि अर्थव्यवस्था एवं किसानों को समृद्ध कर सकते हैं। **इस पर नजर रखना जरूरी है कि इन क्षेत्रों को प्रदान किए जाने वाले ऋण से कृषि क्षेत्र लाभान्वित हो, न कि केवल इस क्षेत्र की कंपनियां ही।**

बैंक न केवल वित्त पोषण के माध्यम से अपितु अन्य उपायों द्वारा भी कृषि क्षेत्र को मजबूती प्रदान करने में सक्षम हैं। बैंकों द्वारा वित्तीय जागरूकता कार्यक्रमों, किसान गोष्ठियों एवं किसान क्लबों आदि के माध्यम से उन्हें इस संबंध में शिक्षित एवं जागरुक किया जा रहा है।

सरकारी योजनाओं का कार्यान्वयन : केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार किसानों के लिए विभिन्न योजनाएं क्रियान्वित कर रही हैं, जिसमें बैंकों की अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका है। केंद्र सरकार द्वारा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना एवं किसान सम्मान निधि योजना का कार्यान्वियन भी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के माध्यम से किया जा रहा है। बैंकों द्वारा किसानों को समर्पित सरकार प्रायोजित विभिन्न योजनाओं के प्रभावी कार्यान्वियन के माध्यम से किसानों की स्थिति सुद्दढ़ होगी। इससे कृषि अर्थव्यवस्था गतिशील होगी।

यूको बैंक पूरे भारत वर्ष में अपनी 3086 शाखाओं (31.12.2019 की स्थिति के अनुसार) एवं छत्तीसगढ़ राज्य में 56 शाखाओं के माध्यम से विभिन्न योजनाओं एवं गतिविधियों द्वारा कृषि क्षेत्र को सुद्दढ़ कर अर्थव्यवस्था को गतिशील बनाने में महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है। बैंक को वित्तीय वर्ष 2018-19 में एसएचजी बैंक लिंकेज के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया। बैंक देश में गरीबी कम करने एवं विशेष रुप से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुद्दढ़ करने के लिए सदैव तत्पर हैं।

हालांकि इस समय सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के समक्ष भी अनर्जक आस्तियों की विकरालता, गुणवत्तापूर्ण आस्तियों का संकट, धोखाधड़ी जैसी अनेक चुनौतियां विद्यमान हैं। अत: आवश्यकता है सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के सुद्दढ़ीकरण की ताकि बैंक कृषि क्षेत्र में समावेशी एवं गुणवत्तापूर्ण ऋण के प्रवाह एवं अन्य उपायों से सतत व अपेक्षित उच्च वृद्धि की प्राप्ति तथा किसानों की आय को दोगुना करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकें।

उभरती ग्रामीण अर्थव्यवस्था और बैंकों का सहयोग

एस के सांख्यान
उप महाप्रबंधक एवं
अंचल प्रमुख
इंदौर अंचल

भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत विश्व में सातवें स्थान पर है और जनसंख्या में इसका दूसरा स्थान है। भारत प्राचीन समय से ही ग्रामीण क्षेत्रों वाला देश रहा है जहां की 65-70% जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है और जीविका का माध्यम कृषि कार्य रहा है। कृषि कार्य में अधिकांश लोगों को रोजगार प्राप्त होता है जिससे हमारी गणना प्राथमिकताप्राप्त क्षेत्र में की जाती है। इस देश का मुख्य कार्य कृषि ही रहा है। कृषि का भारतीय जीडीपी में करीब 17 प्रतिशत का योगदान है जो कि सेवा और उद्योग के बाद जीडीपी में तीसरा स्थान रखता है। उभरती ग्रामीण अर्थव्यवस्था में बैंकों द्वारा सहयोग निम्नलिखित प्रकार से दिया जा रहा है :

एग्रीबिजनेस

कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय ने नाबार्ड के सहयोग से किसानों को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाने और कृषि में

आधुनिक तकनीक अपनाने के लिए एग्रीबिजनेस कार्यक्रम की शुरुआत की है। इस योजना का प्रमुख उद्देश्य किसानों द्वारा फसल उत्पादन में नवीनतम प्रौद्योगिकी व प्राप्त फसल उत्पादों का मूल्य संवर्धन करना है। इसके अंतर्गत ग्रामीण युवाओं को कृषि तकनीक और मैनेजमेंट तकनीक के बारे में प्रशिक्षित करने के साथ-साथ स्वयं का एग्रीबिजनेस सेंटर स्थापित करने के लिए सक्षम बनाना है। इसके तहत कृषि स्नातकों को कृषि के विभिन्न क्षेत्रों जैसे बागवानी, रेशम इत्यादि कृषि संबंधी विषयों पर प्रशिक्षण दिया जाता है। सरकार ने कृषि उद्यम स्थापना के लिए विशेष स्टार्टअप ऋण सहायता योजना आरंभ की है। इन केंद्रों के माध्यम से ग्रामीण और स्थानीय-स्तर पर लाखों युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराया जा सकता है।

उक्त योजनाओं में ग्रामीणों युवाओं, महिलाओं, किसानों व पशुपालकों को केंद्र व राज्य सरकार द्वारा सब्सिडी व ऋण सुविधा भी दी जा रही है। किसान भाई अपनी तहसील व जिले में स्थित बैंकों और कृषि विभाग के कार्यालय में जाकर इन योजनाओं के बारे में जानकरी ले सकते हैं।

प्रमुख उद्योग

ग्रामीणों क्षेत्रों में बैंकों के माध्यम से कृषि कार्य में लगे हुए और छोटे छोटे कुटीर उद्योगों को शाखाओं द्वारा ऋण प्रदान किया जा रहा है जैसे फसलों से प्राप्त उत्पादों के प्रसंस्करण व परिरक्षण से अनेक कृषि आधारित उद्योगों को प्रशिक्षण प्रदान कर रोजगार प्रदान किया जा रहा है। जैसे मूंगफली से भुने हुए नमकीन दाने, चिक्की, दूध व दही बनाना, सोयाबीन से दूध व दही बनाना, फलों से शर्बत, जैम, जेली बनाना, आलू व केले से चिप्स बनाना, गुड़ बनाना, गुड़ के शीरे व अंगूर से शराब व अल्कोहल बनाना, विभिन्न तिलहनों से तेल निकालना, दलहनी उत्पादों से दाल बनाना, धान से चावल निकालना आदि। इसके अलावा दूध के परिरक्षण व पैकिंग के साथ-साथ इससे बनने वाले विभिन्न उत्पादों जैसे दूध का पाउडर, दही, छाछ, मक्खन, घी, पनीर आदि के द्वारा दूध का मूल्य-संवर्धन किया जा सकता है। फूलों से सुगंधित इत्र बनाना, लाख से चूड़ियां तथा खिलौने बनाना, कपास के बीजों से रुई अलग करना तथा दबाव डालकर रुई का गठ्ठर बनाना, जुट व पटसन से रेशे निकालने के अलावा कृषि के विभिन्न उत्पादों से अचार एवं पापड़ बनाना, आदि के द्वारा मूल्य संवर्धन किया जा सकता है। इसके अलावा कृषि आधारित उद्योगों में ताड़, बांस, अरहर तथा कुछ अन्य फसलों एवं घासों के तनों एवं पत्तियों द्वारा डलिया, टोकरियां, चटाईयां, टोप व टोपियों तथा हस्तचालित पंखे

बुनना, बेंत से कुर्सी व मेज बनाना आदि प्रमुख हैं। इन कुटीरउद्योगों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी का प्रतिशत कम हुआ है साथ ही लोगों को रोजगार भी प्राप्त हुआ है।

ऋण व्यवस्था

रोजगार सृजन में कृषि-आधारित उद्योगों की बहुत बड़ी भूमिका होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि पर आधारित उद्योगों द्वारा ग्रामीण युवकों को कम पूंजी से भी रोजगार मिल सकता है। कृषि-आधारित उद्योग धंधों हेतु संसाधन जुटाने के लिए पूंजी की व्यवस्था करने में ग्रामीण बैंकों के साथ-साथ सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की कृषि विकास शाखाओं एवं सहकारी समितियों का बहुत बड़ा योगदान होता है। इन संस्थानों के माध्यम से कृषि-आधारित उद्योग धंधों को आरंभ करने हेतु सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के तहत ग्रामीण बेरोजगारों को कम ब्याज दर तथा आसान किश्तों पर ऋण दिया जाता है।

कृषि तथा सिंचाई क्षेत्र में बैंकों का योगदान : विगत कुछ वर्षों में शहरी क्षेत्रों की बजाय ग्रामीण क्षेत्रों में विकास दर ज्यादा रिकॉर्ड की गई है। अतः इससे पहले कि मंदी ग्रामीण क्षेत्र में फैले, ग्रामीण बुनियादी ढांचे और सिचाई तथा कृषि पर व्यय बढ़ाने के लिए विकास योजनाओं के वित्त पोषण को बढ़ावा दिया गया। इस दिशा में बैंकों ने स्वयं आगे बढ़कर शुरुआत की।

ग्रामीण क्षेत्रों में शाखा विस्तार: बैंकों को अपनी ज्यादा से ज्यादा शाखाएँ ग्रामीण क्षेत्रों में खोलनी पड़ीं, ताकि बैंकों के माध्यम से सूक्ष्म वित्त प्रदान करना तथा वित्तीय समावेशन को पूरे मन से लागू करना संभव हो सके । सूक्ष्म वित्त प्रदान करने वाली संस्थाओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि ग्रामीण क्षेत्रों में उधार देना सामाजिक दायित्व की पूर्ति से साथ-साथ लाभदायक कारोबार भी है । अतः सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने यह कर दिखाया है, जिसके लिए पर्याप्त संसाधन तथा तकनीक उनके पास पहले ही मौजूद है। वैश्विक अर्थव्यवस्था के संकट का प्रभाव शहरी क्षेत्रों में सबसे ज्यादा पड़ता है । ग्रामीण बैंकिंग इसमें एक बफर जोन की तरह साबित हो सकती है, जो अर्थव्यवस्था में लगने वाले झटकों को सह ले या उनका प्रभाव कम कर दे।

ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी योजनाओं का बैंकों द्वारा कार्यान्वयन : भारत सरकार की महत्वपूर्ण योजनाओं को मूर्त रूप बैंकों ने ही दिया है चाहे मुद्रा लोन हो या स्टैंड अप इंडिया, पीएमईजीपी आदि ऋणों को सरकारी बैंकों ने ही समुचित रुप से कार्यान्वयित किया है। इन ऋण वितरण से बेरोजगार उम्मीदवारों को रोजगार प्राप्त हुआ है साथ ही उनके जीवन के स्तर में सुधार भी हुआ है। इस प्रकार से भारतीय अर्थव्यवस्था को गति बैंकों के माध्यम से भी मिली है। प्रधानमंत्री जनधन योजना के तहत बैंकिंग की सभी सुविधाओं से वंचित लोगों को बैंकिंग की धारा से जोड़ा गया और विकास की यात्रा में

उन्हें सहभागी बनाया गया ताकि देश की अर्थव्यवस्था को गति मिल सके। जिसके तहत बीमा की सुविधाओं से वंचित वर्गों को प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के माध्यम से आज भी गरीब और मध्यम वर्ग लाभान्वित हुआ है जिसके अंतर्गत दो लाख रुपये की राशि मृतक के परिवार को दी जाती है। सरकार के द्वारा जनधन योजना के अंतर्गत खोले गए खातों पर 5000 रु. की ओडी लिमिट की सुविधा भी प्रदान की जा रही है। सरकार द्वारा दिए जाने वाले गैस अनुदान की राशि भी सीधे लाभार्थियों के बचत खाते में जमा की जा रही है जिससे काली कमाई करने वालों पर लगाम लगी है। कालाधन रखने वाले व्यक्ति भी अब अपना धन बैंकों में जमा करने लगे हैं जिससे उस धन से सरकारी कार्यों के लिए सरकार को ऋण के रुप में वित्त की भी सहायता हो रही है और भारतीय अर्थव्यवस्था को सबलता प्राप्त हो रही है। सरकार की पीपीएफ योजना, सुकन्या समृद्धि योजना (बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ) जैसी योजनाएं बैंकों के माध्यम से ही चलाई जा रही हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत गरीब और मध्यम वर्ग के लोगों को मकान के लिए ऋण सरकारी बैंकों के माध्यम से ही दिया गया है फिर चाहे इंदिरा आवास योजना ही क्यों न हो। अतः उभरती ग्रामीण अर्थव्यवस्था में बैंकों का सहयोग रहा है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था और बैंकों का सहयोग

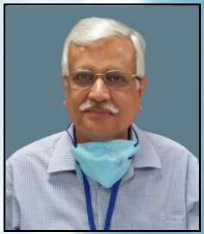

कपिल सेठ
उपमहाप्रबंधक एवं
अंचल प्रमुख
चंडीगढ़ अंचल

आज भी भारत की 60% से अधिक जनसंख्या गांवों में निवास करती है जो आजादी के पश्चात से ही विकास की ओर प्रयत्नशील रही है किन्तु विगत कुछ वर्षों में इस क्षेत्र का विकास उभरकर सामने आया है और यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था आर्थिक एवं सामाजिक रूप से भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में बहुत बड़ा योगदान दे रही है। अब गांवों में स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छ जल, बिजली, पक्की सड़कें, बैंक जैसी आधारभूत सुविधाएं आदि पहुँच चुकी हैं। सरकार की विभिन्न योजनाओं जैसे महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा), ग्राम स्वराज अभियान, प्रधानमंत्री जन-धन योजना के साथ-साथ किसानों हेतु विभिन्न ऋण योजनाओं ने भी किसानों के कार्यों को नवीन दिशा दी है।

जहां तक बैंक की बात है तो बैंक किसी भी अर्थव्यवस्था की जीवन-रेखा हैं तथा आर्थिक विकास को सक्रिय बनाने और उसे कायम रखने में उत्प्रेरक की भूमिका निभाते हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में हो रहे विकास में वित्तीय समावेशन एवं ग्रामीण-बैंकिंग का बहुत बड़ा योगदान है। प्रधानमंत्री जन-धन योजना के अंतर्गत बैंकों ने गांव के लोगों को बैंकिंग-सेवा से जोड़ा है। वर्तमान में हमारे बैंक द्वारा विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत कम ब्याज-दर पर किसानों को ऋण दिया जा रहा है। साथ ही साथ फूड एवं एग्रो प्रोसेसिंग, यूको तत्काल, यूको टू व्हीलर लाईट और मीडियम, डेयरी लोन, गोल्ड लोन, किसान क्रेडिट कार्ड, वेयरहाउस रसीद आदि योजनाओं के तहत किसानों को ऋण सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है, जिससे किसानों द्वारा फसलों की पैदावार में नवीन प्रौद्योगिकी और तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है। "प्रधानमंत्री मुद्रा योजना" जिसकी शुरुआत अप्रैल 2015 में की गई थी, के अंतर्गत बैंकों द्वारा ग्रामीण लोगों को अपना कार्य प्रारम्भ करने के लिए ऋण दिया जाता है जिससे ग्रामीण जनता कृषि के अलावा अपने अन्य कार्य भी प्रारम्भ कर सकती है। बैंकों द्वारा "स्वयं सहायता समूह" और "संयुक्त देनदारी समूह" के अंतर्गत भी ग्रामीण लोगों को कृषि एवं अन्य कार्य जैसे डेयरी, मिट्टी के बर्तन, हस्तशिल्प, छोटे उद्योग आदि कार्यों का विस्तार करने हेतु ऋण दिया जाता है।

बैंकों द्वारा आरसेटी (ग्रामीण स्वयं रोजगार प्रशिक्षण संस्थान) खोले गए हैं जिनमें सिलाई, डेयरी फार्मिंग एवं वर्मी कम्पोस्ट मेकिंग, इलेक्ट्रिक मोटर रिपेयरिंग, ब्यूटी पार्लर, पीएमईजीपी, कृषि उद्यमी आदि रोजगार पर ग्रामीण लोगों को स्वरोजगार करने हेतु प्रशिक्षण दिया जाता है और उनके लिए विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है।

वर्तमान में शहर के अधिकतर व्यक्ति बैंक से जुड़ चुके हैं और उनके द्वारा बैंकिंग सेवाओं का लाभ भी लिया जा रहा है परंतु अभी भी कुछ सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों तक डिजिटल-बैंकिंग नहीं पहुँच पाई है, जिसमें निरक्षर व्यक्तियों का प्रतिशत ज्यादा है। इसके लिए बैंकिंग-सेवा क्षेत्रीय भाषा में भी उपलब्ध कराई जा रही है जिससे ग्रामीण व्यक्ति सरलता से अपनी भाषा में विभिन्न बैंकिंग सेवाओं का उपयोग कर पाएंगे। प्रधानमंत्री जन-धन योजना के पश्चात गाँव के अधिकतर व्यक्तियों का बैंकों में खाता खुल गया है और मुझे आशा है कि जल्द ही अधिकाधिक ग्रामीण डिजिटल-बैंकिंग से भी जुड़ जाएंगे जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक विकास में और तेजी आएगी। ग्रामीण लोगों को आत्मनिर्भर बनाने और अन्य लघु उद्यमों से उन्हें जोड़ने में बैंक अहम भूमिका निभा रहे हैं और इसके परिणामस्वरूप के सहयोग से गांवों के आर्थिक विकास में और तेजी आएगी।

ग्रामीण बैंकिंग में संभावनाएं

अशोक तेलंग
उप महाप्रबंधक
एवं अंचल प्रमुख
नागपुर

ग्रामीण बैंकिंग का तात्पर्य ग्रामीण जनता को बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध कराना है। जब हम ग्रामीण बैंकिंग की आवश्यता के बारे में सोचते हैं तो एक बात सामने आती है कि देश की कुल आबादी का 74.3% गाँवों में निवास करता है। आज शहरी क्षेत्र के सभी लोग बैंकिंग सुविधाओं का लाभ ले रहे हैं, लेकिन अभी भी बैंकिंग सुविधाएं गाँवों में लोगों की पहुँच से दूर हैं। भारत एक कृषि प्रधान देश है तथा देश की 70% आबादी कृषि पर निर्भर है। गाँव में किसान खेती करने के लिए अभी भी साहूकार से ऋण लेता है । साहूकार किसान को ज्यादा ब्याज दर पर ऋण देता है। अगर ऐसे में बैंकिंग सुविधाएं गांवों तक पहुँच जाती है तो किसानों को कम ब्याज पर बैंक से ऋण प्राप्त होगा। साथ ही किसानों के माध्यम से बैंक का कारोबार बढ़ेगा। ग्रामीण क्षेत्र में बैकिंग की अपार संभावनाएं छुपी हुई हैं। किसानों की खेतीगत आवश्यकताओं के लिए बैंक के पास विभिन्न ऋण उत्पाद उपलब्ध हैं। बैंक किसानों को केसीसी के माध्यम से ऋण सुविधा प्रदान कर सकता है। इस ऋण से किसान बीज, उर्वरक आदि खरीद सकता है। अगर गाँव में महिलाएं अपना खुद का कोई व्यवसाय प्रारंभ करना चाहें तो बैंक स्वयं-सहायता समूह (एसएचजी) के माध्यम से इन महिलाओं/पुरुषों के समूह को ऋण मुहैया कराता है। गाँव में बैंक होने से ग्रामवासी बैंक में अपना बचत खाता रख सकते हैं। इतना ही नहीं, भारत सरकार के दिशानिर्देशानुसार कोई ग्रामीण चाहे तो बैंक में अपना नो-फ्रिल खाता भी खुलवा सकता है जिसके लिए नगण्य राशि जमा कर खाता खुलवाया जा सकता है। इस संबंध में भारत सरकार की यही मंशा रही है कि वित्तीय समावेशन के तहत ग्रामीण जनता सहित देश की प्रत्येक जनता तक बैंकिंग सुविधाओं को पहुँचाना है। इस तरह से बैंक ग्रामवासियों में बचत की आदत का विकास करते हैं । गाँववाले सावधि जमा के माध्यम से बैंक से निर्धारित ब्याज अर्जित कर सकते हैं। अगर गांव का कोई बेरोजगार युवक अपना स्वयं का व्यवसाय प्रारंभ करना चाहे तो वह बैंक से ऋण प्राप्त कर अपना व्यवसाय प्रारंभ कर सकता है। ऐसा करने से उस व्यवसाय से किसी जरूरतमंद को कोई काम भी मिल जाएगा। इस तरह से बैंक के माध्यम से रोजगार का सृजन हो सकता है। बैंक ग्राहकों को आवश्यकतानुसार उन्हें हर प्रकार का ऋण उपलब्ध कराता है। गाँववाले जीविका उपार्जन हेतु बकरी का पालन करते हैं। बैंक इसके लिए भी उन्हें ऋण मुहैया कराता है। मछलीपालन, मुर्गीपालन आदि का व्यवसाय गाँवों में बहुतायत रूप से किया जाता है। ऐसे कार्यों के लिए भी बैंकों द्वारा ऋण प्रदान किया जाता है। इतना ही नहीं, बैंक ग्रामीणों को व्यवसाय के लिए ऋण उपलब्ध कराने के साथ-साथ उनके जीवन की सुरक्षा हेतु बीमा की भी सुविधा देता है। इस संबंध में भारत सरकार द्वारा बहुत सारी बीमा योजनाएं चलाई जा रही हैं। पीएमजेडीवाई, पीएमएसबीवाई, पीएमजेजेबीवाई आदि अनेक बीमा सुविधाएं बहुत ही नगण्य प्रीमियम में भारत सरकार द्वारा जनता को उपलब्ध कराई जा रही हैं।

आजकल खेती का मशीनीकरण हो चुका है। अब मशीनों यथा ट्रैक्टर, हार्वेस्टर, थ्रेसर आदि की सहायता से खेती का कामकाज बहुत ही कम समय में पूरा हो जाता है। बैंक इन मशीनों को खरीदने के लिए किफायती ब्याज दर पर ऋण प्रदान करता है। बैंक द्वारा इन मशीनों के क्रय करने हेतु दिए गए ऋण से एक ओर जहाँ खेती का काम सुगमता से हो जाता है, वहीं दूसरी ओर ऐसे मशीनों के चालक को रोजगार की प्राप्ति होती है। ग्रामीण बैंकिंग के परिप्रेक्ष्य में, भारत सरकार समय-समय पर किसानों के लिए आर्थिक पैकेज की घोषणा करती है। इन किसानों को सरकार की सहयोग राशि का वितरण बैंकों के माध्यम से किया जाता है। यह सहयोग राशि उन्हें बैंकों के माध्यम से सीधे उनके खाते में पहुँच जाती है।

चूँकि वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्रों का अधिकांश भाग अभी भी बैंकिंग सुविधाओं से वंचित है तथा ग्रामीण अभी भी खेती करने के लिए एवं अपनी अन्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए साहूकार पर ही निर्भर हैं। ऐसे में बैंक यदि ग्रामीण क्षेत्रों में पहुँचकर उन्हें विभिन्न बैंकिंग सुविधाएं प्रदान करता है तो इससे एक ओर जहाँ बैंक के कारोबार में वृद्धि होती होगी, वहीं दूसरी ओर ग्रामीण जनता को कम ब्याज दर पर बैंक द्वारा ऋण प्राप्त हो जाएगा।

दीपक कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, हरियाणा

वो देशभक्त सच्चा होगा

जितना घर के अंदर हो,
उतना ही अच्छा होगा,
लक्ष्मण रेखा ना पार करे,
वो देशभक्त सच्चा होगा।

एक छोटे-से विषाणु से,
फैली एक बीमारी है,
विकराल रुप लिया है इसने,
कैसी यह महामारी है।

सामाजिक दूरी जितनी हो,
उतना ही अच्छा होगा,
लक्ष्मण रेखा ना पार करे,
वो देशभक्त सच्चा होगा।

विकट आपदा से लड़ने,
और खोजने समाधान यहां,
श्वेत वस्त्र में उतरे हैं,
देखो कितने भगवान यहां।

जितना उनका करें शुक्रिया,
उतना ही अच्छा होगा,
लक्ष्मण रेखा ना पार करे,
वो देशभक्त सच्चा होगा।

खाकी वर्दी में खड़े हैं,
हर वक़्त फर्ज निभाने को,
थोड़े सख्त हो जाते हैं,
हम लोगों को बचाने को।

बाधा उनके लिए बनें ना,
सबके लिए अच्छा होगा,
लक्ष्मण रेखा ना पार करे,
वो देशभक्त सच्चा होगा।

जन-जन को सेवा देने,
एक आर्थिक फौज खड़ी,
सहयोग सबको दे रही है,
आगे कितनी हो भीड़ बड़ी।

जितना संयम बरतेंगे,
उतना ही अच्छा होगा।
लक्ष्मण रेखा ना पार करे,
वो देशभक्त सच्चा होगा।

और बहुत से लोगों ने,
सेवा को रखा जारी है,
लगी है खुद की जान दांव पर,
लड़ने की तैयारी है।

सबका हम सम्मान करें,
तो हौसला कुछ पक्का होगा,
लक्ष्मण रेखा ना पार करे,
वो देशभक्त सच्चा होगा।

जितना घर के अंदर हो,
उतना ही अच्छा होगा,
लक्ष्मण रेखा ना पार करे,
वो देशभक्त सच्चा होगा।

*****

प्रवीण कुमार शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, वर्धमान

कोरोना के योद्धा

कोरोना के योद्धा को, हमारा शत-शत नमन।
तुम शांति के दूत, तुमसे ही जग में है अमन।

अदृश्य कोरोना से लड़ते वो,
स्वच्छता और संयम का लिए हथियार।
धन्य तुम्हारा अनुशासित जीवन,
तुम त्वरित-सेवा हेतु सदा ही तैयार।

सतर्क रहें हम, जागरुक बनें,
कोरोना से न हों भयभीत।
घर में जो रहें हम स्थिर,
कोरोना से तभी हमारी जीत।

सोशल डिस्टेन्सिंग से रुकता है,
कोरोना विषाणु का प्रसार।
करें अनुसरण, समय-समय पर
जो कहती भारत की सरकार।

रखें हम सबसे सहानुभूति
और परस्पर सहयोग की भावना।
निरोग रहें, प्रसन्न रहें,
आपको है हमारी स्वास्थ्य-कामना।

अनिश्चितता के इस काल में,
हमें बहुत कुछ करना होगा सहन।
बनें सकारात्मक, छोड़ें ना जिजीविषा,
विकारों का होगा दमन।

कोरोना के योद्धा को, हमारा शत-शत नमन।
तुम शांति के दूत, तुमसे ही जग में है अमन।

*****

असहाय बड़ा सहमा –सहमा

असहाय बड़ा सहमा सहमा
कुछ कर न सके अबका मानव ।
अदृश्य बड़ा है पीछे पड़ा
है कालनेमि जैसा दानव ।।

है डरा हुआ सारा जग ये
कुछ कह न सके कुछ कर न सके।
डर के मारे जग दुबका है
अब कौन जगह सब जा के रहें ।।

बंद पड़े बाजार सड़क सब
बंद पडी़ दुकाने हैं ।
चौराहों पे मातम पसरा
और पुलिस भी लाठी ताने है ।।

बाहर निकलो तो दूरी हो
घर में भी ये मजबूरी है ।
दिन भर बस धोते रहो हाथ
ये धोना बहुत जरूरी है ।।

न छींक सकें न खांस सकें
सर्दी जुकाम की क्या बिसात।
तन का पारा जो चढा़ अगर
फिर छूटेगा अपनों का साथ।।

ये आपदा नहीं ये डाईन है
जो जद मे है क्वारंटाईन है।
चौदह दिन मे जो बच जाये
हल्के हल्के मुस्काईन है।।

हम वीर बली मानव थे जो
वो मंगल तक चढ़ बैठे थे।
चंदा तारों की बात करें क्या
सूरज नाप के ऐंठें थे।।

करतब पे करतब रोज नये
हर सुख सुविधा का साधन था।
अब बिल में हैं चूहों जैसे
बंग्लों मे जिनका आसन था।।

अनुसंधान किया इतना
ले प्रकृति को ठेंगे पे ।
सदकर्मों को ताक धरा
ऊँची उडान के पसंगे पे ।।

चीन गया,यूरोप गया
इटली में मातम पसरा है ।
अमरीका संग अफ्रीका
भारत पर भारी खतरा है ।।

लाशों पे लाशें रोज नई
प्रभु तेरी कैसी लीला है ।
कहीं कब्र खुदे अंतिम गति की
ठुकता ताबूत में कीला है ।।

कुछ भी अब काम नहीं आता
सेटेलाइट, बम्बर,परमाणु बम ।
एक मृत परजीवी का तोड़ नहीं
किस विज्ञान पे भरते दम ।।

हो चाहे कितने खरबपति
दौलतमंद बड़ा आका ।
डर सबमें एक बराबर है
जितना एक निर्धन का खाका ।।

हाँ खुश हैं पंक्षी खेत बाग-वन
सब हैं नये कलेवर में ।
विचरण करते मानव डग में
पशुता के अपने तेवर में ।।

चंद्रेश शुक्ला
मुख्य प्रबंधक
रेनुकूट शाखा
वाराणसी अंचल

बेकार पड़ी सब कारें हैं
ट्रेने हैं ,बस हैं, हैं जहाज ।
वातावरण उन्मुक्त हुआ
मिलती है ताजी हवा आज ।।

हे धरती के मानव सुन लो
कम कर लो अपने सुख साधन।
दोहन करना अब बंद करो
वर्ना मिट जायेगा जन- जन।।

ये तो एक कोरोना है
कितने ऐसे अभी बाकी हैं ।
कहीं मानवता न मिट जाये
ये तो पहली झांकी है ।।

अब ठान के बैठो तुम मन में
हो बंद विनाशक अनुसंधान ।
हो कृपा प्रकृति की धरती पर
हों धरती पर सब एक समान ।।

बैंकिंग इंडस्ट्री और वर्क फ्राम होम

नेनु काकानी
मुख्य प्रबंधक
पुरानी मण्डी शाखा
अजमेर अंचल

इन दिनों कोरोना संकट के कारण लॉकडाउन के चलते कई देशों में "वर्क फ्रॉम होम" और सोशल डिस्टेंसिंग की नीति को अपनाया जा रहा है। इस महामारी से बचने तथा इसको और अधिक फैलने से रोकने के लिये यह आवश्यक है कि कार्यस्थल पर भी सोशल डिस्टेंसिंग की नीति को अपनाया जाए, कम से कम लोगों को ड्यूटी पर बुलाया जाए और जो कार्य कर्मचारी ऑफिस और घर बैठे भी कर सकते हैं, उस कार्य को वह यदि घर से ही कर लें तो इसमें कोई बुराई भी नहीं है। इससे न केवल इस महामारी के अत्यधिक प्रसार को रोकने में मदद मिलेगी बल्कि अधिक भीड़ भाड़ और अनावश्यक ट्रैफिक पर भी नियंत्रण किया जा सकेगा। कई देश पर्यावरण संतुलन और कर्मचारियों की कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए पहले से ही इस नीति को अपना रहे हैं और वहां पर इसके सकारात्मक परिणाम भी मिले हैं लेकिन हाल ही में जब "वर्क फ्रॉम होम" नीति को भारतीय बैंकों में अपनाने की बात आई तो इस बात को लेकर एक नई बहस शुरु हो गई है कि भारत जैसे देश के बैंकों में इसे कैसे लागू किया जाए, आखिर ऐसे कौन से कार्य हैं जो एक बैंक कर्मचारी घर बैठकर भी कर सकता है। एक वर्ग का मानना है कि बैंकों में भी बहुत से ऐसे कार्य हैं जिन्हें घर बैठे किया जा सकता है उनमें से मार्केटिंग और टेलीबैंकिंग प्रमुख हैं। मेरा मानना है कि वर्तमान नियमों और सुविधाओं के तहत बैंकों में "वर्क फ्रॉम होम" के तहत निम्न कार्य किए जा सकते हैं :

- ✓ अपने विभिन्न ऋण, जमा, डिजिटल प्रोडक्ट्स की मार्केटिंग
- ✓ लोगों को डिजिटल प्रोडक्ट्स हेतु प्रेरित करना और सुरक्षित तौर तरीकों के प्रति जागरुक करना
- ✓ ऋण सुविधाओं का वार्षिक नवीनीकरण आदि
- ✓ दूरभाष द्वारा वसूली हेतु फॉलो-अप, रिमाइंडर
- ✓ विभिन्न रिपोर्ट्स एवं आंकड़े तैयार करना
- ✓ कर्मचारियों को ऑनलाइन प्रशिक्षण
- ✓ वार्षिक बजट, मूल्यांकन, कर्मचारियों के विभिन्न आवेदन और उनकी स्वीकृति आदि

इसके अतिरिक्त अपने कर्मचारियों को कुछ गैर जोखिम वाली तकनीकी/इंटरनेट एक्सेस देकर "वर्क फ्रॉम होम" का दायरा बढ़ाया जा सकता है जो कि अलग अलग बैंक अपने तरीके से ऐसा कर सकते हैं जैसे कि ऑनलाइन खाते खोलना, आंतरिक निरीक्षण रिपोर्ट्स का जवाब देकर उसे बंद करवाना, सिस्टम में डेटा सही करना, खाते खोलना, ग्राहकों के केवाईसी सत्यापन अपडेट करना, उनके चैक बुक या अन्य आवेदनों का निस्तारण आदि। किंतु इसके लिए बैंकों को अपने कुछ चुनिंदा और जिम्मेवार अधिकारी कर्मचारियों को लैपटॉप, अपने आंतरिक ऑपरेटिंग सिस्टम की कनेक्टिविटी (मौद्रिक ट्रांजेक्शन को छोड़कर) माइक्रो एटीएम मशीन जैसे यंत्र आदि उपलब्ध करवाने होंगे। शुरुआत में सीमित दायरे में इनका प्रयोग कर सफल होने पर इन सुविधाओं का दायरा बढ़ाया जा सकता है।

दूसरी और कुछ लोग बैंकिंग इंडस्ट्री विशेषकर भारत जैसे देश में जहां अधिकांश जनता गांवों में रहती है, अभी भी इंटरनेट बैंकिंग, टेली बैंकिंग, डिजिटल बैंकिंग आदि से दूर ही रहना चाहते हैं, वे इनके दुरुपयोग के प्रति आशंकित रहते हैं वहां पर फिलहाल तो "वर्क फ्रॉम होम" दूर की कौड़ी ही लग रहा है| हां, मगर अपने कर्मचारियों को कुछ तकनीकी सुविधाओं/सिस्टम की कनेक्टिविटी आदि दी जाती है, इन्हें इस हेतु पहले से ही प्रशिक्षित किया जाता है, ग्राहकों को जागरुक किया जाता है तो कुछ हद तक इस नीति को अपनाया जा सकता है।

मगर वर्तमान परिस्थितियों में और आने वाले समय में इस नीति की आवश्यकता और उपयोगिता से इंकार नहीं किया जा सकता, चूंकि अब ये लड़ाई लम्बी चलेगी और बैंकों को भी "वर्क फ्रॉम होम" नीति को अपनाना ही होगा और इस हेतु बैंकिंग कानून में भी आवश्यक संशोधन आदि कर इसका मार्ग भी प्रशस्त करना होगा। उम्मीद है कि धीरे-धीरे ग्राहक एवं कर्मचारी न केवल इसके महत्व को स्वीकार करेंगे अपितु इसे अपनाना भी चाहेंगे। वे ऐसी परिस्थितियों के आदि भी हो जाएंगे। यही समय की मांग भी है।

कहते हैं कि जब समुंदर में तूफान आने के संकेत हों या मौसम खराब हो तब मछुआरे और नाविक घर बैठकर अपनी नाव और जाल की मरम्मत और अनुरक्षण का कार्य करते हैं। मुझे लगता है कि "वर्क फ्रॉम होम" के साथ ही हमें इस समय का सदुपयोग अपनी हाउसकीपिंग और आंतरिक कार्यप्रणाली को सुधारने में भी करना चाहिए जिससे आने वाले समय की चुनौतियों का मुकाबला और अधिक मजबूत होकर किया जा सके।

डिजिटल बैंकिंग – एक परिदृश्य

आशीष कुमार वर्मा
मुख्य प्रबंधक
कांचरापाड़ा शाखा

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि भविष्य की दुनिया आभासीय होगी, जिसमे व्यवसाय न सिर्फ कागजरहित, नकदीरहित बल्कि मानव संपर्करहित होगा, और यह सब मुमकिन होगा ई-कॉमर्स के जरिये। जहां दुनिया भर के सारे व्यवसाय धीरे धीरे विकास की ओर बढ़ रहे हैं और डिजिटल प्लेटफ़ार्म की तरफ अग्रसर हो रहे हैं, अपना भारत देश भी डिजिटल क्रांति के रास्ते पर चल पड़ा है, तो भला बैंक कैसे पीछे रह सकते हैं। बदलते हुए समय के साथ चलते हुए बैंक भी अपने ग्राहकों को दी जाने वली सेवा को डिजिटल रुप में प्रदान करने के लिए प्रतिदिन प्रयासरत हैं। 1950-1990 के दशक में बैंकों ने जहां परम्परागत बैंकिंग सेवाएं प्रदान कीं वहीं वर्ष 1980 के दशक के आखिरी में बैंकों को जरूरत महसूस हुई कि परम्परागत बैंकिंग सेवाएं देने की जगह अब डिजिटल बैंकिंग सेवाएं देनी चाहिए। 1980 के आखिरी में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा सी. रंगराजन की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई जिसका काम भारतीय बैंकों में कंप्यूटरीकरण से हो सकने वाले सुधारों जैसे ग्राहक सेवा आदि के बारे में अपनी रिपोर्ट पेश करना था। उस वक़्त तक यह महसूस किया जाने लगा था कि अब अगर नए ग्राहक बैंक से जोड़ने हैं तो वो सभी नए ग्राहक नयी पीढ़ी के ही होंगे, जिनको हम जेनेरेशन Y (जो बच्चे वर्ष 1984 तक पैदा हुए) और जेनेरेशन Z (जो बच्चे वर्ष 2000 तक पैदा हुए) के नाम से जानते हैं। यह नई पीढ़ी न सिर्फ काम जल्दी चाहती है बल्कि वो हर काम को कहीं से भी सुगमता से करना चाहती है। यह नई पीढ़ी कंप्यूटर और मोबाइल चलाने में कुशल है एवं नई तकनीक को भी आसानी से समझ सकती है। यह नई पीढ़ी नई तकनीक पर भरोसा करती है और रिस्क लेने से डरती भी नहीं है।

अगर दुनिया भर में बैंकिंग कि बात करें तो स्टैन्फोर्ड फेडरल क्रेडिट यूनियन ने सबसे पहले अक्तूबर, 1994 में इंटरनेट बैंकिंग की शुरुआत की। भारत में सबसे पहले आइसीआइसीआइ बैंक ने वर्ष 1996 में इंटरनेट बैंकिंग सेवा की शुरुआत की जिसको इन्फ़िनिटि का नाम दिया गया। यहीं से भारत में डिजिटल बैंकिंग की शुरुआत हुई। वर्ष 1998 में श्री अटल बिहारी बाजपेयी जब पुन: प्रधानमंत्री बने तब उनकी शीर्ष 5 कार्यसूची में एक कार्य बैंकों का डिजिटलीकरण था। बस वहीं से भारत वर्ष में सही मायनों में डिजिटलीकरण की सही दिशा में शुरुआत हुई और देखते-देखते सभी बैंक पूरी तरह डिजिटल हो गए। वक्त के साथ जैसे-जैसे नई-नई तकनीक आती गई डिजिटल बैंकिंग की परिभाषा भी बदलती चली गई। बैंकों के डिजिटल होने की शुरुआत भले ही CBS (कोर बैंकिंग सोल्यूशंस) और ATM कार्ड, इंटरनेट बैंकिंग से हुई हो, परंतु अब यह मोबाइल बैंकिंग और पेमेंट ऐप तक पहुंच चुकी है। अब धीरे-धीरे पेमेंट बैंक भी खुलते जा रहे हैं। वोडाफोन पेमेंट बैंक, एयरटेल पेमेंट बैंक एवं पेटीएम पेमेंट बैंक इत्यादि पेमेंट बैंक इसके उदाहरण हैं, जहां बैंक की एक भी शाखा खोलने की जरूरत नहीं है।

भविष्य में तकनीक ही बैंकिंग के तौर-तरीकों को तय करेगी। इसमें विशाल डाटा, क्लाउड कंप्यूटिंग, स्मार्ट फोन व इसी प्रकार के अन्य आविष्कार शामिल हैं। बैंकों के साथ ग्राहकों का संपर्क व लेनदेन बहुमार्गी की बजाय सर्वमार्गी होगा। उदाहरण के लिए हर ग्राहक के मोबाइल फोन पर केवल उसके मतलब के ऑफर भेजे जाएंगे। व्यक्तिगत संपर्क के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग का सहारा लिया जाएगा। ग्राहकों की पहचान व धोखाधड़ी से बचने के लिए चेहरा पहचानने वाली फेस डिटेक्शन तकनीक का इस्तेमाल होगा। ग्राहकों की पसंद व पृष्ठभूमि समझने के लिए उनके सोशल नेटवर्क का सहारा लिया जाएगा। उसी के अनुसार उन्हें उत्पाद, सेवाएं, सुविधाएं व रियायतें ऑफर की जाएंगी। इस डिजिटल युग में जो बैंक तकनीक के उपयोग में जितना आगे होगा, उसका कारोबार भी उतनी ही तेजी से बढ़ेगा। डिजिटल बैंकिंग बेहद सुरक्षित है। आगे आने वाले समय में नई-नई तकनीक के विकास के साथ यह और भी सुरक्षित होती चली जाएगी। अभी जिस कार्यप्रणाली को बैंकों का भविष्य माना जा रहा है वो है ब्लॉकचेन।

ब्लॉकचेन एक तकनीक, एक प्लेटफॉर्म है जहां न सिर्फ डिजिटल मुद्रा बल्कि किसी भी चीज को डिजिटल बनाकर उसका रिकॉर्ड रखा जा सकता है। यानी ब्लॉकचेन एक डिजिटल खाता बही है। ब्लॉकचेन क्रिप्टोग्राफी तकनीक पर चलने वाली कार्यप्रणाली है। ब्लॉकचेन द्वारा होने वाले सभी लेनदेन बेहद सुरक्षित होते हैं। इस तकनीक में, ब्लॉकों की एक श्रृंखला होती है जो डेटा को रिकॉर्ड करती है और इन ब्लॉकों को एक नेटवर्क के भीतर हितधारकों के साथ गुमनाम तरीके से शेयर किया जाता है। सभी लेनदेन सम्बन्धी डेटा को नेटवर्क के प्रत्येक हितधारक के साथ सत्यापित किया जाता है जिससे साइबर संबंधी ख़तरों के कारण पैदा होने वाली भेद्यता की गुंजाइश ख़त्म हो जाती है। इसलिए ग्राहक की जानकारी चुराना लगभग असंभव हो जाता है। इस सिस्टम में होने वाला लेनदेन किसी बिचौलिए के हस्तक्षेप के बिना दो पक्षों के बीच होता है।

यह तकनीक, पक्षों के बीच सहभाजित बहीखाते के माध्यम से बैंकों की कार्यकुशलता में वृद्धि कर सकती है। इस सिस्टम के डिवाइस, सहकर्मी-दर-सहकर्मी ढंग से इंटरैक्ट कर सकते हैं जिसके लिए किसी तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप की जरूरत नहीं पड़ती है। यह मानव कारक को बैंकिंग सिस्टम की छानबीन से बाहर रखता है जिससे लेनदेनों पर नजर रखना आसान और तेज हो जाता है। इससे बैंकों के कई ऊपरी खर्च भी काफी हद तक कम हो जाएंगे जिससे पूरा का पूरा सिस्टम अधिक से अधिक कार्यकुशल बन जाएगा। बैंकों का मौजूदा केंद्रीकृत आई.टी. इंफ्रास्ट्रक्चर, ग्राहकों के डेटा की सुरक्षा के लिए खतरा पैदा करता है। फिशिंग, हैकिंग, स्पूफिंग ये सब बैंकों के सामने आने वाली कुछ साइबर सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ हैं। असल में, KYC दस्तावेजों को संग्रह करना, प्रमाणीकरण, इत्यादि जैसी अति संवेदनशील प्रक्रियाओं से निपटने में बैंकों और वित्तीय संस्थानों की मदद करने के लिए एक तीसरे पक्ष का सेवा प्रदाता शामिल होता है। बैंकिंग सेक्टर में ब्लॉकचेन की टेक्नोलॉजी बड़ा बदलाव कर सकती है। ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करने से, पासवर्ड का इस्तेमाल करके लेनदेनों के प्रमाणीकरण की जरूरत ख़त्म हो जाएगी। नेटवर्क का विकेंद्रीकरण करने से, ब्लॉकचेन-आधारित SSL (Secure Sockets Layer) प्रमाणपत्रों के माध्यम से पक्षों की आम सहमति प्राप्त करने में मदद मिलेगी। सभी डेटा को पूरे नेटवर्क में रिकॉर्ड किया जाएगा और एक नेटवर्क के पिछले ब्लॉक को ओवरराइट नहीं किया जा सकता। इसलिए सुरक्षा का उल्लंघन करने के लिए और एक अकेले लेनदेन का डेटा चुराने के लिए, ब्लॉक के पूरे क्रम को फिर से सेट करना पड़ेगा जिससे किसी के लिए इसका उल्लंघन करना लगभग असंभव हो जाएगा।

बैंकिंग से जुड़े जानकारों का मानना है कि अगर नीरव मोदी के वित्तीय लेनदेनों मे ब्लॉकचेन-आधारित कार्यप्रणाली का इस्तेमाल किया जाता तो इतने बड़े गबन को रोका जा सकता था, जिसने भारत वर्ष के पूरे बैंकिंग सिस्टम को हिला के रख दिया। ब्लॉकचेन-आधारित कार्यप्रणाली मे सभी पक्षों के बहीखाते एक साथ अपडेट होते, जिससे बाद मे किसी भी प्रकार के गबन की कोई गुंजाइश ही नहीं होती, तथा बैंक को भी तुरंत पता चल जाता कि उसके यहाँ से कोई गारंटी दी गई है, परंतु बैंक को सालों तक पता ही नहीं चला कि नीरव मोदी की तरफ से कोई गबन हुआ है। यह गबन इसलिए संभव हो सका क्योंकि बैंक का सीबीएस सिस्टम एवं स्विफ्ट सिस्टम दोनों एक दूसरे से जुड़े नहीं थे, अगर ब्लॉकचेन-आधारित कार्य प्रणाली से दोनों जुड़े होते तो यह सब होना संभव नहीं होता।

सरकार के पास कई सारे रिकॉर्ड हैं जो फाइलों में बंद पड़े हैं। अक्सर इनके खोने या किसी कारण नष्ट होने के चलते सरकार के लिए इनकी सुरक्षा निश्चित करना मुश्किल हो जाता है। लिहाजा ब्लॉकचेन इसके लिए एक बड़ा समाधान बन सकती है। सरकार डाटा को डिजिटल खाताबही पर अपलोड कर सकती है। ब्लॉकचेन तकनीक का इस्तेमाल करके भूमि क्रय-विक्रय को सरल बनाया जा सकता है। इसके दौरान होने वाले दस्तावेज़ के काम को सुरक्षित और आसान बनाने के लिए ब्लॉकचेन एक बड़ा मददगार साबित हो सकता है। तेलंगाना और आंध्र प्रदेश लैंड डील के लिए इसका इस्तेमाल कर रही हैं।

यह तकनीक, पैसों से जुड़े लेनदेन के अलावा कई अन्य जगहों पर इस्तेमाल हो सकती है। बीमा, निवेश, इत्यादि जैसे अन्य डिजिटल उत्पादों से निपटने के लिए इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। इससे सिर्फ डेटा की सुरक्षा

बढ़ाने में ही मदद नहीं मिलेगी बल्कि यह लागत भी कम कर सकता है और प्रोसेसिंग समय भी बचा सकता है। दुनिया के कई जाने माने संस्थानों एवं बैंकों ने पहले ही प्रयोगात्मक स्तर पर ब्लॉकचेन का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया है। उदाहरण के लिए ऑस्ट्रेलिया स्टॉक एक्सचेंज, अपने ग्राहकों के सेवा शुल्क को कम करने के लिए अपने रजिस्ट्री, समझौता एवं समाशोधन सिस्टम में जल्दी ही ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करने जा रहा है।

डिजिटल बैंकिंग का मतलब है तकनीक की मदद से बैंक को ग्राहकों तक पहुंचाना। खाता खुलवाने से लेकर लेनदेन तक करने में तकनीक का इस्तेमाल डिजिटल बैंकिंग कहलाता है। डिजिटल बैंकिंग ना सिर्फ कागजरहित, नकदीरहित, चेकरहित बल्कि मानवीय संपर्करहित भी होती है। किसी भी प्रकार की सेवा एवं जानकारी पाने के लिए भी अब बैंक जाने की जरूरत नहीं है। डिजिटल बैंकिंग के लिए आप के पास बस इंटरनेट डाटा की सुविधा एवं मोबाइल फोन अथवा कंप्यूटर होना चाहिए। इस में इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, एटीएम आदि शामिल है।

यह देखते हुए कि हमारी जनसंख्या का कुछ प्रतिशत हिस्सा ही कर का भुगतान करता है, इसलिए यदि बैंकिंग और कर प्रणाली अधिक-से-अधिक डिजिटल भुगतान के माध्यम से भुगतान करती हैं तो इससे देश की अर्थव्यवस्था में बेहतरी आयेगी। इसके अलावा सार्वजनिक जीवन और शासन में भ्रष्टाचार का एक प्रमुख कारण नकदी में लेन-देन होना भी है। इसलिए एक लेस-कैश समाज की तरफ बढ़ते हुए इससे भ्रष्टाचार को दूर करने में मदद मिलेगी और नकदी के प्रयोग पर रोक लगेगी। इसके अलावा नकदी का मुद्रण और इसका वितरण भी बेहद खर्चीला है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि आने वाला वक्त मोबाइल बैंकिंग और मोबाइल भुगतान या व्यापार का है। भारत में मोबाइल ग्राहकों की बहुत बड़ी संख्या होने से वित्तीय सेवाओं के वितरण में इस तकनीक का बड़े पैमाने पर उपयोग होने की अपार संभावनाएं हैं। अब दूर इलाकों में जहां बैंकिंग सुविधा उपलब्ध नहीं है, उनको घंटों का सफर करके पहले बैंक आना होता था एवं लेनदेन करने के लिए बहुत समय तक अपनी बारी की प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। परंतु अब उसको बैंक आने कि कोई जरूरत नहीं है। अब *99# के जरिए आम आदमी भी डिजिटल बैंकिंग कर सकता है। *99# के जरिए सस्ते मोबाइल से भी बैंकिंग संभव है। डिजिटल बैंकिंग के जरिए अब 24/7 बैंकिंग ट्रांजैक्शन मुमकिन है। ट्रांजैक्शन के लिए घंटों लाइन में खड़ा रहना जरूरी नहीं है।

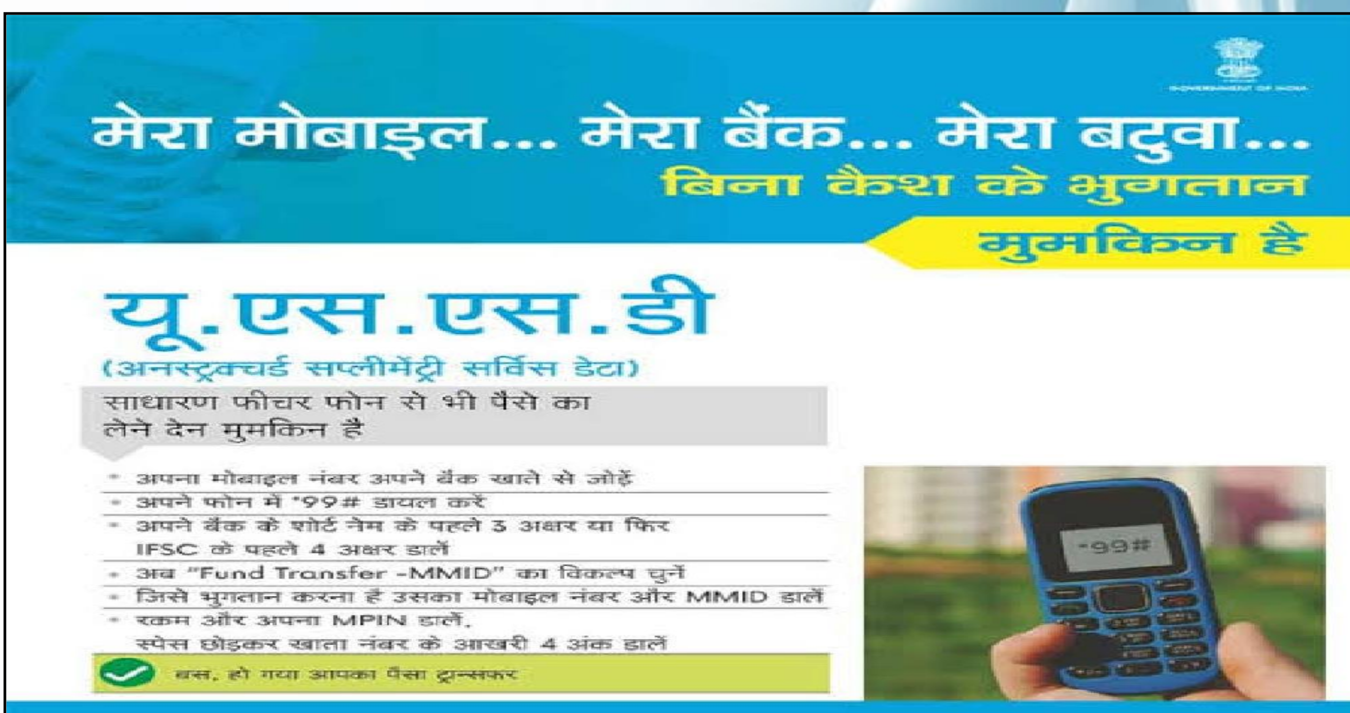

अनुशासन एवं ईमानदारी

प्रदीप आनंद केशरी
सहायक महाप्रबंधक
कार्मिक सेवा विभाग
प्रधान कार्यालय

अनुशासन हमारे जीवन का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसके बिना हमारा जीवन सुचारु रूप से नहीं चल सकता, खासतौर से आज के आधुनिक समय में अनुशासन बहुत ही आवश्यक है। अनुशासन किसी भी कार्य को ठीक ढंग से करने का एक तरीका है। इसके लिए आपके शरीर और दिमाग पर एक नियंत्रण की जरूरत होती है। कुछ लोगों के पास स्व-अनुशासन प्राकृतिक संपत्ति के रूप में होता है जबकि कुछ को इसे अपने अंदर विकसित करना पड़ता है। अनुशासन में वो दक्षता है जो भावनाओं को नियंत्रित कर सकता है और मुश्किलों से पार पाने के साथ ही सही समय पर सही कार्य करने में मदद करता है। हम यह कह सकते हैं कि अनुशासन के बिना जीवन अधूरा और असफल है। अनुशासन हमारी सफलता की सीढ़ी होती है जिसके सहारे हम कोई भी मंजिल हासिल कर सकते हैं।

अनुशासन दो शब्दों से मिलकर बना है अनु और शासन। अनु का अर्थ है पालन और शासन का मतलब नियम। हमारे जीवन में अनुशासन का बहुत महत्व है - यह हमें नियमों का पालन करना सिखाता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जो कि समाज में रहता है और उसमें रहने के लिए अनुशासन की आवश्यकता होती है।

“ईमानदारी सर्वश्रेष्ठ नीति है” बेंजामिन फ्रेंकलिन द्वारा कही गई एक प्रसिद्ध कहावत है। ईमानदारी जीवन में सफलता प्राप्त करने का सबसे अच्छा उपकरण है और एक प्रसिद्ध व्यक्ति ने इसे किसी भी समाज की रीढ़ की हड्डी कहा है, जो एक सभ्य समाज का निर्माण करने में सक्षम होती है। जीवन में ईमानदार न होना, किसी के भी साथ वास्तविक और भरोसेमंद मित्रता या प्यार का रिश्ता बनाने में कई तरह की मुश्किलें पैदा करता है।

अनुशासन दो तरह का होता है पहला बाहरी अनुशासन जो व्यक्ति के ऊपर जबरदस्ती थोपा जाता है तथा भय, शक्ति और सजा पर आधारित होता है और दूसरा आंतरिक अनुशासन जो कि व्यक्ति के अंदर से जागृत होता है और उसे वह स्वत: पालन करता है।

ईमानदारी और अनुशासन एक दूसरे के पूरक हैं। आंतरिक अनुशासन का पालन हो रहा है कि नहीं यह आपके अलावा कोई नहीं बता सकता और आप सत्य बोल रहे हैं कि नहीं यह ईमानदारी पर निर्भर करता है। ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है। इसलिए व्यक्ति को गंभीर से गंभीर एवं विकट परिस्थिति में भी ईमानदारी नहीं छोड़नी चाहिए, क्योंकि जो व्यक्ति विकट और गंभीर परिस्थिति से बच निकलने के लिए सच्चाई के मार्ग से विचलित हो जाते हैं अथवा झूठ का सहारा लेते हैं ऐसे व्यक्तियों को काफी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। एक बार झूठ बोलकर बचा जा सकता है, परन्तु एक बार झूठ बोलने से ऐसी परिस्थितियां बन जाती हैं, जिसमें व्यक्ति फंसता चला जाता है और अपने लिए एक नई मुसीबत खड़ी कर लेता है।

अनुशासित रहने के तरीके :

हम अपने जीवन में अनुशासन को अपनाने के लिए निम्नलिखित तरीकों का पालन कर सकते हैं:

1. एक संतुलित और नियमित दिनचर्या का पालन करना।
2. कार्यों को समय पर पूरा करने का हरसंभव प्रयास करना।
3. अपने कार्यों के प्रति पूरी लगन रखना।
4. व्यर्थ के कार्यों से दूर रहना।
5. बुरी आदतों और कार्यों से दूरी बनाना।

अनुशासन का लाभ और इसकी आवश्यकता:
जब हम अनुशासन की बात करते हैं तो इसे केवल समय पर उठना, समय पर सोना, समय पर खानपान अथवा खानपान पर नियंत्रण, व्यायाम करना इत्यादि बातों से ही जोड़ा जाता है, हालाँकि यह सभी बातें महत्वपूर्ण भी हैं परंतु इन सभी बातों का संबंध केवल स्वयं से है।

लेकिन हमें अपने से जुड़ी उन बातों में भी अनुशासन रखने की आवश्यकता है जिनका असर दूसरों के जीवन पर भी पड़ता है जैसे कि वाहन चलाते समय ट्रैफिक नियमों का पालन करना, सरकार को दिए जाने वाले विभिन्न प्रकार के

करों को समय से चुकाना और सबसे महत्वपूर्ण अपने कार्य क्षेत्र अथवा कार्यालय में किए जाने वाले कार्य को उसी समर्पण के साथ करना जितना कि उसकी आवश्यकता है। यदि किसी कार्य को ईमानदारी एवं समय से पूरा करना है तो आपको उसे अनुशासन से ही करना पड़ेगा और कार्य उसी तरीके से पूर्ण करना है जिस प्रकार आपको निर्देश दिए गए हैं यह भी सुनिश्चित करना अनुशासन का ही एक अंग है।

आज हमारे बैंक की जो स्थिति है, ऐसे में हमें अनुशासन से काम करने वाले कर्मचारियों की बहुत आवश्यकता है, जो सभी नियमों का पालन करते हुए तथा कम समय में ज्यादा आउटपुट भी दे। यह तभी संभव है जब हम अनुशासन के साथ ईमानदारी से दिए गए कार्यों एवं निर्देशों का अनुपालन करें। हमारा यह व्यवहार हमारे साथी कर्मचारियों को भी प्रेरित करेगा और एक ऐसी कार्य-संस्कृति का निर्माण होगा जहां व्यक्ति एक दूसरे को उदाहरण की तरह प्रस्तुत करेगा। बस हमें यह ध्यान रखने की जरूरत है 'पहले आप पहले आप में गाड़ी न छूट जाए' और हम प्रतिस्पर्धा के इस युग में काफी पीछे ना रह जाएं। इसलिए, इस बात का अनुसरण करते हुए कि 'बूंद बूंद से ही सागर बनता है' हम अपने कर्तव्य का निर्वाह करें बाकी हम अपने कार्य द्वारा हुए प्रभाव पर छोड़ दें और आज हम यह प्रण लें कि हम अपने बैंक में एक ऐसा माहौल बनाएंगे जिससे यह अनुशासन के क्षेत्र में नंबर वन बैंक के रूप में जाना जाए।

हम कह सकते हैं कि अनुशासन जीवन में सफलता की कुंजी है और जो व्यक्ति इसे अपने जीवन में अपनाता है, वह अपने जीवन में सफलता अवश्य प्राप्त करता है। यही कारण है कि आज के इस आधुनिक युग में भी अनुशासन को इतना महत्व दिया जाता है।

"व्यक्ति खुद ही अपना सबसे बड़ा रक्षक हो सकता है और दूसरा कौन उसकी रक्षा कर सकता है?" अगर आप स्वयं ही अनुशासित हैं और खुद पर पूरा नियंत्रण है तो आपको वह क्षमता हासिल होगी जिसे बहुत कम लोग हासिल कर पाते हैं।"- महात्मा गौतम बुद्ध

बैंकिंग एवं आर्थिक परिक्रमा

भारतीय रिजर्व बैंक ने दी सभी आवर्ती बिलों के बीबीपीएस के जरिए भुगतान की अनुमति

एक उपभोक्तानुकूल पहलकदमी में भारतीय रिजर्व बैंक ने विद्यालयीन शुल्कों, बीमा प्रीमियम और नगरपालिका करों सहित सभी पुनरावृत्ति बिल भुगतानों को शामिल करने हेतु भारत बिल भुगतान प्रणाली (बीबीपीएस) के कार्य-क्षेत्र को विस्तारित कर दिया है। वर्तमान में, यह सुविधा केवल पाँच खंडों, यथा – सीधे घर को (डीटीएच), बिजली, गैस, दूरसंचार और जल में ही उपलब्ध है। हालांकि, पूर्व-प्रदत्त प्रभारों को इस पहलकदमी के विषय-क्षेत्र से बाहर रखा गया है।

सेबी ने जारी की वाणिज्यिक पत्रों के सूचीकरण हेतु रूपरेखा

वाणिज्यिक पत्रों जैसी प्रतिभूतियों में निवेशक सहभागिता को व्यापक बनाने के उद्देश्य से भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने इन प्रतिभूतियों के शेयर बाज़ारों में सूचीकरण हेतु एक रूपरेखा जारी की है। वाणिज्यिक पत्रों के सूचीकरण को समर्थ बनाने तथा निवेशक संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड को यह महत्वपूर्ण लगता है कि इस प्रकार की प्रतिभूतियाँ जारी करने के इच्छुक किसी जारीकर्ता को सूचीकरण के समय और निरंतर आधार पर उपयुक्त प्रकटन करना चाहिए।

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा यूपीआई के माध्यम से आवर्ती भुगतान की अनुमति

भारतीय रिजर्व बैंक ने आवर्ती भुगतान वाले उत्पाद यथा व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी) और बीमा खरीदने के लिए ग्राहकों को मदद करने हेतु यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई) प्रणाली के माध्यम से आवर्ती लेनदेन के लिए ई-मैंडेट के प्रसंस्करण की अनुमति देना शुरू कर दिया है। इस व्यवस्था के तहत लेनदेन की सीमा रु. 2000/- तय की गई है।

साभार- आईआईबीएफ विजन

साइबर अपराध : रोकने के उपाय

डॉ. सुनील कुमार,
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय,पटना

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बैंकिंग क्षेत्र में लेनदेन संबंधी कपट की घटनाएँ आम सी हो गई हैं। जितनी ज्यादा सुविधाएं मिलती हैं, उसी रफ्तार से बैंकिंग में कपट की घटनाएँ भी घटित हो रही हैं। इससे सिर्फ आम ग्राहक ही नहीं बल्कि बैंकर्स एवं ग्राहक भी साइबर अपराध जैसी घटना के शिकार हो रहे हैं। ग्राहकों की शिकायतें सुनते-सुनते हमें कभी-कभी ऐसे भी कॉल्स आते हैं;

"हलऊ सर! हमार खतवा से पचास हजार रुपइयवा कट गया है सर! पईसवा कटने का मेंरे मोबइलवा पर मैसेज आया है! एटीएम कार्डवा तअ हमरे लगे ही है सर! हम तअ डेढ़-दू-महीना भर से एटीएम मशीनवा के पास गइबे नहीं किए हैं! लेकिन हमर खतवा से पईसवा कईसे कट गया सर! बैंकवा में पईसवा रखले-रखले उड़ जाता है काअ? हमरा पईसवा लौटा दीजिए सर, नहीं तअ हम पुलिस टिशनी में आपका कांपलेंट (शिकायत) करेंगे! हमनी सबन बड़ी मेहनत से पईसवा जोड़-जोड़ के जमा करअ हिला सर! दू महीना बाद हमर बेटिया के शादी है सर । हमर बेटवा दिल्ली में पढ़ता है। ओकरा ला भी पईसवा भेजना है। हमर ई पईसवा कब तलक आ जाई सर? हलऊ सर! हम काअ करें सर? हमरा मदद कीजिए सर! नहीं तअ हम कहीं के नहीं रहेंगे सर।

यह व्यथा एक बैंक खाताधारक (ग्राहक) की है जो मगही और हिंदी (भाषा) मिलाकर बोल रहा है और बैंक में अपनी शिकायत बयान कर रहा है कि उसके खाते से पचास हजार रुपए (रु. 50,000/-) कट गए हैं जबकि उसके संबंधित खाते का एटीएम उसके पास है। यह शिकायत आज आम शिकायत सी हो गई है। एटीएम कार्ड की क्लोनिंग कर कपटकर्ता आसानी से बैंक खाताधारकों के पैसे को निकाल लेते हैं और इसका पता तब चलता है जब खाताधारक के मोबाइल पर इसका संदेश जाता है।

आजकल ऐसे ही लॉटरी के नाम पर ठगी का धंधा काफी तेजी से चल रहा है। केबीसी के स्टाइल में मोबाइल पर एक आसान सा प्रश्न (संकेत/ clue के साथ) चार विकल्प (ऑप्शन) के साथ भेज दिया जाता है और ग्राहक उसका जवाब आसानी से दे देता है। तुरंत ही एक मैसेज आता है।

बधाई हो! (Congratulations!) आप काफी भाग्यशाली हैं। पूरे भारत में यह प्रश्न भेजा गया था, जिसमें करोड़ों लोगों ने भाग लिया परंतु इसका सही जवाब सिर्फ आपने दिया है। आप सात लाख रुपए (रु. 7.00 लाख) का इनाम जीत गए हैं। आपके इनाम की राशि आपके खाते में भेज दी जाएगी। तुरंत ही एक कॉल आता है बधाई हो सर/मैडम ! आप हमारे इस प्रश्न के विजेता हैं। कृपया आप अपने खाते का विवरण हमें भेज दें ताकि हम पुरस्कार की राशि को आपके खाते में जमा कर सकें। आप चाहे तो अपने खाते का विवरण हमें अपने मोबाइल से भी बता सकते हैं ताकि हम संबंधित राशि को तुरंत ही आपके खाते में जमा कर सकें।

कॉल सेंटर पर बैठा कपटकर्ता फोन करता है कि सर मैं आपके बैंक से बोल रहा हूँ। आपके एटीएम कार्ड का अंतिम चार अंक (.........4002) है। कृपया अपने एटीएम कार्ड का पूरा नंबर, एक्सपायरी डेट और सीवीवी नंबर बताएं। ग्राहक बता देता है। फिर कपटकर्ता कहता है कि आपके मोबाइल पर एक ओटीपी नंबर आया होगा कृपया उसे बताएं। फिर ग्राहक को याद आता है कि सीवीवी नंबर, पासवर्ड, पिन नंबर, ओटीपी आदि किसी को भी नहीं बताना चाहिए। ग्राहक कपटकर्ता से कहता है कि ये सब तो किसी को नहीं बताना चाहिए। फिर कपटकर्ता चालाकी से कहता है कोई बात नहीं, आप नहीं बताइये फिर आप के इनाम के सात लाख रुपए (रु. 7.00 लाख) आने में एक से दो महीने लग जाएंगे। अगर आप अभी ओटीपी नंबर बता दें तो आपके इनाम का पैसा अभी आ जाएगा। ग्राहक कपट कर्ता के चंगुल में आ जाता है और ओटीपी बता देता है। फिर कुछ ही मिनटों में ग्राहक के खाते से नब्बे हजार रुपए साँय-साँय (तुरंत-तुरंत) निकलने के मैसेज आने लगते हैं और ग्राहक ठगी का शिकार बन जाता है।

आजकल इंटरनेट के माध्यम से हम सारी दुनिया के साथ जुड़ गए हैं। आज अधिकांश लोग इंटरनेट पर आश्रित हैं। दुनिया की अधिकांश चीजों को इंटरनेट ने एक प्लेटफॉर्म पर ला दिया है। मानो सारी दुनिया मुट्ठी में समाहित हो गई

हो! आज हमारी दिनचर्या की अधिकांश जरूरत की चीजों को इंटरनेट ने सुलभ व सुगम बना दिया है। सामाजिक नेटवर्किंग, ऑनलाइन ख़रीदारी, जानकारी का आदान-प्रदान, गेमिंग, ऑनलाइन पढ़ाई, ऑनलाइन नौकरियां आदि जिसके बारे में मनुष्य कल्पना कर सकता है, वे सारी चीजें बस इंटरनेट के एक क्लिक से उपलब्ध हो जाती हैं। परंतु जो चीजें हमें आसानी से मिल जाती हैं उसके साथ हमें काफी सावधानी के साथ संभलकर भी चलना चाहिए।

वर्तमान में, इंटरनेट का उपयोग अधिकांश क्षेत्रों में किया जा रहा है। इंटरनेट के बढ़ते फायदों के साथ साइबर अपराध जैसे भयावह मुद्दे भी उभर कर आए हैं। साइबर अपराध अलग-अलग तरीकों से घटित होते हैं। कुछ वर्षों पहले तक इन सारी चीजों के बारे में इतनी जागरूकता नहीं थी। अन्य देशों के साथ-साथ भारत में भी साइबर अपराध की घटनाएं दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं।

क्या है साइबर अपराध ?

साइबर अपराध में आधुनिक दूरसंचार नेटवर्क (इंटरनेट, मोबाइल फोन) का अवैध रूप से उपयोग किया जाना ताकि व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह के खिलाफ अपराध किया जा सके, उनको प्रताड़ित किया जा सके, जानबूझकर उनको शारीरिक या मानसिक नुकसान एवं उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाया जा सके। साइबर अपराध द्वारा किसी व्यक्ति या राष्ट्र की सुरक्षा एवं वित्तीय स्वास्थ्य को खतरा हो सकता है। साइबर अपराध एक अवैध कार्य है जहां कंप्यूटर को साधन या लक्ष्य या दोनों ही तरीके से इस्तेमाल किया जाता है।

आज दुनिया भर में लोग ऑनलाइन इंटरनेट के माध्यम से घर बैठे लोगों की निजी जानकारियों की चोरी कर रहे हैं जिसे साइबर अपराध कहते हैं। आज के अत्याधुनिक तकनीकी युग में लोग अपना जीवन सरल बनाने के लिए कई उपकरणों का प्रयोग करते हैं। वैश्वीकरण के माध्यम से दुनिया भर के लोग एक दूसरे से आसानी से जुड़ पाने में सक्षम हुए हैं। तकनीक का आसानी से उपलब्ध होना एवं इसका लगातार प्रयोग, लोगों के संवाद के तरीकों एवं जीवन के संचालन पर गहरा प्रभाव डालता है।

साइबर अपराध को दो तरह से वर्गीकृत किया गया है : -

1. पहला, ऐसे अपराध जिनमें कंप्यूटर को लक्ष्य के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।
2. दूसरा, ऐसे अपराध जिनमें कंप्यूटर को हथियार की तरह इस्तेमाल किया जाता है।

अनधिकृत उपयोग एवं हैकिंग

अनधिकृत उपयोग एक ऐसा अपराध है जिसमें कंप्यूटर के मालिक की अनुमति के बिना कंप्यूटर का किसी भी प्रकार से अवैध उपयोग किया जाता है। हैकिंग एक ऐसा अपराध है जिसमें कंप्यूटर प्रणाली में अवैध घुसपैठ करके उसको नुकसान पहुंचाया जाता है।

वेब हाईजैकिंग

यह एक ऐसा अपराध है जिसमें किसी व्यक्ति की वेबसाइट पर अवैध रूप से सशक्त नियंत्रण कर लिया जाता है। इस प्रकार वेबसाइट का मालिक उस वेबसाइट पर नियंत्रण एवं जरूरी जानकारी खो देता है।

साइबर स्टॉकिंग

यह एक ऐसा अपराध है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को बार-बार उत्पीड़न का शिकार बनाया जाता है; पीड़ित का पीछा करके, तंग करके, कॉल द्वारा परेशान करके, संपत्ति के साथ छेड़छाड़ करके। स्टॉकिंग के उपरांत पीड़ित को मानसिक एवं शारीरिक रूप से हानि पहुंचाना मकसद होता है। स्टौकर (अपराधी) पीड़ित की सारी जानकारी अवैध रूप से इकट्ठा करके एवं इंटरनेट पर उनकी गलत छवि दिखाकर हानि पहुंचाने का लक्ष्य रखते हैं, ताकि भविष्य में भयादोहन करके उनका अनुचित लाभ उठा सकें।

सॉफ्टवेयर पायरेसी

यह एक ऐसा अपराध है जिसमें वास्तविक प्रोग्राम की अवैध प्रतिलिपि बनाकर जालसाजी द्वारा वितरित किया जाता है। इसमें और भी अपराध शामिल हैं जैसे स्वत्वाधिकार उल्लंघन, ट्रेडमार्क उल्लंघन, कंप्यूटर सोर्स कोड की चोरी आदि शामिल है।

सलामी अटैक/हमला

यह एक तरीके का वित्तीय अपराध है। ठगी इतनी छोटी

होती है कि पकड़ पाना बहुत मुश्किल होता है। उदाहरण के लिए अगर कोई बैंक कर्मचारी इस प्रकार की धोखाधड़ी करे तौर पर यदि खाताधारक के बैंक खाते से हर माह ₹ 5 काटे, तो कोई भी इतनी थोड़ी धनराशि के कटने को पकड़ नहीं पाएगा, पर अपराधी के पास महीने के अंत में काफी अच्छी मात्रा में धन राशि इकट्ठी हो जाएगी।

सर्विस अटैक

यह एक ऐसा अपराध है, ऐसा हमला है जिसमें पीड़ित के नेटवर्क या विद्युत संदेश पात्र को बेकार यातायात एवं संदेशों से भर दिया जाता है। यह सब इसलिए किया जाता है ताकि पीड़ित को जानबूझकर तंग किया जा सके या पीड़ित अपना ईमेल इस्तेमाल ना कर पाए।

वायरस अटैक

वायरस ऐसे प्रोग्राम को कहा जाता है जो कंप्यूटर के अन्य प्रोग्राम को संक्रमित करने की क्षमता रखते हैं अथवा अपनी प्रतियां बना कर दूसरे प्रोग्राम में फैल जाते हैं। यह दुर्भावनापूर्ण सॉफ़्टवेयर होते हैं जो अपने आप को किसी दूसरे सॉफ्टवेयर से जोड़ लेते हैं अथवा कंप्यूटर को हानि पहुंचाते हैं। ट्रोजन हॉर्स, टाइम बम, लॉजिक बम, रैबिट आदि, यह सभी दुर्भावनापूर्ण सॉफ़्टवेयर है। वायरस कंप्यूटर पर कुछ इस तरीके से प्रभाव डालते हैं कि, या तो कंप्यूटर में मौजूद जानकारी को बदल देते हैं या नष्ट कर देते हैं ताकि वह इस्तेमाल करने लायक ना रह पाए।

फिशिंग

यह एक ऐसा अपराध है जिसमें पीड़ित को ईमेल भेजा जाता है, जो कि यह दावा करता है कि वह एक स्थापित उद्यम/ कंपनी द्वारा भेजा गया है ताकि पीड़ित से गोपनीय निजी जानकारी निकलवा सके अथवा पीड़ित के खिलाफ, उनको हानि पहुंचाने के लिए इस्तेमाल किया जा सके।

क्या होती है फेक (जाली/नकली) साइट ?

फेक (जाली/नकली) साइट के नाम से ही प्रतीत हो जाता है कि यह एक झूठी वेबसाइट है, जो हू-ब-हू आपके बैंक के वेबसाइट, खरीदारी करने वाली साइट या पेमेंट गेटवे के जैसा इंटरफेस होता है। ऑनलाइन खरीदारी या कोई भी ऑनलाइन लेन-देन करने के लिए जैसे ही आप यहां अपने क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, इंटरनेट बैंकिंग का यूजर नेम, लॉगिन पासवर्ड ट्रांजेक्शन पासवर्ड या ओ.टी.पी. इंटर करते हैं, तो वो इस डिटेल्स को कॉपी कर लेता है और बाद में इसका प्रयोग कोई भी गलत तरीके से गलत कार्यों के लिए कर सकता है, जिसको आप और हम समझ नहीं पाते हैं कि यह गलत लेनदेन कैसे हो गया? फेक (जाली/नकली) वेबसाइट का संचालन एक संगठित ग्रुप के अपराधी (क्रिमिनल्स) द्वारा किया जाता है।

आज पूरी दुनिया इंटरनेट और कम्प्यूटर के माध्यम से एक दूसरे से जुड़ी हुई है, जिसके बहुत सारे लाभ हैं और उसके साथ ही बहुत सारे खतरे भी हैं। जैसे इंटरनेट के माध्यम से चोरी, फ्रॉड और वायरस इत्यादि, नीचे दिए गए कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं को ध्यान में रख कर काम किया जाए, तो साइबर क्राइम के शिकार होने का खतरा कम हो जाता है।

क्या न करें:-

❖ अपने इंटरनेट की बैंकिंग और बैंकिंग लेन-देन का इस्तेमाल कभी भी सार्वजनिक स्थान जैसे कि साइबर कैफे, ऑफिस, पार्क, सार्वजनिक मीटिंग और किसी भीड़-भाड़ वाले स्थान पर न करें। किसी भी प्रकार के बैंकिंग लेन-देन के लिए आप अपने पर्सनल कम्प्यूटर या लैपटॉप का ही इस्तेमाल करें। जब कभी भी आप अपने इंटरनेट बैंकिंग या किसी भी जरुरी अकाउंट में लॉगिन करें, तो काम खत्म कर अपने अकाउंट को लॉगआउट करना न भूलें और जब आप लॉगिन कर रहें, हो तब इस बात पर जरूर धयान दें कि पासवर्ड टाइप करने के बाद कम्प्यूटर द्वारा पूछे जा रहे ऑप्शन रिमेम्बर पासवर्ड या कीप लॉगिन में क्लिक न करें। कभी भी आप अपने बैंकिंग यूजर नेम, लॉगिन पासवर्ड, ट्रांजेक्शन पासवर्ड, ओटीपी गोपनीय प्रश्नों या गोपनीय उत्तर को अपने मोबाइल, नोटबुक, डायरी, लैपटॉप या किसी कागज पर न लिखें, हमेशा आप ऐसा पासवर्ड सेट करें, जोकि आपको आसानी से याद रहे और आपको इसे कहीं लिखने की आवश्यकता न पड़े। लोगों को धोखा देने के लिए और अपने चंगुल में फँसाने के लिए अधिकतर स्कैमर्स (घोटालेबाज) फेक (जाली/नकली) साइट को प्रयोग में ला रहे हैं, जिससे कि लोगों को पता भी न चले और उनका काम भी आसानी से हो जाए।

❖ आप अपने कम्प्यूटर में अगर इंटरनेट का प्रयोग करते हैं, तो सबसे पहले आप अपने पर्सनल कम्प्यूटर को पासवर्ड से सुरक्षित कीजिए, जिससे कोई दूसरा व्यक्ति बिना आपकी जानकारी के आपका कम्प्यूटर प्रयोग न कर सके। अगर आपका कम्प्यूटर सुरक्षित नहीं होगा, तो अपराधी (क्रिमिनल) या कोई व्यक्ति आपके कम्प्यूटर से जरूरी जानकारियाँ चुरा सकता है और गलत कार्यों के लिए आपके कम्प्यूटर का इस्तेमाल भी कर सकता है। इसके साथ आप यह भी चेक करें कि आपके कम्प्यूटर में लेटेस्ट सिक्योरिटी अपडेट इन्स्टाल है या नहीं। साथ ही यह भी चेक करें कि आपका एंटी वायरस और एंटी स्पाई वेयर सॉफ्टवेयर ठीक से काम कर रहा है या नहीं और उसके वेंडर से जरूरी अपडेट्स आ रहा है या नहीं।

❖ हमेशा बहुत स्ट्रांग पासवर्ड का प्रयोग करें, जिससे आसानी से किसी को पता न चले, क्योंकि साइबर क्रिमिनल प्रोग्रामर ऐसे सॉफ्टवेयर प्रोग्राम का निर्माण करते हैं जो कि आपके साधारण से पासवर्ड को आसानी से गेस कर सकता है। ऐसे में अपने आप को बचाने के लिए आप ऐसा पासवर्ड सेट करें, जिसका कोई दूसरा अनुमान न लगा सके और आप आसानी से याद भी रख सकें। आपका पासवर्ड कम से कम आठ कैरेक्टर का हो जो की लोअर केस लेटर्स, अपर केस लेटर्स, नंबर्स और स्पेशल कैरेक्टर्स का मिश्रण हो। अगर आप एक से अधिक अकाउंट्स का प्रयोग करते हैं, तो सभी के लिए अलग- अलग पासवर्ड का प्रयोग करें, अपना पासवर्ड कभी भी अपने नाम, पता, गली नंबर, जन्म तिथि, परिवार के सदस्यों के नाम, विद्यालय के नाम या अपने वाहनों के नंबर पर न बनाएं, जिसका दूसरों के द्वारा आसानी से अनुमान न लगाया जा सके।

❖ अपने सोशल मीडिया के अकाउंट को देखते रहें, अगर कभी आप अपने सोशल साइट्स के अकाउंट को डिलीट कर रहे हैं, तो उससे पहले आप अपनी सारी पर्सनल जानकारी को डिलीट कर दें और फिर उसके बाद आप अपना अकाउंट डीएक्टिवेट करें या डिलीट करें। आप किसी भी स्पैम ई-मेल का उत्तर न दें, अंजान ई-मेल में आए अटैचमेंट्स को कभी खोल कर न देखें या उस पर मौजूद लिंक पर क्लिक न करें। इसमें वायरस या ऐसा प्रोग्राम हो सकता है, जिसको क्लिक करते ही आपका कम्प्यूटर उनके कंट्रोल में जा सकता है या आपके कम्प्यूटर में वायरस के प्रभाव से कोई जरूरी फाइल डिलीट हो जाए और आपका ऑपरेटिंग सिस्टम करप्ट हो जाए।

❖ अगर किसी वेबसाइट पर कोई पॉपअप खुले और आपको कुछ आकर्षक गिफ्ट या इनाम ऑफर करे तब आप अपनी पर्सनल जानकारी या बैंक अकाउंट नंबर या बैंक से संबंधित कोई भी जानकारी न भरें। अगर आप किसी ऑफर का लाभ लेना चाहते हैं, तो आप सीधे रिटेलर के वेबसाइट, रिटेल आउटलेट या अन्य जायज साइट से संपर्क करें। आज के दौर में इंटरनेट हमारे लिए काफी महत्वपूर्ण है, लेकिन इंटरनेट पर जरा सी नासमझी स्कैमर्स को साइबर क्राइम के लिए खुला निमंत्रण देती है।

साइबर अपराध को रोकने के उपाय

कंप्यूटर उपयोगकर्ता साइबर अपराध को रोकने के लिए विभिन्न तकनीकों को अपना सकते हैं:-

- ➢ कंप्यूटर उपयोगकर्ताओं को हैकर्स से अपने कंप्यूटर की सुरक्षा के लिए एक फायरवॉल का उपयोग करना चाहिए।
- ➢ कंप्यूटर उपयोगकर्ताओं को एंटी वायरस सॉफ्टवेयर जैसे McAfee या Norton एंटी वायरस के रूप में स्थापित करना चाहिए।
- ➢ साइबर विशेषज्ञों ने सलाह दी है कि यूजर्स को केवल सुरक्षित वेबसाइट्स पर ही खरीदारी करनी चाहिए। वे अपने क्रेडिट कार्ड की जानकारी संदिग्ध या अजनबियों को कभी न दें।
- ➢ उपयोगकर्ताओं को अपने खातों पर मजबूत पासवर्ड विकसित करने चाहिए, अर्थात अक्षरों और संख्याओं को पासवर्ड में शामिल करें, एवं लगातार पासवर्ड और लॉगिन विवरण को अद्यतन करना चाहिए।
- ➢ बच्चों पर नजर रखें और उनके द्वारा इंटरनेट के इस्तेमाल को सीमित रखें।
- ➢ फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब की सुरक्षा सेटिंग्स की जाँच करें और सावधान रहे।
- ➢ हैकिंग से बचने के लिए जानकारी सुरक्षित रखें। अधिकांश संवेदनशील फाइलों या वित्तीय रिकॉर्ड के लिए एंक्रिप्शन का उपयोग करें, सभी महत्वपूर्ण जानकारी के लिए नियमित बैक-अप बनाएं, और इसे किसी अन्य स्थान पर संग्रहीत कर लें।

- उपयोगकर्ताओं को सार्वजनिक वाई-फाई हॉटस्पॉट का उपयोग करते समय सचेत रहना चाहिए। इन नेटवर्क पर वित्तीय लेनदेन के संचालन से बचें।
- उपयोगकर्ताओं को इंटरनेट पर नाम, पता, फोन नंबर या वित्तीय जानकारी जैसे व्यक्तिगत जानकारी देते समय सावधान रहना चाहिए। सुनिश्चित करें कि वेबसाइट्स सुरक्षित हैं।
- एक लिंक या अज्ञात मूल के फाइल पर क्लिक करने से पहले सभी चीजों का बुद्धिमता से आकलन करना चाहिए। इनबॉक्स में कोई भी ईमेल न खोलें। संदेश के स्रोत की जांच करें। यदि कोई संदेह हो, तो स्रोत सत्यापित करें। कभी उन ई-मेल का जवाब न दें जो उनसे जानकारी सत्यापित करने या उपयोगकर्ता के पासवर्ड की पुष्टि करने के लिए कहे।
- संविधान के अनुच्छेद 19 (1) (A) के तहत सभी नागरिकों को अभिव्यक्ति की आजादी दी गई है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने इसे प्रोत्साहित करने में अहम रोल निभाया है। हालांकि अभिव्यक्ति की यह आजादी उसी सीमा तक है, जहां तक आप किसी कानून का उल्लंघन नहीं करते हैं और दूसरे को आहत या नुकसान नहीं पहुंचाते हैं।
- भारत में सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 पारित किया गया जिसके प्रावधानों के साथ साथ भारतीय दंड संहिता के प्रावधान साइबर अपराधों से निपटने के लिए काफी है। इसके अंतर्गत 2 साल से लेकर उम्र कैद तथा दंड या फिर जुमनि का प्रावधान है।
- राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति 2013 जारी की गई जिसके अनुसार सरकार ने अति संवेदनशील सूचनाओं की सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय अति संवेदनशील सूचना अवसंरचना केंद्र का गठन किया।
- सरकार द्वारा कंप्यूटर इमरजेंसी रिस्पांस टीम की स्थापना की गई जो कंप्यूटर सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय स्तर की मॉडल एजेंसी है।
- सरकार ने सूचना सुरक्षा शिक्षा और जागरूकता परियोजना शुरु की है ।

निष्कर्ष

साइबर अपराध एक गंभीर खतरे के रूप में विकसित हो रहा है। दुनिया भर की सरकारों, पुलिस विभागों और गुप्तचर इकाइयों ने साइबर अपराध के खिलाफ प्रतिक्रिया देना शुरु कर दिया है। सीमा पार साइबर खतरों पर अंकुश लगाने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी कई प्रयास किए जा रहे हैं। भारतीय पुलिस ने देश भर में विशेष साइबर सेल शुरु कर दिया है और लोगों को शिक्षित करना शुरु कर दिया है, ताकि वे ज्ञान हासिल करें और ऐसे अपराधों से खुद को बचाएं। आज हर एक व्यक्ति को अपने स्तर पर साइबर अपराधों के विरोध में आवाज उठानी पड़ेगी और इसके लिए सबसे ज्यादा जरूरत है साइबर शिक्षा की।

अगर आपके किसी पोस्ट पर या फिर किसी पोस्ट को शेयर करने से किसी की भावना आहत होती है या दो समुदायों के बीच नफरत पैदा होती है, तो आपको जेल की हवा खानी पड़ सकती है। इसके तहत अगर आप फेसबुक, ट्विटर, टिक टॉक, शेयर चैट, यूट्यूब समेत अन्य सोशल मीडिया पर किसी भी तरह का आपत्तिजनक, भड़काऊ या फिर अलग-अलग समुदायों के बीच नफरत पैदा करने वाला पोस्ट, वीडियो या फिर तस्वीर शेयर करते हैं, तो आपको जेल जाना पड़ सकता है। साथ ही जुर्माना देना पड़ सकता है।

साइबर क्राइम को कम्प्यूटर क्राइम या इंटरनेट क्राइम के नाम से भी जाना जाता है। कम्प्यूटर्स और इंटरनेट द्वारा की गई किसी भी तरह की आपराधिक गतिविधियां साइबर क्राइम की श्रेणी में आती हैं। साइबर क्राइम के माध्यम से कही दूर बैठा हैकर आपके सरकारी या महत्वपूर्ण कारोबारी दस्तावेजों या आपकी निजी महत्वपूर्ण जानकारी को इंटरनेट और कम्प्यूटर के माध्यम से चुरा सकता है। साइबर क्राइम में गैर धन अपराध भी शामिल है जैसे ई-मेल के माध्यम से स्पैम करना, किसी वस्तु विशेष के प्रचार के लिए मेल करना, किसी कंपनी के गोपनीय दस्तावेजों को सार्वजनिक करना, वायरस को मेल के माध्यम से फैलाना, पोर्नोग्राफी को बढ़ावा देना, आई. आर. सी. (इंटरनेट रिले चैट) के माध्यम से गलत कार्यों को अंजाम देने के लिए ग्रुप चैट करना, सॉफ्टवेयर प्राइवेसी को बढ़ावा देना और सामान्य नागरिकों को परेशान करने के लिए कम्प्यूटर और इंटरनेट के माध्यम से कोई भी गलत कदम उठाना उसके अंतर्गत आता है। अगर आप उक्त बिन्दुओं और सुझावों पर गंभीरता से विचार करते हैं तो आप साइबर अपराध (क्राइम) का शिकार होने से बच सकते हैं।

विश्व पुस्तक दिवस : एक जानकारी

एस के सिन्हा
उप अंचल प्रमुख
वाराणसी अंचल

23 अप्रैल प्रतिवर्ष विश्व पुस्तक दिवस तथा कॉपीराइट दिवस के रूप में मनाया जाता है। 23 अप्रैल, 1995 में पहली बार यूनेस्को द्वारा विश्व पुस्तक दिवस की शुरुआत की गई। पढ़ना, प्रकाशन और प्रकाशनाधिकार को पूरी दुनिया के लोगों के बीच बढ़ावा देने के लिए यूनेस्को द्वारा आयोजित यह एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है।

इसकी शुरुआत 1923 में स्पेन में पुस्तक विक्रेताओं द्वारा प्रसिद्ध लेखक मीगुयल डी सरवेन्टस की पुण्यतिथि (23 अप्रैल) के अवसर पर उनको सम्मानित करने हेतु की गई।

यूनेस्को द्वारा इसे 23 अप्रैल को मनाने का फैसला इसलिए किया गया क्योंकि, ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार, विलियम शेक्सपियर, व्लादिमीर नबोकोव, मैमुएल सेजिया वैलेजो की जन्म और मृत्यु वर्षगांठ, जोसेफ प्ला, इंका गारसीलासो डी ला वेगा की मृत्यु वर्षगांठ और मैनुअल वैलेजो, मॉरिस द्रुओन और हॉलडोर लैक्सनेस की जन्म वर्षगांठ पड़ती है।

शिक्षकों, लेखकों, प्रकाशकों, सरकारी शैक्षणिक संस्थानों, एनजीओ, मास मीडिया आदि द्वारा खासतौर से विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस मनाया जाता है। यूनेस्को राष्ट्रीय परिषद, यूनेस्को क्लब, केन्द्रीय संस्थान, लाइब्रेरी, स्कूल और दूसरे शैक्षणिक संस्थानों के द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर पुस्तकों के माध्यम से लोगों के बीच देश की सामाजिक एवं सांस्कृतिक विरासत को संभालने की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की जाती है। इस अवसर पर आयोजित जनजागरण कार्यक्रमों का सकारात्मक प्रभाव समाज पर पड़ता है।

पुस्तकें ज्ञान तथा नैतिकता की संदेशवाहक, अखंड संपत्ति, भिन्न-भिन्न प्रकार की संस्कृति हेतु एक खिड़की तथा चर्चा हेतु एक औजार का काम करती हैं तथा भौतिक वैभव के रूप में देखी जाती हैं। इसके कारण रचनात्मक कलाकारों के स्वामित्व की रक्षा भी होती है।

किताबें अपने भीतर युगबोध को जिंदा रखती हैं। विश्व इतिहास इसका गवाह है कि पुस्तकें क्रांति एवं शांति दोनों की दूत होती हैं। भारतीय नवजागरण में राजा राममोहन राय एवं भारतेन्दु हरिश्चंद्र का साहित्य तथा भारतीय स्वाधीनता आंदोलन को गति देने में निराला, प्रसाद, रामधारी सिंह दिनकर तथा अन्य समकालीन साहित्यकारों के साहित्य ने वो चमत्कार कर दिखाया जो तलवार भी न कर सकी।

विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर नागरिकों को पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इस अवसर पर प्रसिद्ध लेखकों द्वारा लिखी गई नवीनतम किताबों के संग्रह को पढ़ने के लिए एवं पुस्तकालयों की सदस्यता के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। विभिन्न क्रिया-कलाप जैसे दृश्यात्मक कला, नाटक, कार्यशाला कार्यक्रम आदि के आयोजन द्वारा लोगों को पुस्तकें पढ़ने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है।

भारतवर्ष सदियों से ज्ञान का स्रोत रहा है। भारतीय मनीषियों एवं विद्वानों द्वारा रचित विशाल ज्ञान का भंडार आज की युवा पीढ़ी के लिए अनुपयोगी हो गया है। विभिन्न भाषाओं में रचित भारत का विशाल साहित्य भंडार आज अपना पाठक वर्ग खो चुका है। युवा पीढ़ी पुस्तकें नहीं पढ़ रही हैं। और अगर पढ़ भी रही हैं तो अंग्रेजी साहित्य या भारतीय भाषाओं से अंग्रेजी में अनूदित साहित्य। क्योंकि

युवा पीढ़ी (साहित्य के विद्यार्थियों के अतिरिक्त) हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में रचित साहित्य को हेय दृष्टि से देखती हैं। परिणामस्वरुप भारत का विशाल साहित्य भंडार पुस्तकालयों की शोभा बनकर रह गया है।

भारत विश्वगुरु रहा है। हमारा ज्ञान-विज्ञान उन्नत था और है, लेकिन अगर वर्तमान युवा पीढ़ी विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित मौजूदा साहित्य का अध्ययन नहीं करेगी या रुचि नहीं लेगी तो सब व्यर्थ ही माना जाएगा।

युवा पीढ़ी को भूलना नहीं चाहिए कि प्राचीन काल में भारतवर्ष पर जो भी विदेशी आक्रमण हुए, वो भारतीय धन संपदा की लूट के साथ-साथ भारतीय चिकत्सा शास्त्र, अर्थ शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र आदि विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े ग्रन्थों की लूट के लिए भी हुए। भारत ने विश्व को ज्ञानवान बनाया है। युवा पीढ़ी को यह चेतनाबोध होना जरुरी है कि हमारा साहित्य अग्रणी था और अग्रणी रहेगा।

पुस्तकें पढ़ना जरुरी है क्योंकि पुस्तकों से हम क्या थे, क्या हैं और क्या हो सकते हैं, इसकी स्पष्ट जानकारी मिलती है। पुस्तकें नए विचारों को उत्पन्न करने के साथ आंतरिक खुशी पाने और ज्ञान प्राप्ति का सबसे सहज एवं सस्ता स्रोत हैं।

विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर दुनिया के कुछ प्रसिद्ध लेखकों एवं विचारकों की उक्तियां:

- "मैंने ढ़ेर सारी अज्ञात किताबें पढ़ी हैं और हर एक किताब को खोलना बहुत अच्छा है" - बिल गेट्स
- "एक किताब से ईमानदार मित्र कोई नहीं होता" - अर्नेष्ट हेमिंग्वे
- "किताब एक उद्यान है, एक स्टोरहाउस है, एक पार्टी है, एक साथी है, एक परामर्शदाता है।" - चार्ल्स बौडैलेयर

बैंकिंग एवं आर्थिक परिक्रमा

पीओएस लाइफ उत्पादों हेतु आईआरडीएआई मानदंड

जीवन बीमा उत्पादों के उपयोग को सरल बनाने हेतु बेहतर प्रयास की दिशा में भारतीय बीमा विकास और नियामक प्राधिकरण (आईआरडीएआई) ने पॉइंट ऑफ सेल्स (PoS) उत्पादों एवं व्यक्तियों हेतु दिशानिर्देश जारी किया है। बीमा नियामक के मास्टर परिपत्र के अनुसार पीओएस के माध्यम से रिटर्न प्रीमियम के साथ या उसके बिना शुद्ध बीमा उत्पाद; गैर संबद्ध, भाग न लेने वाले अक्षय निधि उत्पाद; तत्काल वार्षिकी उत्पादों; तथा निश्चित लाभ के साथ गैर-लिंक्ड, गैर-बराबर स्वास्थ्य बीमा उत्पाद की पेशकश की जा सकती है। पाइंट ऑफ सेल्स व्यक्ति के रुप में नियुक्त होने के लिए व्यक्ति की आयु न्यूनतम 18 वर्ष होनी चाहिए तथा 10वीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए।

भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंकों को संपर्क रहित कार्ड भुगतान की पेशकश करने का निदेश दिया

भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंकों को केवल उन उपयोगकर्ताओं के लिए संपर्क रहित कार्ड लेनदेन की सुविधा प्रदान करने का निर्देश दिया है जो विशेष रुप से इसका लाभ उठाना चाहते हैं। यह निदेश उपयोगकर्ता की सुविधा को बेहतर बनाने और कार्ड लेन-देन की सुरक्षा बढ़ाने के उद्देश्य से दिया गया है।

बैंकों को रिटेल ऋणों पर 5 वर्ष तक सीआरआर की छूट

भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंकों को अपनी जमा राशि पर पाँच साल के लिए नकद आरक्षित अनुपात (सीआरआर) को बनाए रखने से छूट प्रदान किया है जो कि तीन उत्पादक क्षेत्रों यथा एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम), गृह तथा वाहन क्षेत्रों को जनवरी, 2020 से जुलाई, 2020 के बीच दिए गए ऋण की राशि के बराबर होगा।

डीआईसीजीसी ने जमाकर्ताओं हेतु बीमा राशि बढ़ाई

जमा बीमा और क्रेडिट गारंटी निगम (डीआईसीजीसी), जो भारतीय रिजर्व बैंक की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है, ने बीमाकृत बैंकों में 04 फरवरी, 2020 से जमाकर्ताओं की बीमा राशि की सीमा को रु. 1 लाख से बढ़ाकर रु. 5 लाख प्रति जमाकर्ता कर दिया है। भारत सरकार के अनुमोदन से यह वृद्धि बैंकों में जमाकर्ताओं को बड़े पैमाने पर सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से की गई है। इस योजना के तहत सभी तरह के खाते– बचत, चालू एवं मियादी जमा आते हैं।

साभार- आईआईबीएफ विजन

कंप्यूटर सुरक्षा दिवस : एक रिपोर्ट

'कंप्यूटर सुरक्षा दिवस' एक वार्षिक कार्यक्रम है। प्रत्येक वर्ष 30 नवंबर को यह दिवस सभी कंप्यूटर उपयोगकर्ताओं को यह याद दिलाने के लिए मनाया जाता है कि व्यक्तिगत और कार्यस्थल की कंप्यूटर सुरक्षा और संरक्षा, एक

महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। कंप्यूटर सिस्टम, इंटरनेट, स्मार्ट डिवाइस जैसे स्मार्टफ़ोन, स्मार्ट टीवी आदि पर हमारी बढ़ती निर्भरता के कारण कंप्यूटर सुरक्षा अब और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

हमारे बैंक ने भी हमारे जीवन में कंप्यूटर और सूचना सुरक्षा जागरूकता की आवश्यकता को पुनर्जीवित करने के लिए 'कंप्यूटर सुरक्षा दिवस' मनाया है। सम्पूर्ण नवंबर, 2019 माह में एक जागरूकता अभियान आयोजित किया गया जिसमें दैनिक आधार पर ई-मेल के माध्यम से कर्मचारियों के बीच **इंफोसेक शृंखला** परिचालित की गई। यह श्रंखला सूचना को एसेट के रूप में समझते हुए, सूचना सुरक्षा और सर्वोत्तम कंप्यूटर सुरक्षा उपायों पर आधारित है ।

हमारे माननीय कार्यपालक निदेशक-II ने दिनांक 30 नवंबर 2019 को दीप प्रज्वलित कर उत्सव की शुरुआत की और सभी कर्मचारियों के लाभ हेतु एक ई-बुक "Your Awareness is Your Safety" (इंफोसेक शृंखला का संग्रह) जारी किया। इसके बाद उपस्थित सदस्यों द्वारा कंप्यूटर सुरक्षा पर प्रतिज्ञा ली गई।

इस दिन बैंक के सभी कार्यालयों और शाखाओं में भी प्रतिज्ञा ली गई। हमारे माननीय कार्यपालक निदेशक-I ने अंचल कार्यालय, बेंगलुरु के सदस्यों को प्रतिज्ञा दिलाई। इस अवसर पर प्रधान कार्यलय के विभागों के वेतनमान -V एवं IV के कार्यपालकों हेतु 'साइबर सुरक्षा जागरूकता' कार्यशाला भी आयोजित की गई। विशिष्ट वक्ता के रूप में साइबर पुलिस, कोलकाता और सी-डैक कोलकाता से अतिथि उपस्थित थे। इन वक्ताओं की प्रस्तुति और इंटरेक्टिव सत्र साइबर खतरों और इसके लिए उठाए जाने वाले निवारक उपायों पर केंद्रित था। इस कार्यशाला में विविध विषयों पर चर्चा से उपस्थित प्रतिभागियों को अपनी सबसे मूल्यवान एसेट अर्थात सूचना की सुरक्षा से संबंधित ज्ञान में वृद्धि हुई और लाभ अर्जन हुआ ।

साइबर परिदृश्य से उत्पन्न सभी प्रतिकूलताओं से सुरक्षित रहने में जागरूकता और सतर्कता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कंप्यूटर सुरक्षा दिवस मनाने और कार्यशाला के आयोजन का एकमात्र उद्देश्य जागरूकता बढ़ाना भी है और संदेश देना है कि-

"सूचना सुरक्षा के तीन तत्वों- लोग, प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी में से सबसे महत्वपूर्ण लोग है। और हम [लोगों] को कंप्यूटर सिस्टम का उपयोग करते समय सावधान और सतर्क रहना चाहिए। हमें सर्वोत्तम उपायों का पालन करना चाहिए और अपने ग्राहकों को उनका अनुसरण करने में भी मार्गदर्शन करना चाहिए।"

क्या गंगा नदी कावेरी या गोदावरी की शत्रु है?

सुभाषचंद्र पालीवाल
सेवानिवृत्त सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
यूको बैंक, प्रधान कार्यालय, कोलकाता

भारत के महान मनीषी साहित्य के नोबल पुरस्कार से सम्मानित रवीन्द्रनाथ टैगोर ने एक बार एक स्वप्न देखा था-

"मैं एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना करता हूँ
जहां हमारा चित्त भयमुक्त हो
जहां हमारा मस्तक गर्व से उन्नत हो
जहां विभाजन या विखंडता न हो
जहां हमारे जीवन का आधार सत्य हो
जहां हम श्रेष्ठता को प्राप्त करने का अनथक प्रयास करें
जहां हम सात्विक तर्क से अनुप्राणित हों
जहां नए-नए विचार- कल्पनाएँ जागृत हों
जहां हम उन्हें कार्यान्वित भी करें।"

यह कल्पना उस समय भी थी जब गीतांजलि लिखी गई थी और आज भी यह प्रासंगिक है। हम विभाजन, विखंडता या वैमनस्य की बात कहीं नहीं करते, कभी नहीं करते; हम सदैव सात्विक तर्क से अनुप्राणित होते हैं।

यही हमारी संस्कृति का मूल तत्व भी है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह जी 'दिनकर' ने संस्कृति क्या है ? आलेख में एक बहुत सुंदर बात लिखी है- "संस्कृति और प्रवृति में भेद है। गुस्सा करना, लोभ में पड़ना, ईर्ष्या, मोह, राग-द्वेष, कामवासना मनुष्य के प्रकृतिदत्त गुण हैं परंतु उन पर नियंत्रण रखना संस्कृति है। भारतीय संस्कृति में अनेक संस्कृतियाँ रची-पची हुई हैं। चित्र, कविता, मूर्ति, मकान और पोशाक पर ही नहीं सांस्कृतिक संपर्क का प्रभाव दर्शन और विचारों पर भी पड़ता है। इसमें कूपमंडूकता नहीं है। जिस जलाशय में पानी लाने वाले स्रोत खुले रहते हैं, उसकी संस्कृति कभी नहीं सूखती। आदान-प्रदान की प्रक्रिया संस्कृति की जान है और इसी के सहारे वह अपने को जिंदा रखती है। "

अतः भाषाओं के आधार पर लड़ाई या विरोध निहित स्वार्थों के आधार पर उचित प्रतीत हो सकते हैं परंतु भारत की एकता-अखंडता को बनाए रखने के लिए यह कभी उचित नहीं है। इस पर सात्विक तर्क से नियंत्रण करना होगा।

सर्वे भवन्तु सुखिनः । सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु । माकाश्चित दुःख भाग्मवेत ।

हे नाथ ! सब सुखी हों, कोई न हो दुखारी। सब हों निरोग, धन्यधान्य के भंडारी । सब भद्रभाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों। दुखिया न कोई होवे, सृष्टि में प्राणधारी। हम सबके कल्याण की कामना करते हैं। शांति की बात करते हैं।

भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी ने भोपाल में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर दिनांक 11 सितंबर 2015 को कहा था –

"हिन्दी विश्व की भावी भाषा बन सकती है। डिजिटल दुनिया में इसका प्रचार-प्रसार भी अधिक होगा। क्या गंगा नदी किसी अन्य नदी की शत्रु हो सकती है ? क्या यह यमुना, कावेरी या गोदावरी की शत्रु है? हिन्दी तो अपने आप ही विकसित हो रही है। आज अँग्रेजी समाचार पत्र, टीवी चैनल हिन्दी के प्रसार माध्यमों की तुलना में बहुत नीचे हैं। विदेशी कंपनियां भी हिन्दी का सहारा लेकर अपना कारोबार बढ़ा रही हैं।"

संयुक्त राज्य अमेरिका में हिन्दी सबसे अधिक लोकप्रिय भारतीय भाषा है। यह वहाँ सबसे अधिक बोली जाती है। 1 जुलाई 2018 को वहाँ पर 8.7 लाख व्यक्ति हिन्दी बोलते थे । (स्रोत-दि अमेरिकन कम्यूनिटी सर्वे डाटा, 2018) वहाँ पर तो किसी ने कुछ भी नहीं किया, फिर भी हिन्दी वहाँ सर्वाधिक लोकप्रिय भारतीय भाषा बन गई है।

संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं का उल्लेख है। ये सभी भाषाएं भारत माता के गले के हार के पुष्प हैं। इन्हीं भाषाओं के माध्यम से भारत के 130 करोड़ से भी अधिक व्यक्ति अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हैं। ये सभी व्यक्ति अपनी-अपनी संस्कृति को संवारे हुए हैं। सबकी अपनी-अपनी पहचान है।

"भारत के संविधान की उद्देशिका (Preamble) में लिखा है- भारत एक संपूर्ण-प्रभुत्व संपन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य है;

यहाँ सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय (Justice) प्राप्त हो ; यहाँ विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता हो; यहाँ प्रतिष्ठा और अवसर की समानता प्राप्त हो;

हम व्यक्ति की गरिमा का ध्यान रखते हुए राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्पित है ।"

संविधान के अनुच्छेद 343 में राजभाषा का प्रावधान है। केंद्र की राजभाषा देवनागरी लिपि में हिन्दी होगी। परंतु अंकों का स्वरूप अंतरराष्ट्रीय ही होगा। अनुच्छेद 351 में भारत की सामासिक संस्कृति की रक्षा की बात भी कही गई है। इस प्रकार संविधान निर्माताओं ने सभी बातों का ध्यान रखा है। न्याय, स्वतंत्रता, समता, एकता, अखंडता एवं सामासिक संस्कृति हमारे आधारभूत सिद्धांत है। इसमें सौहार्द की बात है, सबके विकास की बात है।

भारत में 122 भाषाएँ हैं और 19,500 से भी अधिक बोलियाँ हैं। भारत के गृह मंत्री श्री अमित शाह ने हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में 14 सितंबर 2019 को कहा था –

"हमारे राष्ट्र की शक्ति है- विभिन्नता में एकता। परंतु देश में एक राष्ट्र भाषा की आवश्यकता है जिससे कि विदेशी भाषाएँ हम पर अपना साम्राज्य स्थापित न कर लें। उन्होंने कहा कि हमें विश्व में हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना होगा। हिन्दी का विकास भारत की सभी भाषाओं के साथ होगा, किसी भी भाषा की कीमत पर नहीं । उन्होंने यह भी कहा कि जो देश अपनी भाषा भूलता है, वह अपने सांस्कृतिक अस्तित्व को ही नकारता है। उन्होंने इस अवसर पर विनोबा भावे और महात्मा गांधी को भी याद किया। गांधी जी ने कहा था – बिना राष्ट्र भाषा के राष्ट्र गूंगा है। अटल बिहारी वाजपेयी ने विदेश मंत्री के पद से 1977 में पहली बार संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी में उद्बोधन किया। माननीय मोदीजी भी अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिन्दी में ही अपने विचार अभिव्यक्त करते हैं। "

2011 की जनगणना के अनुसार भारत में हिन्दी बोलने वालों की संख्या 43.6%है, जबकि अन्य भाषाओं के बोलने वालों की संख्या बहुत कम है। हिन्दी के विकास में सभी प्रांतों के मनीषियों का योगदान मिला है। बंगाल के राजा राममोहन राय, श्याम सुंदर सेन, तारा मोहन मिश्र, केशव चंद्र सेन, अरविंद घोष, शारदा चरण मिश्र, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सुभाष चंद्र बोस, आशुतोष मुखर्जी आदि ने हिन्दी के समर्थन में अपने-अपने प्रकार से योगदान किया है। तमिलनाडु में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा स्तुत्य कार्य कर रही है।

भारत सरकार भी स्वीकार करती है -
"पहला भाव मातृभाव - पहली भाषा मातृभाषा"

हम 21 फरवरी को मातृभाषा दिवस भी मनाते हैं। भाषाई विविधता हमारी शक्ति है। एकता का आशय एकरूपता नहीं है। दुनिया में तीसरे नंबर पर बोली जाने वाली हिन्दी स्वतः विकसित हो रही है।

26 नवंबर को हम संविधान दिवस भी मनाते हैं। इसके अनुच्छेद 51(क) में लिखा है-

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य है कि वह

(1)भारत के संविधान, उसमें निहित आदर्शों एवं उसमें उल्लिखित संस्थानों, राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्र गान का सम्मान करे ;
(2) भारत के सभी लोगों के बीच भाईचारे, एकता की भावना विकसित करे
(3) सामासिक संस्कृति की समृद्ध विरासत को सम्मान दे आदि , बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने जब 'वंदे मातरम' लिखा और कांग्रेस के बारहवें अधिवेशन में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इसे खुद गाया, तो उनके समक्ष कोई एक क्षेत्र या प्रांत नहीं था। यह पूरे भारतवर्ष के लिए था। यह भारत माता की वंदना थी। गांधीजी ने लिखा था – जब तक राष्ट्र है, तब तक यह गीत भी रहेगा ।

भारत माता की वंदना के इन स्वरों को भी याद करिए-

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा
हम बुलबुले हैं इसकी ये गुलिस्तां हमारा । - इकबाल

इस आलेख को टैगोर के ही शब्दों से मैं विराम देता हूँ –

हे प्रभु, हे जात पिता, मेरे देश को जगाओ ।

यह सोचने की पुनः आवश्यकता है कि क्या हम राष्ट्र हित के स्थान पर प्रांतीय हितों के बारे में अधीक सोचते हुए निहित स्वार्थों की मोह – निद्रा में सो तो नहीं रहे हैं ?

काले गुब्बारे

माधव कुमार झा,
सहायक प्रबंधक
बौंसी शाखा

कुछ निजी कागजाती कार्यवाही के लिए विगत कुछ दिनों से कलेक्टर साहब के कार्यालय जाना पड़ रहा है। हर रोज अपनी फाईल को एक टेबल से दूसरे टेबल तक पहुंचता तो देख रहा हूँ, पर अभी तक कोई निष्कर्ष हाथ नहीं आया। आज भी पहुँचा तो फाईल बड़े बाबू की टेबल तक गई है, यही सुनने को मिला। थक हार कर वहीं बरामदे में लगी कुर्सी पर बैठ गया और सोचने लगा कि न जाने कब तक फाईल पर कलेक्टर साहेब के दस्तखत होंगे। इसी उधेड़बुन में अपनी परेशानी का पसीना पोंछने की सोच ही रहा था कि सहसा एक आवाज ने मेरा ध्यान आकर्षित किया “भाई साहब, क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकता हूँ?” अचंभित होकर जब मैं पीछे मुड़ा, तो देखा कि एक श्याम वर्ण का हट्टा-कट्टा पुरुष चेहरा ओज (तेज) से भरा आँखों पर चश्मा मेरी ओर मुखातिब था। मैं अभी भी विस्मित था और पूछने ही वाला था कि आप कौन? उसने अपना परिचय दिया, मैं यहाँ का जिलाधिकारी। आइए, मेरे चैम्बर में बात करते हैं। मेरे पांव न जाने क्यूँ अकस्मात उनके पैरों का पीछा करते हुए उनके चैम्बर में चले ही गए। अन्दर जाने से पहले उन्होंने अपने आदेशपाल को इशारा किया कि कोई उन्हें कुछ देर के लिए परेशान ना करे।

अंदर पहुंचते ही उन्होंने अपने चश्मे को उतारते हुए पूछा, भाई साहब क्या आपने मुझे पहचाना? मैं अभी भी मूढ़ बना हुआ था, चीजें इतनी तीव्र गति से बदलती चली जा रही थीं कि एक पल के लिए कुछ भी समझने का मौक़ा नहीं मिल रहा था। तभी उसने कहा मैं प्रकाश जिसे गाँव के सारे बच्चे “कलुआ” कह कर बुलाते थे, आपको याद है ना भैया? सहसा मैं अतीत के पन्नों में खो गया और पन्ने-दर-पन्ने खुलते चले गए। प्रकाश श्याम वर्ण का वह बालक जिसे स्कूल के सारे बच्चे कलुआ कह कर चिढ़ाते पर वो किसी की बात का जवाब तक नहीं देता। खुद में उलझा रहता, कोई मित्र नहीं था उसका। अपनी ही धुन में रहता हालांकि गांव के उस विद्यालय में मैं उसका अग्रज था, परंतु उसकी मनोदशा देखकर मन कई बार विचलित होता था। क्या श्याम वर्ण ही उसके जीने की सजा थी? श्री कृष्ण भी तो श्याम वर्ण के थे फिर समाज जब उन्हें भगवान का दर्जा दे सकता है तो प्रकाश को एक इंसान की तरह भी जीने की उम्मीद नहीं रखनी चाहिए क्या? खैर, दसवीं के बाद मेरे पिताजी ने अपना स्थानांतरण करा लिया और मैं भी उनके साथ शहर चला आया। “भैया–भैया” फिर से ये आवाज कानों में पड़ी तो उन बिखरे पन्नों से बाहर निकला और प्रकाश से पूछा तुम इतनी दूर तक आ पाओगे कभी सोचा भी नहीं था। बहुत ख़ुशी हुई इस जगह पर देख कर पर, कैसे संभाला खुद को और उस कीचड़ से बाहर निकले तो कैसे?

प्रकाश ने गहरी साँस ली और बोला- मैं तो अपने आप को ढूंढ ही नहीं पा रहा था, अपने रंग-रूप को लेकर इतनी बातें सुनी कि खुद पर से विश्वास ही उठ सा गया था। परंतु एक छोटी सी घटना ने मुझे राह दिखा दी और मैं आज यहाँ खड़ा हूँ भैया। मैंने बड़ी ही उत्सुकता से पूछा क्या?? प्रकाश और मैं, शायद दोनों ही उस अतीत के पन्नों में समाना चाह रहे थे। बातचीत आगे बढ़ाते हुए वह बोला, उस दिन गांव में लगे मेले में एक गुब्बारे वाले को देखा। बच्चों को लुभाने के लिए वह तरह तरह के गुब्बारे बेच रहा था- लाल, पीले, नीले, हरे.......। जब भी कभी उसे लगता कि उसकी बिक्री कम हो रही है वह झट से एक गुब्बारा हवा में छोड़ देता जिसे उड़ता देख कर बच्चे खुश हो जाते और गुब्बारा खरीदने के लिए उसके पास पहुँच जाते। पास में खड़ा मैं यह सब बड़ी जिज्ञासा के साथ देख रहा था। इस बार जैसे ही गुब्बारे वाले ने एक सफ़ेद गुब्बारा उड़ाया मैं तुरंत उसके पास पहुंचा और बाल मन बोला “अगर आप ये काला गुब्बारा छोड़ोगे तो वो भी ऊपर जाएगा क्या? ”

गुब्बारे वाले ने थोड़े अचरज के साथ देखा परन्तु कुछ जवाब नहीं दिया। परंतु वहीं खड़े एक सज्जन, जो शायद अपने बच्चों के लिए रंगीन गुब्बारे ले रहे थे, मेरी ओर मुखातिब हुए और मेरे सर पर बड़े प्यार से हाथ फेरते हुए बोले “हाँ! बिल्कुल जाएगा बेटे, गुब्बारे का ऊपर जाना इस बात पर निर्भर नहीं करता है कि वह किस रंग का है, बल्कि इस बात पर निर्भर करता है कि उसके अंदर क्या है।” ठीक इसी तरह हम इंसानों के लिए भी यह बात लागू होती है कि कोई अपने जीवन में क्या पाएगा यह उसके बाहरी रंग-रूप पर निर्भर नहीं करता है बल्कि इस बात पर निर्भर करता है कि उसके अन्दर क्या है।

उसी दिन मुझे यह बात समझ में आ गई कि हमारा मनोभाव ही हमारी प्रतिष्ठा और ऊँचाई तय करता है। और भैया, जानना नहीं चाहेंगे कि वह सज्जन पुरुष कौन थे? वो थे आपके पिताजी, जिन्होंने मेरे जीवन की दिशा ही बदल दी, सहसा मेरी आंखें स्वतः ही सजल हो उठीं।

সুস্বাস্থ্যৰ কাৰানে যোগাভাস

প্ৰফুল্ল বৰ্মন
सहायक महाप्रबंधक
कार्मिक सेवा विभाग

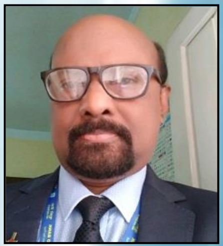

প্ৰাকৃতিক পদ্ধতিৰ দ্বাৰা নিৰোগী হৈ থকাৰ প্ৰাচীনতম পন্থা হ'ল যোগ।যোগৰ জৰিয়তে মানুহৰ শাৰীৰিক আৰু মানসিক উৎকৰ্স সাধন কৰা সম্ভৱ। বিশ্ব স্বাস্থ্য সংস্থাৰ মতে এজন মানুহ তেতিয়াই সুস্থ বুলি বিবেচিত হ'ব যেতিয়া তেঁও মানসিক আৰু শাৰীৰিক ভাৱে টনকিয়াল বা সুস্থ থাকিব।

যোগ ভাৰতীয় সংস্কৃতি আৰু ঐতিহ্যৰ ধাৰক, যোগ কথাৰ অৰ্থ হ'ল মিলন। পাতঞ্জলি যোগ দৰ্শন মতে জীৱাত্মৰ লগত পৰমাত্মাৰ মিলনক যোগ বুলি কোৱা হয়। বৰ্তমান ডিজিটেল যুগত মানুহৰ সময়ৰ বৰ অভাৱ, সৱেই ব্যস্ত কোনেৱ কাৰো খা-খবৰ নাৰাখে টকা পইছাই জীৱনৰ সকলো হৈ গৈইছে। মানুহবোৰ আজি হৈ গৈইছে আৰাম প্ৰিয়, শ্ৰম বিমুখ, বিলাসিতা আদি Status Symbol হৈ পৰিছে। মানুহৰ এই জিৱন যাত্ৰাৰ পৰিবৰ্তন, প্ৰাকৃতিৰ লগত সম্পৰ্ক নথকা অদিয়ে জন্ম দিছে কিছুমান Aristocratic বেমাৰ যেনে উচ্চ ৰক্তচাপ, Heart ৰ বেমাৰ, Diabetes, অনিদ্ৰা আৰু Depression। এজন স্বাভাৱিক কাম কৰা মানুহক দিনত ২৪০০ কেল'ৰি আহাৰৰ প্ৰয়োজন হয়, কিন্তু কোনো শাৰীৰিক পৰিশ্ৰম নকৰাকৈ আমি ৩৫০০ ক্যালৰিৰ গ্ৰহন কৰি আছো। ফলত যি অতিৰিক্ত ক্যালৰি গ্ৰহন কৰি আছো, সেইবোৰে বিভিন্ন প্ৰকাৰে আমাৰ দেহক ক্ষতিশাধন কৰি আছে। শৰীৰক সুস্থ ভাৱে ৰাখিবলৈ হলে আমাক moderate পৰিশ্ৰম কৰিব লাগিব, দেহা নিৰোগী হৈ থাকিলে মনটোও ভালেই থাকিব। A Healthy body develops a pure mind ই হ'ল সুস্থৰ মাপকাঠী।

নিয়মীত যোগভ্যাস কৰি আমি আমাৰ শৰীৰ আৰু মন দুয়োটাই ভালে ৰাখিবো পাৰো। যোগভ্যাসৰ কাৰনে আমাক কোনো special diet, পোশাক, যন্ত্ৰপাতি নালাগে, কেৱল মনৰ ইচ্ছা থাকিলেই যোগভ্যাস কৰিবো পাৰি। আলসতাই হ'ল যোগাভ্যাসৰ প্ৰধান অন্তৰায়, অলপ চেষ্ঠা কৰিলেই আলসতা দূৰ কৰিব পাৰি আৰু যোগাভ্যাস কৰা সম্ভৱ।

যোগ মূল চাৰি প্ৰকাৰৰ :

মন্ত্ৰ যোগ

লয় যোগ

হঠ যোগ

ৰাজ যোগ

সাংসাৰিক মানুহে শৰীৰ আৰু মন বিকাশৰ কাৰনে অকল হঠযোগৰ অভ্যাস কৰিলেই অভিষ্ঠ লাভ হব। যোগৰ কেইবাটাও অংগ আছে।যেনে

“যমনিয়মাসন প্ৰানায়ন প্ৰত্যাহাৰ ধাৰনায়াধ্যান সমাধিয়োষ্টাংগানি – যোগসূত্ৰ”

যোগৰ এই আঠটা অংগৰ ভিতৰত প্ৰথম পাঁচটা অপ্ৰত্যক্ষ বা বহিৰাংগ সহায়ক (External/Physical) আৰু শেষৰ তিনিটা উপায় অন্তৰংগ সহায়ক (Internal/Mental)। অষ্টাংগ যোগৰ অংগ সমূহ হ'ল

যম = যমৰ অৰ্থ হ'ল উপৰম বা অভাৱ। হিংসা, স্তেন, মৈথুন আৰু পৰিগ্ৰহন ৰ পৰা বিৰত থকা। যমৰ আকৌ পাঁচটা অংগ –

অহিংসা - কাকো হিংসা নকৰা। কায়িক, বাচিক আৰু মানসিক হিংসাৰ পৰা বিৰত থকাই অহিংসা।

সত্য - চলনাহীন বাক্যই সত্য। মন আৰু

ইনদ্ৰিয়াদিৰে দেখি শুনি যেনে অনুভৱ হয় ঠিক তেনে ভাৱ প্ৰকাশ কৰাকে সত্য বুলি কোৱা হয় ।

আস্তেয় - চুৰি নকৰা বা তেনে ইচ্ছাৰ পৰা বিৰত থকা

ব্ৰহ্মচাৰ্য - ইন্দ্ৰিয় সংযম কৰা বা বিষয় বাসনাৰ প্ৰতি নিস্পৃহ থকাতোৱে ব্ৰহ্মচাৰ্য। গতিকে কায়িক মানসিক বা যৌনাচাৰ সম্পূৰ্ন ভাবে ত্যাজ্য।

অপৰিগ্ৰহ - জীৱন ধাৰনৰ বাবে অত্যাৱশ্যকীয় সামগ্ৰীৰ বাদে আন সামগ্ৰী গ্ৰহন নকৰা বা কাৰো পৰা দান গ্ৰহন নকৰা।

2. নিয়ম - নিয়ম হ'ল যোগাভাসকাৰীৰ কৰিব লগিয়া কৰ্তব্য যেনে - শৌচ, সন্তোষ, তপ, স্বাধ্যায় আৰু ঈশ্বৰ প্ৰনিধাম। বাহ্যিক আৰু আভ্যন্তৰীন শুচিতা ৰক্ষা কৰা, নিজ নিজ কৰ্তব্য পালন কৰা, হৰ্ষ, বিষাদ আদি সকলো দ্বন্ধ সহ্য কৰা, শাস্ত্ৰ পাঠ আৰু ঈশ্বৰক স্মৰন কৰা।

3. আসন - যি অৱস্থানত সুখেৰে আৰু স্থিতিৰে থকিব পাৰি তাকেই আসন বুলি কোৱ হয়। (স্থিৰসুখাসনম্) অৰ্থাৎ স্থিৰ আৰু সুখদায়ক উপবেশন ভংগীমাই হ'ল আসন।

4. প্ৰানায়ম – Systematic Breathing Exercise শ্বাস প্ৰশ্বাস আদিৰ গতি নিয়ন্ত্ৰ্ণেই প্ৰানায়ম. শ্বাস প্ৰশ্বাসৰ তিনিটা পৰ্য্যায়, পূৰক-কুম্ভক ৰেচক, অৰ্থাৎ শ্বাস লোৱা, ধৰি ৰখা আৰু প্ৰশ্বাস এৰি দিয়া। প্ৰানায়মৰ দ্বাৰা হাঁওফাঁওৰ Oxyzen ধাৰনৰ ক্ষমতা বৃদ্ধি পায় (Oxyzen retaintion capacity of Lungs Increase)।

5. প্ৰত্যাহাৰ- ইন্দ্ৰিয়ক বাহ্য বিষয়ৰ পৰা আতৰায় মনৰ বশীভূত কৰাৰ নাম হৈছে প্ৰত্যাহাৰ।

6. ধাৰনা - বাহ্য তথা আভ্যন্তৰীন যিকোনো বিষয়ত চিত্তক সন্নিৱিষ্ট কৰাই ধাৰনা। যেনে সূৰ্য্যদেব, হৃদয় কমল, নাসিকাৰ অগ্ৰভাগ আদিক চিত্তক (Mind) নিবদ্ধ কৰি ৰখাই হৈছে ধাৰনা।

7. ধ্যান - কোনো এটা নিৰ্দিষ্ট বিষয়ত নিৰবিচ্ছিন্ন ভাবে চিত্ত নিবদ্ধ থাকিলেই ধ্যান সূচনা হয়। (To concentrate mind to a point is Dhyana)

8. সমাধি - ধ্যানৰ পৰিনাম বা পৰিসমাপ্তি হ'ল সমাধি। ধ্যান যেতিয়াই ধ্যেইৰূপ হৈ যায় তেতিয়া সমাধি প্ৰাপ্ত হয়।

এই অষ্ঠাংগ যোগৰ প্ৰথম দুটাই অৰ্থাৎ ১)যম আৰু ২) নিয়মে নৈতিক সাধনাৰ উপৰত গুৰুত্ব আৰোপ কৰে। আসন আৰু প্ৰানায়ম শাৰীৰিক নিয়ন্ত্ৰণৰ লগত জৰিত। প্ৰত্যাহাৰ, ধাৰনা, ধ্যান অৰু সমাধি মনস্তাত্বিক পৰ্য্যায়ৰ লগত জৰিত। এই যোগাংগসমূহৰ অনুশীমনৰ দ্বাৰা বিবেক জ্ঞান লাভ কৰি অশুদ্ধি বা অজ্ঞতা নাশ কৰিব পাৰি।বিবেক জ্ঞানৰ দ্বাৰা যিহেতু কৈৱল্য লাভ কৰিব পাৰি, গতিকে কৈৱল্য লাভৰ বাবে যোগাংগ সমূহৰ পালন অপৰিহাৰ্য্য।

ভাৰতিয় যোগবিদ্যাৰ মতে মানুহৰ অস্তিত্বৰ মুঠ পাঁচটা স্তৰ আছে – শাৰীৰিক (Physical), মানসিক (Mental), আবেগিক (Emotional), বৌদ্ধিক (Intellectual) আৰু আধ্যাত্মিক (Spiritual)। এই স্তৰ কেইটাৰ এটাও যদি যথোচিত উন্নতি বা বিকাশ নহয় তেনেহলে মানুহৰ সৰ্বাংগিন উন্নতি সম্ভৱ নহয়। উপদিনষদত এই পাঁচটা স্তৰক যথাক্ৰমে অন্নময় কোষ, প্ৰানাময়কোষ,বিজ্ঞানময়কোষ, মনোময়কোষ আৰু অনিন্দময়কোষ বুলি অভিহিত কৰা হৈছে।

राजेश्वरी
राजभाषा अधिकारी
अंचल कार्यालय, अहमदाबाद

ચારણ-કન્યા

ગાંધીજીએ ઝવેરચંદ મેઘાણીને રાષ્ટ્રીય શાયરના બિરુદથી નવાજ્યા હતાં, એવાં રાષ્ટ્રકવી ઝવેરચંદ મેઘાનીની વીરરસથી ભરપૂર સત્યઘટના પર આધારિત કવિ દ્વારા નજરોનજર જોતાં જ કલમને કાગળ વિના રચાયેલ અદ્ભુત કવિતા ચારણકન્યા

ગીરમાં તુલસીશ્યામની નજીક ચારણોનો એક નેસ છે.બરોબર સાંજનું ટાણું હતું. ચારણ ગાય-ભેંસ લઈ પાછા આવતાં હતા. એમાં એક ચૌદ વરસની ચારણ કન્યા આવી, નામ હતું હિરબાઈ. એની વાછડી બાંધી ઘરમાં આવી. સાવજની ધરતી માથે ઝવેરચંદ મેઘાણી અને કવિ કાગ બાપુ સાહિત્યની શોધમાં નીકળ્યા છે. ત્યાં તરસ લાગતાં પાણી માટે પૂછે છે ત્યાં નેહડાનો ચારણ એમને મહેમાન ગતિ કરાવે છે. દીકરી હિરબાઈ કહે છે કે બાપા, મહેમાન રોટલા ખાધા વગર જાય તો મારા ગળાના હમ છે. હિરબાઈ હરખથી ગાડાના પૈડાં જેવો રોટલો બનાવી, માથે માખણનો લોદો, ડુગણીનો દડો ને લસણની ચટણી અને સાથે દૂધનું ઝલકતું બોઘેણું, મેઘાણી અને કાગ બાપુ જમે છે, માંડ બે ચાર કોળિયા ભર્યા હશે ત્યાં એક દસ વરસનો છોકરો આવી કહે છે કે બાપા વાડામાંથી સિંહ હિરબાઈનું વાછરડું લઈ ગયો. હિરબાઈ દુધનું બોઘેણું મૂકી બાપુને જમાડવાનું કહી હાલી નિકડે છે. મેઘાણી ને અચરજ થયું કે આ દીકરી ક્યાં ગઈ, તો ચારણે કીધું કે જે વાછરડું લઈને સિંહ ભાગ્યો છે, એ મારી હિરબાઈને બહુ વહાલું છે. એટલે મારી દીકરી લાકડી લઈ સિંહ ની પાછડ ગઈ છે સિંહને વાછરડું ખાવા નહીં દે. એ વાછરડા ને પાછું લઈને આવશે. દેશની બહાદુર દીકરીને ડાંગ લઈ સિંહ ની પાછડ જતી જોઈ મેઘાણીએ હાથ ધોઈ હિરબાઈની પાછડ પાછડ જાય છે ને આખું દૃશ્ય જોવે છે. બાર હાથ જેટલો લાંબો સિંહ, જેને પોણા પોણા હાથની ગુહારી લટો છે ગેંડા ના ઢાળ જેવડી છાતી છે, કોણીમાં સમાય એવડી કેડ છે ને થાળી જેવડાં પંજા ઉછાડતો ઉછાડતો જઈ રહ્યો છે ત્યારે મેઘાણી બોલવા લાગે છે

સાવજ ગરજે !
વનરાવનનો રાજા ગરજે

ગીરકાંઠાનો કેસરી ગરજે
ઐરાવતકુળનો અરિ ગરજે
કડ્યપાતળિયો જોધ્ધો ગરજે
મોં ફાડી માતેલો ગરજે
જાણે કો જોગંદર ગરજે
નાનો એવો સમદર ગરજે !

<u>સિંહની ગર્જના ક્યાં ક્યાં સંભણાતી હતી એનું વર્ણન છે.</u>

ક્યાં ક્યાં ગરજે?
બાવળના જાળામાં ગરજે
ડુંગરના ગાળામાં ગરજે
કણબીના ખેતરમાં ગરજે
ગામ તણા પાદરમાં ગરજે
નદીઓની ભેખડમાં ગરજે
ગિરિઓની ગોહરમાં ગરજે
ઊગમણો આથમણો ગરજે
ઓરો ને આઘેરો ગરજે

<u>ગીરના લોકો સિંહા થી કેવા ડરતા હતા.</u>

થર થર કાંપે ! વાડામાં વાછડલાં કાંપે કૂબામાં બાળકડાં કાંપે
મધરાતે પંખીડાં કાંપે ઝાડતણાં પાંદડલાં કાંપે
સૂતાં ને જાગંતાં કાંપે

<u>સિંહ ની આંખ કેવી ઝબૂકતી હતી.</u>	<u>સિંહ ને ભગાડવા કોણ કોણ ઊઠે.</u>
જડ ને ચેતન સૌ એ કાંપે આંખ ઝબૂકે ! કેવી એની આંખ ઝબૂકે ! વાદળમાંથી વીજ ઝબૂકે જોટે ઊગીબીજ ઝબૂકે જાણે બે અંગાર ઝબૂકે હીરાના શણગાર ઝબૂકે જોગંદરની ઝાળ ઝબૂકે વીર તણી ઝંઝાળ ઝબૂકે ટમટમતી બે જ્યોત ઝબૂકે સામે ઊભું મોત ઝબૂકે જડબાં ફાડે! ડુંગર જાણે ડાચા ફાડે! જોગી જાણે ગુફા ઉઘાડે! જમરાજાનું દ્વાર ઉઘાડે! પૃથ્વીનું પાતાળ ઉઘાડે! બરછી સરખા દાંત બતાવે લસ! લસ! કરતી જીભ ઝુલાવે. બહાદરઊઠે!	બડકંદાર બિરાદર ઊઠે ફરસી લેતો ચારણ ઊઠે ખડગ ખેંચતો આહીર ઊઠે બરછી ભાલે કાઠી ઊઠે ઘરઘરમાંથી માટી ઊઠે ગોબો હાથ રબારી ઊઠે સોટો લઇ ઘરનારી ઊઠે ગાય તણા રખવાળો ઊઠે દૂધમલા ગોવાળો ઊઠે મૂછે વળ દેનારા ઊઠે ખોંખારો ખાનારા ઊઠે માનું દૂધ પીનારા ઊઠે જાણે આભ મિનારા ઊઠે

હિરબાઈ દીકરી ની આગળ હાવજ મોઢામાં વાછરડું લઈ દૌડતો જાય છે. પાછડ કડિયારી ડાંગ લઈ આ દીકરી જે સાક્ષાત ચંડી, દુર્ગા નું રૂપ લઈ હાથમાં સુદર્શનચક્ર ની જેમ ડાંગ ફરે છે ને ત્રાડ પાડે છે...........

ઊભો રે'જે !	પેટભરા ! તું ઊભો રે'જે!
ત્રાડ પડી કે ઊભો રે'જે!	ભૂખમરા ! તું ઊભો રે'જે!
ગીરના કુત્તા ઊભો રે'જે!	ચોર-લૂંટારા ઊભો રે'જે!
કાયર દુત્તા ઊભો રે'જે!	ગા-ગોઝારા ઊભો રે'જે!

કવિ ચારણ કન્યા ના દીકરી થી માં દુર્ગા બનવા સુધીનું વર્ણન કરે છે.

ચારણ—કન્યા !	જોબનવંતી ચારણ-કન્યા
ચૌદ વરસની ચારણ કન્યા	આગ-ઝરંતી ચારણ-કન્યા
ચૂંદડિયાળી ચારણ કન્યા શ્વેતસુંવાળી ચારણ-કન્યા	નેસ-નિવાસી ચારણ-કન્યા જગદંબા-શી ચારણ-કન્યા
બાળી ભોળી ચારણ-કન્યા	ડાંગ ઉઠાવે ચારણ-કન્યા
લાલ હીંગોળી ચારણ-કન્યા	ત્રાડ ગજાવે ચારણ-કન્યા
ઝાડ ચડંતી ચારણ-કન્યા	હાથ હિલોળી ચારણ-કન્યા
પહાડ ઘુમંતી ચારણ—કન્યા	પાછળ દોડી ચારણ-કન્યા
	ભયથી ભાગ્યો

ચગર ચગર ડાંગ ફરવા લાગી. દીકરી ઘડીકમાં સાવજની પાસે પહોંચી ગઈ ને બે ડાંગ વાગી સાવજ ને. ત્રીજી ડાંગ ખોપડું ફાડી નાખશે એવો ડર લાગતાં વાછરડું મોઢામાંથી મૂકી સિંહ ભાગ્યો. એક ચૌદ વર્ષની ચારણ-કન્યા એકલી પોતાની વાછડીને વિકરાળ સિંહના મોઢામાંથી બચાવી લે છે. કસુંબો લેતાં ય શૂરાતન ન ચઢે એવું શૂરાતન ઝવેરચંદ મેઘાણી ને ચડ્યું કે મારા દેશની દીકરી સાવજને ભગાડે. એમ થઈ ગયું કે આનો મારે ઠપકો કોને દેવો આમ જોયું તો સિંહણ દેખાણી ને મેઘાણીએ સિંહણ ને કહ્યું........

એ સિંહણ, તારો ભડવીર ભાગ્યો	જોગીનાથ જટાળો ભાગ્યો
રણ મેલીને કાયર ભાગ્યો	મોટો વીર મૂછાળો ભાગ્યો
ડુંગરનો રમનારો ભાગ્યો	નર થઇ તું નારીથી ભાગ્યો
હાથીનો હણનારો ભાગ્યો	નાનકડી છોડીથી ભાગ્યો!

ગાય ની વાછડી ને સાવજ પકડે ને ચૌદ વારસ ની દીકરી ચારણ કન્યા લાકડી લઈ સિંહ ની સામે જાય છે. સિંહ ભાગે છે એક અભણ દીકરી કે ગાયની વાછડી સિંહ પાસે થી છોડાવી ડે છે. અને આજે હું અને તમે બધા ખૂબ ગર્વથી રહીએ છીએ છતાં ય ભારતમાં ગાયો કપાય છે ને આપણ ને શર્મ પણ નથી આવતી. આપણી ફરજ છે કે આપણે બધા એ આ બધુ રોકવા કઈ કરવું જોઈએ.

മലയാളികളുടെ പ്രവാസലോകം - ഒരു അവലോകനം മധ്യപൂർ

मंजुषा सी एम
अधिकारी
अंचल कार्यालय, एर्णाकुलम

രണ്ടുവർഷം കൂടുമ്പോൾ വെള്ള അംബാസിഡർ കാറിൽ, മുകളിൽ പെട്ടികളും കെട്ടിവച്ച് ടീ ഷർട്ടും ജീൻസും കൂളിങ് ഗ്ലാസും വെച്ച് വന്നിറങ്ങുന്ന ഗൾഫ് മലയാളി എണ്പതുകളിലെയും തൊണ്ണൂറുകളിലെയും കൗതുകകരമായ കാഴ്ച്ചയായിരുന്നു.അതിനു പുറകെ പെട്ടിതുറക്കുന്നതു കാണാൻ വരുന്ന അയൽകാരും, ബന്ധുക്കളും. സ്വപ്നങ്ങളുടെ ചിറകിലേറി മലയാളി ഗൾഫിൽ പ്രവാസജീവിതം തുടങ്ങിയിട്ട് അരനൂറ്റാണ്ട് പിന്നിട്ടു. കേരളം കൈവരിച്ച സാമ്പത്തിക പുരോഗതിയിൽ ഗൾഫ് മലയാളി ചെലുത്തിയ സ്വാധീനം വാക്കുകളാൽ വർണ്ണിക്കാനാവില്ല. കേരളത്തിൽ നിന്ന് മാത്രം 30 ലക്ഷത്തിലേറെ പേർ ഗൾഫ് രാജ്യങ്ങളിൽ ജോലി ചെയ്യുന്നു, മറ്റ് ഏഷ്യൻ രാജ്യങ്ങളിലും യൂറോപ്പിലും അമേരിക്കയിലും ആഫ്രിക്കയിലുമെല്ലാം ലക്ഷക്കണക്കിന് മലയാളികൾ വേറെയുമുണ്ട് ഇവരെല്ലാം കൂടി ഒരു വർഷം കേരളത്തിലേക്ക് അയക്കുന്നത് ഒന്നര ലക്ഷം കോടിയോളം രൂപയാണ്.

കുടിയേറ്റ ചരിത്രം

പത്തൊമ്പതാം നൂറ്റാണ്ടിന്റെ അവസാനകാലത്തും ഇരുപതാം നൂറ്റാണ്ടിന്റെ ആദ്യ ദശകങ്ങളിലുമാണ് ഇന്ത്യയ്ക്ക് പുറത്തേയ്ക്കുള്ള മലയാളിയുടെ കുടിയേറ്റം ശക്തി പ്രാപിച്ചത്. അന്ന് ബ്രിട്ടീഷ് കോളനികളായിരുന്ന ബർമ്മയിലേക്കും (മ്യാന്മാർ) സിലോണിലേക്കും (ശ്രീലങ്ക) മലേഷ്യയിലേക്കും ധാരാളം മലയാളികൾ കുടിയേറുകയുണ്ടായി. എന്നാൽ രണ്ടാം ലോകമഹായുദ്ധകാലാത്ത് ജപ്പാൻ ബർമ്മയെ കൈവശപ്പെടുത്തിയപ്പോൾ മലയാളികളെല്ലാം തിരികെ പോന്നു.

അന്യരാജ്യങ്ങളിലേക്കുള്ള കുടിയേറ്റത്തിൽ ഏറ്റവും കൂടുതൽ ആളുകൾ പോയത് പേർഷ്യൻ ഗൾഫ് മേഖലകളിലേയ്ക്കായിരുന്നു. കേരളത്തിൽ രൂക്ഷമായികൊണ്ടിരുന്ന തൊഴിലില്ലയ്മയും വിവിധ അറബിരാജ്യങ്ങളുമായി നിലനിന്നിരുന്ന ചരിത്രപരവും സാംസ്കാരികപരവുമായ ബന്ധവും, ഇന്ത്യൻ നാണയത്തിന്റെ വിലയിടിവും ഒക്കെയാണ് വൻതോതിലുള്ള ഈ കുടിയേറ്റത്തിന്റെ ചില പ്രധാനകാരണങ്ങൾ. ആദ്യകാല കുടിയേറ്റക്കാരിലേറെയും നിർമ്മാണമേഖല തൊഴിലാളികളും ഗാർഹിക തൊഴിലാളികളും നേഴ്സുമാരും ആയിരുന്നു.തുടർന്ന്, സാങ്കേതിക വൈദഗ്ദ്ധ്യമുള്ള തൊഴിലാളികൾ, എഞ്ചിനീയർമാർ ഡോക്ടർമാർ തുടങ്ങിയവരും ഒടുവിലായി വ്യാപാരികളും ബിസിനസ്സുകാരും രംഗത്തെത്തി.

ഗൾഫ് മേഖലകൾക്ക് പുറമെ അമേരിക്കൻ ഐക്യനാടുകൾ വിവിധ യൂറോപ്യൻ രാജ്യങ്ങൾ ആസ്ട്രേലിയ, കാനഡ, ആഫ്രിക്ക എന്നിങ്ങനെ ലോകത്തിന്റെ വിവിധ കോണുകളിലേക്ക് മലയാളി കുടിയേറി തുടങ്ങി. ഏതു രാജ്യത്ത് ചെന്നാലും അവിടുത്തെ ആചാര സംസ്കാര സവിശേഷതകൾ മനസ്സിലാക്കി കൊണ്ട് സമന്വയത്തോടെ പ്രവർത്തിക്കാൻ സാധിച്ചതുകൊണ്ടാണ് അവർക്ക് അന്യനാടുകളിൽ സ്വീകാര്യത ഉറപ്പാക്കാൻ

സാധിച്ചിരുന്നത്. അതോടൊപ്പം തന്നെ തങ്ങളുടെ സംസ്കാരവും തനിമയും നിലനിർത്തുവാനും അവർ ശ്രദ്ധാലുക്കളാണ്.

കേരളത്തിലേക്കുള്ള കുടിയേറ്റം

എഴുപതുകളിൽ കേരളത്തിൽ നിന്നും ആളുകൾ ഗൾഫ് നാടുകളിലേക്ക് കുടിയേറിത്തുടങ്ങിയപ്പോൾ ഇവിടെ നിർമാണ മേഖലയിൽ ഉണർവ്വ് വന്നു.ആ സമയത്ത് നമ്മുടെ അയൽസംസ്ഥാനങ്ങളിൽ നിന്ന് , വിശേഷിച്ച് തമിഴ് നാട്ടിൽ നിന്ന് , തൊഴിലാളികൾ കേരളത്തിലേയ്ക്ക് കുടിയേറിത്തുടങ്ങി. പിന്നീട് ദക്ഷിണേന്ത്യയ്ക്കപ്പുറത്തു നിന്നും തൊഴിലാളികൾ വിവിധതരം തൊഴിലുകളന്വേഷിച്ച് കേരളത്തിലേയ്ക്ക പ്രവഹിച്ചു തുടങ്ങി. ഇന്ന് ലാഭകരമായി പ്രവർത്തിക്കുന്ന ഒട്ടുമിക്ക വ്യവസായങ്ങളും ഇവരുടെ ബലത്തിലാണ് നില നിന്നുപോകുന്നത്.ഇത്തരം തൊഴിലാളികളും എണ്ണം ഇപ്പോൾ 40 ലക്ഷം കവിഞ്ഞു.

പ്രവാസികളുടെ തിരിച്ചുവരവിലെ ആശങ്കകൾ

കുടിയേറ്റക്കാരായ മലയാളികളെ സംബന്ധിച്ച് പ്രതിസന്ധികളുടെയും ദുരിതങ്ങളുടെയും കാലമാണിത്. സ്വദേശിവൽക്കരണത്തിന്റെ ഭാഗമായി നടക്കുന്ന പരിഷ്കാരങ്ങൾ ഗൾഫ് മേഖലയിലെ സാധ്യതകൾ അടുത്ത പത്തുവർഷത്തിനകം പകുതിയായെങ്കിലും കുറയ്ക്കാനുള്ള സാധ്യത തള്ളികളയാനകില്ല.ഏറ്റവും കൂടുതൽ ആളുകൾ കുടിയേറി പാർത്തിരുന്ന മധ്യപൂർവേഷ്യൻ രാജ്യങ്ങളിലെ കുടിയേറ്റ നിയമങ്ങൾ അനുദിനം മാറികൊണ്ടിരിക്കുന്നു. തങ്ങളുടെ പൗരന്മാർക്ക് തൊഴിൽ ഉറപ്പുവരുത്തുക എന്ന ലക്ഷ്യത്തോടെ സൗദി അറേബ്യയിൽ 1994 - ൽ നടപ്പിലാക്കിയ സൗദിവത്കരണം ,പിന്നീട് 2005 മുതൽ കർശനമായി നടപ്പിലാക്കിയ നിതാഖത്ത് നിയമം , പല ഗൾഫ് രാജ്യങ്ങളിലും പ്രാബല്യത്തിൽ വന്ന കുടുംബ നികുതികൾ എന്നിവ പ്രവാസികളുടെ നാട്ടിലേയുക്കുള്ള തിരിച്ചു വരവിനുള്ള കാരണങ്ങളായി. നാട്ടിൽ എത്തിയാൽ എന്തു ചെയ്യുമെന്നത് ഒരു ചോദ്യചിഹ്നമായി നിൽക്കുന്നു.

പ്രവാസികളുടെ പുനരധിവാസം

തൊഴിൽ നഷ്ട്പെട്ട് നാട്ടിൽ തിരിച്ചെത്തുന്ന പ്രവാസികളുടെ തൊഴിൽ സാങ്കേതിക വൈദഗ്ധ്യവും പരിചയവും അനുഭവസമ്പത്തും ഉപയോഗപ്പെടുത്തി കേരളത്തിന്റെ കാർഷിക വ്യവസായ സേവന മേഖലകളിൽ വൻകിട സംരംഭങ്ങൾ ആരംഭിച്ച് തെഴിലവസരങ്ങ സൃഷ്ടിക്കേണ്ടിയിരിക്കുന്നു. പ്രവാസികൾക്കും തിരിച്ചെത്തുന്നവർക്കുമായി സുരക്ഷിതമായ നിക്ഷേപപദ്ധതികൾ ആരംഭിക്കണം. പ്രവാസി-പുനരധിവാസം ലക്ഷ്യമാക്കി സംസ്ഥാന സർകാർ സ്ഥാപനമായ നോർക്ക റൂട്ട്സ് പല പദ്ധതികളും നടപ്പിലാക്കുന്നുണ്ട് .തൊഴിൽ നഷ്ടപ്പെട്ട് തിരിച്ചു വരുന്നവർക്കായി 25 കോടി രൂപയുടെ സാന്ത്വനം പദ്ധതി , പ്രവാസികൾക്ക് പ്രതിമാസ പെൻഷൻ, മടങ്ങി വരുന്ന പ്രവാസികൾക്ക് സ്വയം സംരംഭങ്ങൾ തുടങ്ങാനുള്ള മൂലധന സബ്സിഡിയും പലിശ സബ്സിഡിയും തുടങ്ങിയവ ഇവയിൽ ചിലതാണ്. തിരിച്ചുവരുന്ന പ്രവാസികളെ പുനരധിവസിപ്പിക്കുന്നതിനായി മുഴുവൻ സർകാർ സംവിധാനങ്ങളെയും ഉൾപ്പെടുത്തി ഒരു പുനരധിവാസ പദ്ധതി ആവിഷ്കരിക്കപ്പെടുകയും അതു വഴി ലക്ഷകണക്കിനു വരുന്ന പ്രവാസികൾക്ക് അവരുടെ നാട്ടിൽ ജീവിക്കാനുള്ള തൊഴിൽ സാഹചര്യം സൃഷ്ടിക്കപ്പെടുകയും ചെയ്യുമെന്ന് നമുക്ക് പ്രത്യാശിക്കാം.

ନିଷ୍ଫଳା

भानुशंकर मोहंती
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, बालेश्वर

ସୁଖ ପାଇଁ ନହେଲେବି , କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ଭାବି ସ୍ୱାମୀକୁ ଦିହ ଯାଚେ । ବାର, ବ୍ରତ, ମାନସିକ , ଉପବାସ ସବୁ କରେ । କିନ୍ତୁ ପ୍ରତି ମାସ ସେ ହୁଏ ନିରାଶ । ସେଥିଲାଗି ଆମ୍ବ ଗଛରେ ବଉଳ ଧରିଲେ ତା ପରାଣରେ ନିଆଁ ଲାଗେ । ଲଙ୍ଗଳା ପିଲାଟେ ଦାଣ୍ଡରେ ଦଉଡିଗଲେ ଛାତି ତଳେ କଣ ଗୋଟେ ଆଉଟୁ ପାଉଟୁ ହୁଏ । କାକୁଡି କଷିଟେ ଦେଖିଲେ ନୁଖୁରା ମନରେ କୁନି ସପନଟେ ଗଜୁରି ଉଠେ ।

ସେ ବି ମାନୁଛି ମା ନହେଇ ପାରିବା ଗୋଟେ ବଡ ପାପ । କିନ୍ତୁ ସେ ପାପର ଭାଗୀଦାର କଣ ଏକା ମାଳତୀ ?

ଠିକ ସେମିତି ପୋଡା କପାଳ ତା ବାଡିରେ ଲାଗିଥିବା ଅମୃତଭଣ୍ଡା ଗଛର । ଯେତେ ପାଣି , ଖତ ଦେଲେ ବି ଫଳ ଧରୁନି । କିଏ ଜାଣେ ମାଟି ଅଜରା କି ମଞ୍ଜି ପୋକ ଖିଆ !

ଖରାବେଳଟା କାହିଁକି ଆଜି ବେଶୀ ବେଶୀ ଖାଁ ଖାଁ ଲାଗୁଛି । ଶାଶୁ ଯାଇଛନ୍ତି ସାହି ଆଡେ । ମଦନା ଯାଇଛି କାମକୁ , ଫେରିବ ସଞ୍ଜକୁ । ଭାବିଲା ସୁଭଦ୍ରା ଖୁଡୀ ଘର ଆଡେ ଟିକେ ବୁଲି ଆସିବ । କକା , ଖୁଡୀ ଦି ଜଣ ଯାକ ଭାରି ଭଲ ଲୋକ । କକା ଗାଁ ମନ୍ଦିରରେ ପୂଜା କରନ୍ତି । କେତେ ପୂଜା କରିଛନ୍ତି ତା ପାଇଁ, ହେଲେ ସେ ମା ହେଇ ପାରିନି ।

ଖୁଡୀ, ଖୁଡୀ ବୋଲି ଡାକି ଭିତରକୁ ପଶିଗଲା ମାଳତୀ । କକା ଶୋଇଥିଲେ ଦାଣ୍ଡ ଘର ଖଟ ଉପରେ । ପୁରୁଣା ଫ୍ୟାନଟେ ତାଙ୍କ ମୁଣ୍ଡ ଉପରେ କୁନ୍ଥେଇ କୁନ୍ଥେଇ ବୁଲୁଥିଲା ।

- ଖୁଡୀ ନାହାନ୍ତି କି?

- ତା ଭାଇ ଆସିଥିଲା, ବାପ ଘରକୁ ଯାଇଛି । ଆର ହପ୍ତାକୁ ଆସିବ ।

- ହଉ

ଫେରି ଆସୁଥିଲା ମାଳତୀ ।

- କିଛି ଗୋଟେ ଉପାୟ କରରେ ମା । ନହେଲେ ନେଡି ଗୁଡ କହୁଣୀକୁ ବୋହିଯିବ ।

- କଣ କରିବି କହୁନ? ଠାକୁର ବି ପଥର ହେଇ ହଲେଣି ।

- ଠାକୁରେ କଣ କରିବେ? ନିଜେ ନମଲେ ଯମ ଦର୍ଶନ ନାହିଁ

- ଭାବୁଛି ଡାକ୍ତରୀ ପରୀକ୍ଷା କରେଇ ନେବି । ଦୋଷ କାହା ଠି ଧରା ପଡିବ ।

- ସେ ଭୁଲ କରନା । ବସ୍ ବୁଝଉଛି ।

ବୋଲକରା ପିଲାଟେ ପରି ବସିଲା ମାଳତୀ । ଉଠି ବସିଲେ କକା ।

- ପରୀକ୍ଷାରୁ କଣ ମିଳିବ? ଯଦି ଡାକ୍ତର କହିଲା ତୁ ବାଞ୍ଝ, ତୋତେ ମଦନା ଘରେ ରଖିବ ? ଆଉ ଯଦି ତୁ ଜାଣିଲୁ ମଦନାର ଦୋଷ , ତୁ କଣ ତାକୁ ଛାଡି ପାରିବୁ ? ବରଂ ନିଜେ ପରୀକ୍ଷା କରିନେ । ଯଦି ପିଲା ରହିଲା, ମଦନା ଖୁସି । ତୁ ବି ଖୁସି । ଆଉ ଯଦି ନରହିଲା ଜାଣିବୁ ତୁ ଗୋଟେ ନିଷ୍ଫଳା ଗଛ । ତାପରେ ଡାକ୍ତର ଫାକ୍ତର କଥା ତୁଣ୍ଡରେ ଧରିବୁନି ।

ମାଳତୀ କିଛି ବୁଝିଲା, କିଛି ଅବୁଝା ରହିଲା । କିଛି ପଚାରିବା ପୂର୍ବରୁ କକା ପଇତାକୁ ଅଣ୍ଟାରେ ଗୁଡେଇ ସାରିଥିଲେ । ଧୀର କରି କବାଟ ଭିତରୁ ବନ୍ଦ କଲେ, ତା କାନ୍ଧରେ ହାତ ଥୋଇଲେ ।

ଚିହିଙ୍କି ଉଠିଲା ମାଳତୀ – ଏ ସବୁ ପାପ ।

ଚନ୍ଦା ମୁଣ୍ଡରେ ହାତ ବୁଲଉ ବୁଲଉ କକା କହିଲେ – "କିଏ ଜାଣିଲେ ସିନା ପାପ । ତୋର ଯଦି କୋଳ ପୂରି ଉଠିଲା ସେ ପାପ ଫାପରୁ କଣ ମିଳିବ ? ବାଞ୍ଝ ହବା କଣ ପାପ ନୁହେଁ ?

ପାପ ପୁଣ୍ୟ ର କିଟି ମିଟିଆ କଥା ମାଳତୀ ମଗଜରେ ପଶେନି । କକାଙ୍କ ପରି ପଣ୍ଡିତେ ସବୁ ପଢିଥିବେ ସେ ପାଠ, ଶାସ୍ତ୍ର ପୁରାଣରୁ । ତା ଆଖି ଆଗରେ ଭାସି ଉଠିଲା ଅମୃତଭଣ୍ଡା ଗଛଟା। ଆଜିଯାଏ ଫଳ ଧରୁନି ବୋଲି ମଦନା କେତେ ଥର କହିଲାଣି – ଗଛଟା କାଟି ଦେଲେ ଯିବ । ଅଯଥା ବାଡିରେ ଜାଗା ମାଡି ବସୁଛି । ମାଳତୀ ବି କଣ ସେମିତି ଜାଗା ମାଡି ବସୁଛି ଅଯଥାରେ ?

ମାଳତୀର ନଜର ପଡିଲା କକାଙ୍କର ଥନ୍ତଲା ପେଟ ଉପରେ । ପେଟ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଝୁଲୁଥିଲା ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ଲକେଟ ।

"କେହି ନଦେଖିଲେ ଜଗନ୍ନାଥ ତ ଦେଖିବେ" - ମାଳତୀ ପଚାରିଲା କକାଙ୍କୁ ।

ତା ଗାଲ ଚିପି ଦେଇ କକା କହିଲେ – "ବଡ ବୋକିଟେ ତୁ । ଜଗନ୍ନାଥ କଣ କିଛି ଦେଖି ପାରେ ? "

କକା ବେକରୁ ଲକେଟ ଟା କାଢି ତକିଆ ତଳେ ରଖିଦେଲେ ।

- ଏଥର ଡରୁଛୁ କାହିଁକି?

ମାଳତୀ ଆଖି ବନ୍ଦ କରି ଶୋଇଗଲା ଖଟ ଉପରେ । ଯେମିତି, ତକିଆ ତଳେ ଥିବା ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ପରି ସେ ବି ଆଦୌ ସାକ୍ଷୀ ନୁହେଁ ଏ ପାପର । ଆଖି ପତା ଆହୁରି ଜୋରେ ଚାପିଦେଲା । ଏ ପାପର କେହି ସାକ୍ଷୀ ନାହାନ୍ତି । ନା ସେ , ନା ଜଗନ୍ନାଥ । ହେଲେ ମା ନହେବାର ସାକ୍ଷୀ ଅନେକ । ସେ ପାପରୁ ମୁକ୍ତି ଦରକାର।

ଅସଜଡା ଧୋତିକୁ ପେଟ ଉପରକୁ ପିନ୍ଧୁ ପିନ୍ଧୁ କକା କହିଲେ- ଯାହା ହେଲା ଭଲ ହେଲା। ମନ ଦୁଃଖ କରୁଛୁ କି ?ସବୁ ଠିକ ହେଇଯିବ । କାଲି ଏତିକି ବେଳକୁ ଆସିବୁ । ଚେଷ୍ଟା କରିବା , ତାପରେ ସେଇ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ଇଚ୍ଛା ।

ଚୁପ ଚାପ ବାହାରକୁ ଆସିଲା ମାଳତୀ । ନିଛାଟିଆ ତାତିଲା ଖରାବେଳ । ମୁହଁ ପୋଡି ଯାଉଛି । ଖରାରେ, ଲାଜରେ । ସଅଳ ପାଦ ପକେଇଲା ସେ । କେହି ନଦେଖିଲେ ଭଲ ।

- "ମାଳତୀ"

ଚମକି ପଡିଲା ମାଳତୀ । ପଛରେ ଥିଲା ମଦନା । ତା ମୁହଁକୁ ଅନେଇବାକୁ ନା ଥିଲା ସାହସ, ନା ଭରସି ପଚାରି ପାରୁଥିଲା ଆଜି କେମିତି ସଅଳ ଆସିଗଲ ? ମାଟି ଦି ଫାଳ ହେଇ ଯାନ୍ତାକି । ସେ ପଶି ଯାନ୍ତା ମାଟି ତଳେ ।

- ଡାକ୍ତର କହିଲେ ମୁଁ ବାପା ହେଇ ପାରିବିନି କେବେ ବି ।

ତାକୁ କୁଣ୍ଢେଇ ପକେଇ ଭୋ ଭୋ କାନ୍ଦିଲା ମଦନା । ତାହାଲେ ତାକୁ ନଜଣେଇ ମଦନା ପରୀକ୍ଷା କରି ଆସିଛି ନିଜକୁ । ତୁନି କରିବାକୁ ଯାଇ ମଦନା ଠୁ ବେଶୀ ଜୋରେ କାନ୍ଦି ଉଠିଲା ମାଳତୀ । ଶୁନ ଶାନ ଗାଁ ଦାଣ୍ଡରେ ଏମିତି ଠିଆ ଠିଆ କାନ୍ଦିବାକୁ ସାହସ ହେଲାନି ତାର । ଦିହେଁ ଦୌଡିଲେ ଘର ମୁହାଁ । ନୂଆଁଣିଆ ଚାଳ ଘରେ ପଶୁ ପଶୁ ସେ କବାଟ କିଳିଦେଲା କଷିକି । ତା ଛାତିରେ ମୁହଁ ଜାକି ମଦନା କାନ୍ଦୁଥିଲା । ମାଳତୀ କବାଟ ସରୁ ଫାଙ୍କ ଦେଇ ଲୁହ ନେଞ୍ଜରା ଆଖିରେ ଦେଖୁଥିଲା ଆଜି ଯାଏ କେବେ ବି ଫଳି ନଥିବା ସେଇ ଅମୃତଭଣ୍ଡା ଗଛକୁ । ତା ପତ୍ର ସବୁ ପବନରେ ଟିକେ ଟିକେ ହଲୁଥିଲେ, ମାଳତୀକୁ ଖତେଇ ହେଲା ପରି । ମାଳତୀ ଗାଁ ଠାକୁରାଣୀଙ୍କୁ ମନାସିଲା – "ମା ଲୋ ଗଛଟା ସେମିତି ନିଷ୍ଫଳା ଥାଉ ।କେବେ ବି ଫଳଟେ ନଝୁଲୁ ତା ଦିହରେ । ନହେଲେ ପାପ ଦିଶିଯିବ ସଭିଙ୍କୁ।ଭଗବାନଙ୍କୁ ବି ।

वास्तविक शिक्षा

प्रेरक प्रसंग

टी एन शेषन मुख्य चुनाव आयुक्त थे तब एक बार वे उत्तर प्रदेश की यात्रा पर गए। उनके साथ उनकी पत्नी भी थीं। रास्ते में एक बाग के पास वे लोग रुके। बाग के पेड़ पर बया पक्षियों के घोसले थे। उनकी पत्नी ने कहा दो घोसले मंगवा दीजिए मैं इन्हें घर की सज्जा के लिए ले चलूंगी। उन्होंने साथ चल रहे पुलिस वालों से घोसला लाने के लिए कहा। पुलिस वाले वहीं पास में गाय चरा रहे एक बालक से पेड़ पर चढ़कर घोसला लाने के बदले दस रुपये देने की बात कही, लेकिन वह लड़का घोसला तोड़ कर लाने के लिए तैयार नहीं हुआ। टी एन शेषन उसे दस की जगह पचास रुपए देने की बात कही फिर भी वह लड़का तैयार नहीं हुआ। उसने शेषन से कहा- साहब जी! घोसले में चिड़िया के बच्चे हैं, शाम को जब वह भोजन लेकर आएगी तब अपने बच्चों को न देख कर बहुत दुखी होगी, इसलिए आप चाहे जितना पैसा दें, मैं घोसला नहीं तोड़ सकता।

इस घटना के बाद टी.एन. शेषन को आजीवन यह ग्लानि रही कि जो एक चरवाहा बालक सोच सका और उसके अन्दर जैसी संवेदनशीलता थी, इतने पढ़े-लिखे और आईएएस होने के बाद भी वे वह बात क्यों नहीं सोच सके, उनके अन्दर वह संवेदना क्यों नहीं उत्पन्न हुई?

उन्होंने कहा उस छोटे बालक के सामने मेरा पद और मेरा आईएएस होना गायब हो गया। मैं उसके सामने एक सरसों के बीज के समान हो गया। शिक्षा, पद और सामाजिक स्थिति मानवता के मापदण्ड नहीं हैं।

प्रकृति को जानना ही ज्ञान है। बहुत सी सूचनाओं के संग्रह से कुछ नहीं प्राप्त होता। जीवन तभी आनंददायक होता है जब ज्ञान और संवेदना से भरा हो।

କନ୍ୟା ଅମୂଲ୍ୟ ରତ୍ନ

शुभाशीष दास
मुख्य खजांची- II
पाइकमाल शाखा
संबलपुर अंचल

କନ୍ୟା ଅଟେ ପୃଥିବୀରେ ଲକ୍ଷ୍ମୀ ଅବତାରି,

ତାଙ୍କ ଯୋଗୁଁ ଖୁସି ହୁଏ ଧରଣୀ ସୁନ୍ଦରୀ ।

ମାତୃ ରୂପେ ପୁଣି କେବେ କନ୍ୟା ରୂପେ ଆସେ,

କେବେ ପୁଣି ସମାଜରେଭାର୍ଯ୍ୟା ରୂପେ ବସେ ।

ଯୁଗେ ଯୁଗେ ନାରୀଙ୍କର ଅଛି ସନମାନ,

ନାରୀ ବି ଅଟନ୍ତି ପୁଣି ପୁରୁଷ ସମାନ ।

ଝିଅ ଙ୍କ ମହତ୍ୱ ଆଜି ବୁଝୁନି ମଣିଷ,

ଝିଅ ସଂଖ୍ୟା ଧୀରେ ଧୀରେ ହେଉ ଅଛି ଶେଷ ।

କନ୍ୟା ଭ୍ରୁଣ ହତ୍ୟା ଏବେ ବଢ଼ି ଚାଲି ଅଛି,

ହତ୍ୟା କରି ମଣିଷ ତ ପାଉ ନାହିଁ କିଛି ।

ନାରୀ ହୀନ ହେଲେ ପୁଣି ଏ ଆମ ଜଗତ,

ଖୋଜୁ ଥିବ ଅର୍ଦ୍ଧାଙ୍ଗିନୀ ପାଇବ ନାହିଁତ ।

ଅବଳା ଦୁର୍ବଳା ନାରୀ ବଞ୍ଚେ ଦୁଃଖ ସହି,

ଯୌତୁକ ନିଆଁ ରେ ପୁଣି କେବେ ଜଳେ ଯୁଇ ।

ଆସ ଆମେ ମିଳିମିଶି ଏଇ ସମାଜରେ,

ହସ ଫୁଟାଇବା ସବୁ ନାରୀଙ୍କ ମୁଖରେ ।

* * * *

ଆମରି ବ୍ୟାଙ୍କ ଭାଗ୍ୟ ବିଧାତା

लक्ष्मीधर मांझी
बैंक प्रतिनिधि
नुआपाड़ा शाखा
संबलपुर अंचल

ଶୁଣ ଶୁଣ ମୋର ଭାଇ ଓ ଭଉଣୀ,
କରିବା ଟଙ୍କା ସଞ୍ଚୟ,
ଅଭାବ ସମୟେ କାମରେ ଲାଗିବ
ମନରେ ନ ଥିବ ଭୟ ।

ନିକଟ ବ୍ୟାଙ୍କରେ ଜମା ଖାତା ଖୋଲି
ସଞ୍ଚୟ ରଖିବା ଟଙ୍କା,
ହାତ ପାହାନ୍ତା ରେ ମିଳୁଥିବ ଟଙ୍କା
ନ ଥିବ ମନରେ ଶଙ୍କା ।

ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ଜନ ଧନ ନୀତି
ଲୋକ ପାଇଁ ହିତକର,
ଜମା ପାସ୍ ବହି ଖୋଲିଲେ ସମସ୍ତେ
ପାଉଥିବା ଅଧିକାର । ଜୀବନର ବିମା

କରିବା ସଭିଏଁ
ଜମା ପାସ୍ ବହି ଖୋଲି,
ସଚେତନ ହୋଇ ଆଗକୁ ବଢ଼ିବା
ପ୍ରଗତିର ଦୀପ ଜାଳି ।

ତାଲିମ ନେଉଣ ହେବୁ ବ୍ୟବସାୟୀ
ଆର୍ଥିକ ବିକାଶ ପାଇଁ,
ଅଦିନିଆ ଦୁଃଖ ହାର ମାନିଯିବ
ବଞ୍ଚାଇ ରଖିବା ଭାଇ ।

ମହାଜନ ଠାରୁ ମୁକତି ମିଳିବ
ନ ଥିବ ଆମକୁ ଡର,
ଗୋଟି ଗୋଟି କରି କୋଟିଏ ସଞ୍ଚିବୁ
ଜୀବନ ହେବ ସୁନ୍ଦର ।

ସରକାର କଲେ ମଣିଷଙ୍କ ପାଇଁ
ଅନେକ ନୂଆ ଯୋଜନା,
ସମସ୍ତେ ମିଶିଣ କରିବା କର୍ତ୍ତବ୍ୟ
ସଫଳ ହେବ ଯୋଜନ ।

ଋଣ ନେଇ ଯଦି କଲୁ ବ୍ୟବସାୟ
ହେବୁ ଆମେ କର୍ମ ବୀର,
ଆର୍ଥିକ ପ୍ରଗତି ବଢ଼ି ଚାଲି ଥିବ
ଟଙ୍କା ପାଇଁ ଦୁଃଖ ଦୂର ।

ନିଶା ଦ୍ରବ୍ୟ ଛାଡ଼ି କରିବା କର୍ତ୍ତବ୍ୟ
ଜୀବନ ଗଢିବା ପାଇଁ,
ପୁଅ ଝିଅ ଆମ ପଢୁ ଥିବେ ପାଠ
ଦେଶକୁ ଗଢିବା ପାଇଁ ।

ମିଳିତ ବଳରେ ଭାରତୀୟ ଆମେ
ଆଣିବା ଆର୍ଥିକ ନୀତି,
ଚାଲି ଚଳାଇବା ଦେଶକୁ ଆମର
ବଢ଼ିବ ଆର୍ଥିକ ଗତି ।

ରାଜ୍ୟର ବିକାଶ ଦେଶର ବିକାଶ
ଜାଣି ରଖ ନର ଗଣ,
ସଞ୍ଚୟ କରିଲେ ବଞ୍ଚିବ ସଭିଏଁ
କହି ଥାନ୍ତି ବିଜ୍ଞ ଜନ ।

ବ୍ୟାଙ୍କରେ ସଞ୍ଚୟ ଅତୁଟ ରହିବ
ଥିବା ଯାଏ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଚନ୍ଦ୍ର,
ଜଗନ୍ନାଥ ଠାରେ କରୁଛି ପ୍ରାର୍ଥନା
ବ୍ୟାଙ୍କ ମିତ୍ର ଲକ୍ଷ୍ମୀ ଧର ।

* * * *

मराठवाड़ा के सौंदाना गाँव का पेरनी हल

मोरेश्वर आर खापेकर
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, पुणे

आइए, आज हम सैर करते हैं महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र के एक ऐसे गांव की जिसका नाम है सौंदाना। यह महाराष्ट्र के बीड जिले का वह गांव है जिसके निवासी श्री मोहन भालेकर जी ऐसे एकमात्र कारीगर हैं जिनके पास खेती-किसानी में काम आनेवाले सौंदाना और बीड जिले में एक विशेष हल- जिसे स्थानीय कृषक पेरनी यंत्र के नाम से जानते हैं, को ठीक करने की कला जीवित बची है ।

खेती या किसानी शब्द सुनते ही कई तस्वीर एकसाथ हमारे मन-मस्तिष्क में तैरने लगती हैं - खेत, किसान, हल और बैल आदि। हालांकि अब कुछ किसान ट्रैक्टर से अपनी खेती करने लगे हैं पर वही जो बड़े किसान हैं। छोटे किसान अभी भी अपने हल और बैल पर ही भरोसा करते हैं। ट्रैक्टर के आगमन से हल का महत्व थोड़ा कम जरूर हुआ है। लेकिन मराठवाड़ा में फिलहाल हल भी इस्तेमाल हो रहा है।

यह पेरनी यंत्र आम हल से अलग है। यह तीन फण वाला हल है जिसमें लोहे की पाइप के माध्यम से बीजारोपण का कार्य भी एक साथ होता है। तीन फण होने से जुताई में समय कम लगता है साथ ही तीनों फण में पाइप के माध्यम से बीजारोपण भी होता जाता है अर्थात् खेत की जुताई और

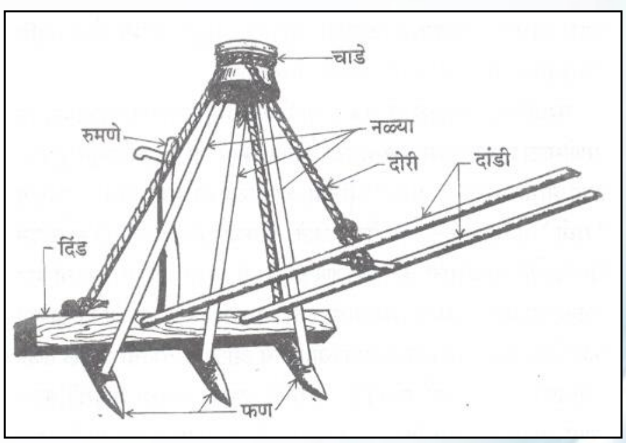

बीजारोपण, दोनों एकसाथ हो जाता है। महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र में यह पेरनी यंत्र काफी लोकप्रिय है और छोटे किसान इसका प्रयोग करते हैं।

किन्तु समस्या यह है कि हल को ठीक करनेवाले काफी कम लोग बचे हैं । वर्तमान में सौंदाना गाँव के श्री मोहन भालेकर मराठवाड़ा के एकमात्र कारीगर हैं जो इस कला को जानते हैं। श्री भालेकर पेशे से बढ़ई हैं जो किसानों के हल या उस जैसे पुराने औज़ार को ठीक करते हैं । श्री भालेकर मराठवाड़ा के उन

किसानों के लिए किसी देवदूत से कम नहीं हैं जो खेती के लिए केवल लकड़ी के हल पर निर्भर हैं, जिसकी खेती की

(पेरनी हल को देखते हुए काले पैंट में श्री मोहन भालेकर)

जमीन कम है और जिसकी आय इतनी भी नहीं है कि बुआई के लिए ट्रैक्टर किराये पर ले सके। वह न तो ट्रैक्टर का प्रतिदिन किराया दे सकता है और न ही भालेकर को मेहनताना देने की स्थिति में है।

श्री भालेकर के पिताजी भी यही काम किया करते थे। श्री भालेकर ने 15 वर्ष की आयु में अपने पिता से यह कला सीखी। उस वक्त उनके पिताजी उन्हें आगे पढ़ा नहीं पाए। किन्तु अब भालेकर अपने बच्चों को कॉलेज में पढ़ा रहे हैं। भालेकर के पिता, जिनकी उम्र अब लगभग 80 वर्ष के आसपास है, अपने पुराने दिनों की याद करते हुए बताते हैं कि एक समय पर उनके पास आस-पास के कई गांव के किसान अपना परनी यंत्र ठीक कराने आते थे।

10 साल पहले किसानों से उन्हें उनकी सेवा के बदले 25 बोरे ज्वार (प्रतिवर्ष) मिल जाते थे। तब भालेकर से कुल 40 किसान सेवाएँ प्राप्त करते थे। लेकिन अब सर्विस लेनेवाले लोगों की संख्या में तेजी से कमी आई है।

ऐसा ट्रैक्टर के अधिक उपयोग तथा लोगों के खेती छोड़ने के कारण हुआ है। अब भालेकर को केवल 5 बोरे मुश्किल से मिलते हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि मराठवाड़ा में विशेषकर बीड जिले में पिछले पाँच-छह वर्ष में तीन बार सूखा पड़ा चुका है तथा बारीश भी सामान्य स्तर पर हुई है। फिर भी भालेकर मानवता की सहज-सरल मिसाल पेश करते हुए किसानों की अनवरत सेवा में लगे हुए हैं। बारिश में देरी के कारण फसल खराब होने के बाद भालेकर बिना किसी पेमेंट के काम करते हैं। इस पर श्री भालेकर सहज कहते हैं कि अगर मैं उनके औज़ार ठीक नहीं करूंगा तो कौन करेगा ? किसान कहाँ जाएगा ? वह कुछ भी बो नहीं पाएंगे और कुछ भी फसल उगा नहीं पाएंगे। श्री भालेकर विश्वासपूर्वक कहते हैं कि फसल अच्छी होने पर किसान पेमेंट कर देंगे। एक ट्रैक्टर का प्रतिदिन का किराया 1200 रुपये है और किसानों के पास इतना पैसा नहीं है कि वे ट्रैक्टर से खेत जुतवा पाएं। किसानों के पास भी भालेकर के अलावा अन्य कोई शरणस्थली नहीं है जहाँ वे अपना दुख व्यक्त कर सकें। कई बार उन्हें बिना भुगतान के भी काम करना पड़ता है।

वाकई सरल स्वभाव एवं उच्च विचार के धनी, किसान मित्र तथा सौंदाना के अंतिम सुतार श्री मोहन भालेकर जी को नमन है।

व्हाट्सएप्प की दुनिया से

एक बड़े उद्योगपति सरकारी बैंक के अधिकारियों को संबोधित कर रहे थे- "देखिए ! बुरा मत मानिए ! लेकिन जिस तरह से आप काम करते हैं; जिस तरह से आपके संस्थान चलते हैं यदि मैं ऐसा करता तो अब तक मेरा बिजनेस डूब चुका होता ।"

चेहरे पर सफलता का दर्प साफ दिखाई दे रहा था !

"समझिए ! आपको बदलना होगा; आपके व्यावसायिक प्रणाली को बदलना होगा; आप लोग आउटडेटेड पैटर्न पर चल रहे हैं; और सबसे बड़ी समस्या आप बैंकर्स स्वयं हैं, जो किसी भी परिवर्तन के विरोध में रहते हैं !"

"हमसे सीखिए ! बिजनेस चलाना है तो लगातार सुधार करना होता है, लाभ कमाना होता है, किसी तरह की चूक की कोई गुंजाइश नहीं !"

प्योर अंग्रेजी में चला उनका भाषण समाप्त हुआ... ..

तो प्रश्न पूछने के लिए एक अधिकारी का हाथ खड़ा हुआ..!

"सर ! आप दुनिया की सबसे अच्छी कॉफी बनाने वाली कंपनी के मालिक हैं ।

एक जिज्ञासा थी कि आप कॉफी के कैसे बीज खरीदते हैं..? "

उद्योगपति का गर्व भरा ज़वाब था- "एकदम सुपर प्रीमियम! कोई समझौता नहीं..!"

अधिकारी ने फिर पूछा:-

"अच्छा मान लीजिए आपके पास जो माल भेजा जाए उसमें कॉफी के बीज घटिया क्वालिटी के हों तो..?"

उद्योगपति:-

"सवाल ही नहीं ! हम उसे तुरंत वापस भेज देंगे; वेंडर कंपनी को ज़वाब देना पड़ेगा; हम उससे अपना क़रार रद्द कर सकते हैं !

कॉफी के बीज के चयन के हमारे बहुत सख्त मापदंड है इसी कारण हमारी कॉफी की प्रसिद्धि है ! "आत्मविश्वास से भरे उद्योगपति का लगभग स्वचालित उत्तर था !

अधिकारी:-

"अच्छा है ! अब हमें यूँ समझिए कि हमारे पास रंग-स्वाद-और गुण में अत्यधिक विभिन्नता के बीज आते हैं लेकिन हम अपने कॉफी के बीज वापस नहीं भेजते ! "

"हमारे यहां सब तरह के कस्टमर आते है; अमीर-गरीब, पढ़े लिखे-अनपढ़, गाँव के-शहर के, चप्पल वाले-जूते वाले, ईमानदार बेईमान, शांत- बिगड़ैल...सब तरह के !

हम उनसे सिर्फ लाभ हानि देखकर उनको बैंकिंग सेवा से वंचित नहीं करते !

सबका खाता खोलते हैं.....सबको लोन देते हैं.......सबको सेवाएं देते हैं.. !"

.....क्योंकि सर !

हम सिर्फ व्यापारी बैंकर्स नहीं, सरकारी बैंकर्स हैं जिस पर हमें गर्व है।

सतर्कता जागरुकता सप्ताह

आत्मचिंतन बैठक

संविधान दिवस का पालन

बैंक का स्थापना दिवस समारोह

विश्व हिंदी दिवस का पालन

यूको बैंक के संयोजन में नराकास (बैंक), कोलकाता के तत्वावधान में दिनांक 14.01.2020 को विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया जिसका विषय था 'विश्व हिंदी दिवस-एक यात्रा'। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय श्री एकनारायण अर्याल, महावाणिज्यदूत-नेपाल, कोलकाता की गरिमामयी उपस्थिति रही।

गहन अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम

बैंक के वेतनमान-III तक के राजभाषा अधिकारियों के लिए दिनांक 13-18 जनवरी, 2020 तक सेंट्रल स्टाफ कॉलेज, कोलकाता में 'छह दिवसीय गहन अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम' का आयोजन किया गया।
श्री नरेश कुमार, महाप्रबंधक- मासंप्र एवं राजभाषा ने प्रतिभागियों को संबोधित किया।

यूको बैंक जी. डी. बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला

पटना अंचल
मुख्य वक्ता: प्रो. (डॉ) रासबिहारी प्रसाद सिंह,
कुलपति, पटना विश्वविद्यालय, पटना

रायपुर अंचल
मुख्य वक्ता: डॉ. संजय कुमार पाटिल
कुलपति, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर

लखनऊ अंचल
मुख्य वक्ता: प्रो. मोहम्मद मुजम्मिल
पूर्व कुलपति, आगरा एवं रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय

एर्णाकुलम अंचल
मुख्य वक्ता: श्री के पी पद्मकुमार
पूर्व अध्यक्ष, फेडरल बैंक लिमिटेड

हरियाणा अंचल
मुख्य वक्ता: डॉ. अनुज कुमार
प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल

जयपुर अंचल
मुख्य वक्ता: डॉ. एस एस सोमरा
विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, जयपुर विश्वविद्यालय

यूको बैंक जी. डी. बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला

इंदौर अंचल
मुख्य वक्ता: प्रो. (डॉ) जयंतीलाल भंडारी
शिक्षाविद एवं अर्थशास्त्री

अजमेर अंचल
मुख्य वक्ता: डॉ. लक्ष्मीकान्त
प्राचार्य, डीएवी महाविद्यालय, अजमेर

कानपुर अंचल
मुख्य वक्ता: डॉ. सिधांशु राय
ब्रांड अंबेडस्डर, कानपुर शहर

धर्मशाला अंचल
मुख्य वक्ता: श्री ओम अवस्थी
पूर्व प्रोफेसर एवं डीन, गुरुनानक विश्वविद्यालय, अमृतसर

जोरहाट अंचल
मुख्य वक्ता: श्री अनिल कुमार सिंह एवं श्री मोहन लाल
वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसआईआर - निस्ट, जोरहाट

वाराणसी अंचल
मुख्य वक्ता: श्री गौतम कुमार
प्रोफेसर, प्रबंध शास्त्र संकाय, बीएचयू, वाराणसी

अहमदाबाद अंचल
मुख्य वक्ता: प्रो. हेमंत शाह
एच के आर्ट एंड साइंस कॉलेज, अहमदाबाद

गुवाहाटी अंचल
मुख्य वक्ता: प्रो. पी के जैन
विभागाध्यक्ष-बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन, गुवाहाटी विश्वविद्यालय

यूको मातृभाषा सम्मान

सूरत अंचल

अहमदाबाद अंचल

पटना अंचल

यूको राजभाषा सम्मान

चंडीगढ़ अंचल

कानपुर अंचल

अहमदाबाद अंचल

जयपुर अंचल

वाराणसी अंचल

गुवाहाटी अंचल

इंदौर अंचल

लोकप्रिय हिंदी कार्यक्रम का प्रायोजन

यूको बैंक द्वारा सांस्कृतिक पुनर्निर्माण मिशन, कोलकाता द्वारा आयोजित सात दिवसीय 25वें हिंदी मेला के आयोजन में एक लाख रुपये का सहयोग प्रदान किया गया। इस मेले में कोलकाता सहित आसपास के 10-12 जिलों के कुल 2000 विद्यार्थियों ने भाग लिया। पुरस्कार वितरण समारोह में श्री चरण सिंह, कार्यपालक निदेशक एवं श्री नरेश कुमार, महाप्रबंधक- मासंप्र, कासेवि एवं राजभाषा शामिल हुए।

वाराणसी अंचल

अहमदाबाद अंचल

ओड़िया	हिंदी	अंग्रेज़ी
आपणकर ना कण?	आपका नाम क्या है?	What is your name?
आपण केऊंठी रुहन्ति?	आप कहां रहते हैं ?	Where do you live?
आपणन्कर स्वास्थ्य केमिति अछि ?	आपकी तबीयत कैसी है?	How is your health?
आसन्तु, बसन्तु ?	आइए , बैठिए?	Please be seated?
चाहा नेबे ना आऊ किछि ?	चाय लेंगे या और कुछ?	Tea or something else?
मुं आपणन्कु साहाज्य करि पारिबि कि?	क्या मैं आपकी मदद कर सकता(ती) हूँ ?	May I help you?
आपण हिन्दी कहि पारीबे कि?	क्या आप हिंदी बोल सकते (ती) हैं ?	Can you speak Hindi?
आपणन्कर जमा खाता केंउ शाखा रे अछि?	आपका जमा खाता किस शाखा में है ?	In which branch do you keep your account?
आपण कण केवाईसी फॉर्म भरी देई छन्ति?	क्या आपने केवाईसी फार्म भर दिया है ?	Have you filled up your KYC form?
आपण अति चिंतित लागू छन्ति , कथा कण?	आप बहुत परेशान लग रहे हैं। क्या बात है?	You are much stressed. What is the matter?
आपण ऋण बाबदरे नियमावाली पढ़ी देइ थिबे?	आपने ऋण की शर्तों को पढ़ लिया होगा?	You have definitely gone through the terms and conditions?
आपणन्कर ब्यबसायर वार्षिक टर्नओवर केते?	आपके कारोबार का वार्षिक टर्न ओवर कितना है?	How much is your business annual turnover?
आमे काली आपणकर कारख़ाना देखी जीबू?	हम लोग कल आपका कारखाना देखने जाएंगे।	We Shall visit your factory tomorrow
आमो बैंक रो एई जमा स्कीम आपणकों लागि उपजुक्तो?	हमारे बैंक की यह जमा योजना आपके लिए उपयुक्त होगी।	This deposit scheme of our bank shall suit you.
आपणकर एटीएम कार्ड प्रस्तुत अछी?	आपका एटीएम डेबिट कार्ड तैयार है।	Your ATM debit card is ready
आमकु एई विषय रे विस्तृतो सूचना दरकार?	हमें इस संबंध में विस्तृत सूचना चाहिए।	We require detailed information in this matter.
दया करी धीरे कथा हुअंतु?	कृपया धीरे बात करें।	Please talk quietly
पदोन्नति लागि हार्दिग अभिनंदन	पदोन्नति के लिए आपको बहुत बधाई	Congratulations on your promotion
एई कामो कोरिबा पाईं दया करी साहाज्य करन्तु ?	कृपया इस कार्य को करने में आप हमें सहयोग दें।	Please help us in completing this job
मूल्यवान मार्गदर्शन लागि आपणकर धन्यवाद	मूल्यवान मार्गदर्शन के लिए आपका धन्यवाद	Thanks for your valuable guidance
आपणकों बापा आमो बैंकरो पुरुणा एबोंग सम्मानिय ग्राहक थिले।	आपके पिताजी हमारे बैंक के पुराने तथा सम्मानित ग्राहक थे।	Your father was very old and valued customer of our branch.

बेलोना मैथ्यू
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, एर्णाकुलम

केरल में शादी-विवाह या ओणम जैसे उत्सवों पर सद्या का आयोजन होता है। सद्या में विभिन्न प्रकार के पारंपरिक शाकाहारी व्यंजन शामिल किए जाते हैं और इसे केले के पत्ते पर परोसा जाता है। एक सामान्य सद्या में लगभग 24-25 व्यंजन होते हैं। इसमें मुख्य रूप से नेईचोरु यानी चावल के साथ कालान, थोरान, ओलन, पछड़ी, किचाड़ी, कुटुकारी, एलिसरी, पुलिंजी, शार्क्कारा अप्पे, अचार आदि शामिल हैं। परंतु कोई भी केरला दावत अवियल के बिना पूरी नहीं होती है। अवियल, नारियल के तेल और करी पत्ते के साथ 13 सब्जियों का एक गाढ़ा मिश्रण अपने विशेष स्वादों के लिए प्रसिद्ध है। आइए, जानते हैं कि अवियल व्यंजन कैसे तैयार किया जाता है:

अवियल बनाने के लिए आवश्यक सब्जियां -

कच्चा केला- 1 नग, सूरन- 1/2 कप
सहजन (ड्रमस्टिक)- 2 नग, बीन्स- 1/4 कप
लौकी- 1/4 कप, बैंगन- 1 कप
गाजर- 1 कप, ककड़ी- 1 कप
कच्चा आम- 1/2 कप या 5 बड़े चम्मच दही

करी पत्ते- 1 टहनी, हल्दी पाउडर : 1/2 छोटा चम्मच

मिश्रण के लिए अन्य सामग्री-

हरी मिर्च : 5 नग
जीरा: 1/2 चम्मच (नमक स्वादानुसार)
कसा हुआ नारियल : 1 कप

अवियल बनाने की विधि-

- सभी सब्जियों को छीलकर 2 इंच लंबे टुकड़ों में काट लें।
- थोड़े से पानी के साथ नारियल, हरी मिर्च और जीरा को बारीक पीस लें।
- सब्जियों को 1/2 कप पानी, हल्दी पाउडर और नमक के साथ अधपका पकाएं।
- आधी पकी हुई सब्जियों के बीच में एक छोटा सा कुआं बनाएं और उसमें पिसा हुआ नारियल का पेस्ट डालें, बर्तन को ढकें और 5 मिनट तक पकाएं।
- ढक्कन को हटा दें और फेंटे हुए दही और करी पत्ते डालें और कुछ मिनटों तक उसे धीरे-धीरे मिलाएं। (यदि आपने कच्चा आम सब्जियों में डाला है तो दही न डालें।)
- अब धीमी आंच में पकाएं, ध्यान रखें कि सब्जियां गल न जाएं।
- पुन: करी पत्ते डालें और ऊपर से नारियल का तेल डालें और मिलाएं और बर्तन को ढंक दें।
- 5 मिनट बाद गैस बंद कर दें और परोसने तक ढंक कर रखें।

(नोट: सभी सब्जियों को एक साथ पकाना नहीं है। ध्यान रखें कि पकने के समय के अनुसार सब्जियों को उबलते पानी में मिलाते रहें। पहले ज्यादा समय में पकने वाली सब्जियों और बाद में कम समय में पकने वाली सब्जियों को बर्तन में डालें। नारियल के तेल का उपयोग करें क्योंकि यह अवियल को सुगंध और स्वाद देता है।)

एक मिथक है कि केरल में तिरुवित्तमकोर राज्य में राजा द्वारा एक महान उत्सव का आयोजन किया जाता था। राज्य का हर व्यक्ति उत्सव में खाने के लिए आता था। इसलिए एक बार उत्सव में परोसने के लिए करी की कमी हो गई। जब राजा रसोई में गए तो उन्होंने पाया कि बहुत सारी सब्जियां छिल जाने पर बर्बाद हो गईं हैं। राजा ने रसोइए को आदेश दिया कि वह इन सब्जियों के साथ कुछ अन्य सामग्री मिलाकर एक करी बनाएं। रसोईए ने राजा के आदेशानुसार उपलब्ध सामग्री और सब्जियों से एक करी बनाया और इस तरह अवियल की उत्पत्ति हुई। राजा ने यह भी आदेश दिया कि इसे पहली करी के रूप में सद्या में परोसा जाए। इसलिए हर सद्या में अवियल सबसे पहले परोसा जाता है।

बैंकों की वार्षिक क्षेत्रीय समीक्षा बैठक का आयोजन दिनांक 13 मार्च, 2020 को चंडीगढ़ में श्री शरद कुमार, केंद्रीय सतर्कता आयुक्त की अध्यक्षता में संपन्न हुआ । इस बैठक में क्षेत्र के सभी बैंकों के मुख्य सतर्कता अधिकारीगण उपस्थित हुए। यह बैठक यूको बैंक के अंचल कार्यालय, चंडीगढ़ के संयोजन में हुआ । इस अवसर पर बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल भी उपस्थित थे ।

यूको राजभाषा प्रतिज्ञा

" हम, यूको बैंक के स्टाफ-सदस्य, सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा करते हैं कि
हम भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु निरंतर कार्य करेंगे।
हम अपने बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन में गति लाने एवं
उसकी स्थिति को उन्नत करने के प्रति सदैव सजग रहेंगे।
हम अपने सामूहिक प्रयास से राजभाषा के क्षेत्र में अपने बैंक को गौरवशाली बनाएंगे।
हम स्वयं राजभाषा में दृढ़तापूर्वक कार्य करेंगे एवं दूसरों को भी प्रेरित करेंगे।

हम यह प्रतिज्ञा भी करते हैं कि हम राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम के उपबंधों
एवं वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करके
राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी
यूको बैंक को सर्वोत्कृष्ट श्रेणी का बैंक बनाएंगे। "

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust